राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

हर खबर पर पकड़

11 अश्विन विश्व के नंबर एक ...

यूक्रेन में अब अपनी सेना नहीं ... 12

वर्ष : 14 | अंक : 301 | नई दिल्ली, गुरुवार, 14 मार्च, 2024 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

अधिकतम तापमान 24°C

न्यूनतम तापमान 18°C

बाजार

सोना 67,285

चांदी 77,500

सेंसेक्स 72,761

निफ्टी 21,997

'मेड इन इंडिया' और 'डिजाइन इन इंडिया' चिप बनेंगे आत्मनिर्भरता में नए मील का पत्थरः प्रधानमंत्री

उज्जवल भविष्य की ओर देश का मजबूत कदम

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बुधवार को 'इंडियाज टेकेडः चिप्स फॉर विकसित भारत' कार्यक्रम में हिस्सा लिया और लगभग 1.25 लाख करोड़ रुपये की 3 सेमीकंडक्टर सुविधाओं की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए आधारशिला रखी। सेमीकंडक्टर को भविष्य के विकास का द्वार बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि आज के निर्णय और नीतियां हमें भविष्य में रणनीतिक लाभ देंगी। 21वीं सदी प्रौद्योगिकी-संचालित है। इलेक्ट्रॉनिक चिप्स के बिना दुनिया की कल्पना नहीं की जा सकती। 'मेड इन इंडिया' और 'डिजाइन इन इंडिया' चिप भारत को नई उपलब्धियां हासिल करने में मदद करेंगी। आत्मनिर्भरता में नए मील के पत्थर हासिल करने में मदद करेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज का ऐतिहासिक अवसर भारत के उज्ज्वल

भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आज की परियोजनाएं भारत को सेमीकंडक्टर हब बनाने में अहम भूमिका निभाएंगी। उन्होंने कहा कि चिप उत्पादन से विकास और असीम संभावनाओं के द्वार खुलेंगे है। इससे रोजगार के नए अवसर बनने के साथ तकनीकी विकास के क्षेत्र में भी बड़ी प्रगति होगी। पिछली सरकारों पर भारत के सेमीकंडक्टर सपने को नजर अंदाज करने का आरोप लगाते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत ने 1960 के दशक में सेमीकंडक्टर निर्माण का सपना देखा था लेकिन पिछली सरकारों की इच्छाशक्ति और प्रतिबद्धता की कमी के कारण यह सपना अधूरा रह गया। उनका अदूरदर्शी दृष्टिकोण भारत की प्राथमिकताओं और क्षमताओं को संतुलित नहीं कर सका, जिससे सेमीकंडक्टर क्षेत्र के विकास में देरी हुई।

प्रधानमंत्री मोदी ने रखी वाणिज्यिक सेमीकंडक्टर फैब की आधारशिला

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज बुधवार को गुजरात में धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र (डीएसआईआर) में सेमीकंडक्टर निर्माण सुविधा की आधारशिला रखी है। इसी के साथ भारत की सेमीकंडक्टर विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाने की दिशा में देश ने एक एक महत्वपूर्ण प्रगति के लिए पहला कदम आगे बढ़ाया है। पीएम मोदी ने यहां कहा कि आज का दिन ऐतिहासिक है। हम उज्जवल भविष्य की तरफ एक मजबूत कदम बढ़ा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, कि आज देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। आज, हम भी एक इतिहास लिख रहे हैं और उज्ज्वल भविष्य की तरफ मजबूत कदम बढ़ा रहे हैं। पीएम मोदी ने बताया कि इस अभूतपूर्व अवसर पर साठ हजार से ज्यादा शिक्षण संस्थान, यूनिवर्सिटीज, कॉलेज के छात्र-छात्राएं जुड़े हुए हैं। भविष्य के भारत के असली स्टेकहोल्डर यही नौजवान हैं। उन्होंने कहा कि आत्मविश्वास से परिपूर्ण युवा देश का भाग्य बदल देता है। इस अवसर पर पीएम मोदी ने कार्यक्रम से जुड़े सभी छात्रों का स्वगात किया और आगे कहा कि 21वीं सदी टेक्नॉलजी ड्रिवेन सेंचुरी है। ऐसे में सेमीकंडक्टर के बिना इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। यह भारत को आधुनिकता की तरफ ले जाने में एक सामार्थ्य पैदा करेगी। उन्होंने कहा कि यह इंडस्ट्री 4.0 क्रांति के लिहाज से आगे बढ रही है और हम एक पल भी गवाना नहीं चाहते हैं। यहां पीएम मोदी ने सेमीकंडक्टर मिशन के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि भारत पहले से ही न्यूक्लियर, और स्पेस पॉवर से परिपूर्ण है और अब वह दिन दूर नहीं जबकि सेमीकंडक्टर का कॉमर्शियल उत्पादन कर सकेंगे और आने वाले दिनों में भारत इस क्षेत्र में भी सुपर पॉवर बन जाएगा। पीएम मोदी ने कहा कि हमने इज ऑफ डूइंग बिसनेज को बढ़ावा दिया है, जिसके तहत भारत में निवेशकों के लिए एफडीआई के नियमों को भी आसान कर दिया है। इस कार्यक्रम में गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल, केंद्रीय आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव और अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

बेंगलुरु कैफे ब्लास्ट मामले में एनआईए ने की पहली गिरफ्तारी

नई दिल्ली। बेंगलुरु कैफे ब्लास्ट मामले में एनआईए ने बेल्लारी से एक शख्स को गिरफ्तार किया है। यह इस मामले में पहली गिरफ्तारी है। आरोपी की पहचान मोहम्मद शब्बीर के रूप में हुई है। एनआईए द्वारा मामले की जांच तेज किए जाने के बाद आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। गत 3 मार्च को एनआईए को मामले की जांच सौंप दी गई थी। जांच एजेंसी मामले में सबूत जुटाकर जांच कर रही है, ताकि सभी आरोपियों को चिन्हित किया जा सके। गत 1 मार्च को बैंगलुरु स्थित रामेश्वरम कैफे में ब्लास्ट हुआ था। सूत्रों के मुताबिक, शब्बीर मुख्य आरोपी का सहयोगी बताया जा रहा है। शब्बीर को ही सीसीटीवी फुटेज में बैग छोड़कर जाता हुआ देखा गया था। बता दें कि आईइडी से बैंगलुरु के रामेश्वरम कैफे में ब्लास्ट किया गया था। इस ब्लास्ट की वजह से लोग खौफ में आ गए। वहीं, कई अन्य घायल हो गए। तस्वीरों में संदिग्ध हमलावर को बिना टोपी के, बैगपैक के साथ आत्मविश्वास से चलते हुए गुलाबी टी-शर्ट और पतलून पहने हुए दिखाया गया है। तस्वीरों में वह मास्क पहने नजर आ रहा है।

पवन सिंह का यूटर्न, आसनसोल से नहीं आरा से चुनाव लड़ने की तैयारी

पटना। भोजपुरी सिनेमा के सुपर स्टार पवन सिंह ने लोकसभा चुनाव लड़ने का ऐलान किया है। उन्होंने पर पोस्ट कर जानकारी दी कि वह निश्चित रूप से चुनाव लड़ूंगा। बता दें कि इसके पहले पवन को बीजेपी ने पश्चिम बंगाल की आसनसोल विधानसभा सीट से टिकट दिया था, लेकिन उन्होंने मना कर दिया था। अब पवन के आरजेडी पार्टी के टिकट पर आरा से चुनाव लड़ने के कयास लगाए जा रहे हैं। पवन सिंह ने पोस्ट किया कि भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का आभार प्रकट करता हूं। पार्टी ने मुझ पर विश्वास करके आसनसोल से उम्मीदवार बनाया था, लेकिन किसी कारणवश में आसनसोल से चुनाव नहीं लड़ पाऊंगा। अब चर्चा है कि पवन आरा से टिकट चाहते थे। इसलिए उन्होंने बीजेपी के टिकट पर चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया था। सूत्रों के मुताबिक पवन ने आरजेडी के वरिष्ठ नेता मंगल पांडेय से मुलाकात की थी, इसके बाद उन्हें आरजेडी से टिकट मिलने की उम्मीद है। साथ ही उन्होंने अब चुनाव लड़ने का भी ऐलान कर दिया है। पवन ने बीजेपी से मिले टिकट को लौटाने के बाद बीजेपी प्रमुख से भी मुलाकात की है। उन्होंने जेपी नड्डा से मुलाकात की थी। तब लग रहा था कि भाजपा पवन सिंह को बीजेपी आरा से टिकट दे सकती है, हालांकि आरा सीट से दो बार सांसद रहे बीजेपी नेता और केंद्रीय ऊर्जा मंत्री आरके सिंह साफ कर चुके हैं, कि वे आरा से ही चुनाव लड़ूंगा।

भाजपा ने विपक्षी नेताओं से कहा, सीएए के बारे में झूठ फैलाना बंद करें

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। संशोधित नागरिकता कानून (सीएए) को लागू करने को लेकर केंद्र सरकार की आलोचनाओं के बीच भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बुधवार को विपक्षी दलों पर आरोप लगाया कि वे इस कानून के बारे में 'झूठ' फैलाकर सांप्रदायिक भावनाएं भड़का रहे हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता रविशंकर प्रसाद ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी जैसे विपक्षी नेताओं पर कानून की तीखी आलोचना करने के लिए निशाना साधा और कहा कि यह कानून किसी भारतीय की नागरिकता या फिर नौकरी नहीं छीनता है। केजरीवाल के इस दावे के संदर्भ में कि केंद्र की भाजपा सरकार भारतीयों को नौकरी नहीं दे सकती, लेकिन पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश से आने वालों को देना चाहती है, प्रसाद ने कहा कि आम आदमी पार्टी के नेता ने बहुत अजीब बयान दिया है। प्रसाद ने जोर देकर कहा कि यह कानून उन अल्पसंख्यकों के लिए है जिन्हें तीन देशों में उनके धार्मिक विश्वास के कारण सताया गया। उन्होंने कहा कि ये लोग भारत

में कठिन जीवन जी रहे हैं और क्या उन्हें नागरिकता देने में देश नैतिक, सांस्कृतिक और संवैधानिक रूप से सही नहीं है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने स्पष्ट कर दिया है कि सीएए नागरिकता देने के लिए है और यह किसी की नागरिकता नहीं छीनता है।प्रसाद ने कहा कि विपक्षी दल यह दुष्प्रचार क्यों फैला रहे हैं। साथ ही उन्होंने सवाल किया कि क्या वे रोहिंग्याओं के समर्थन में खड़े होंगे।

उन्होंने कहा, जो लोग सीएए के नाम पर सांप्रदायिक भावनाएं भड़का रहे हैं, मैं उनसे कहूंगा कि वे इसके बारे में झूठ फैलाना बंद करें।" प्रसाद ने दावा किया कि बनर्जी की जमीन खिसक रही है और यही कारण है कि वह सीएए के मुद्दे को सांप्रदायिक रंग देने के लिए मजबूर हैं। उन्होंने दक्षिण भारत खासकर केरल और तमिलनाडु के राजनीतिक दलों से अपील की कि वे नफरत फैलाना बंद करें। उन्होंने दावा किया कि आलोचकों के पास कानून के खिलाफ कोई तर्क नहीं है। उन्होंने विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए कहा कि इन सभी का राजनीतिक आधार डूब रहा है। प्रसाद ने कहा कि भारत ने एक देश के तौर पर अपनी सभ्यतागत विरासत और संवैधानिक दायित्वों के कारण तीनों देशों के प्रताड़ित अल्पसंख्यकों को सीएए के तहत संरक्षण प्रदान किया है। पूर्व विधि मंत्री ने अन्य दलों द्वारा शासित कुछ राज्यों के इस दावे को भी खारिज किया कि वे कानून को लागू नहीं करेंगे। इससे पहले केजरीवाल ने कहा था कि लोकसभा चुनाव से पहले संशोधित नागरिकता कानून को लागू करना भाजपा की ह्यवोट बैंक की घटिया राजनीतिह्न है। उन्होंने कहा कि लोग चाहते हैं कि सरकार इस कानून को वापस ले। केजरीवाल ने कहा कि इस कानून के साथ केंद्र की भाजपा नीत सरकार ने पाकिस्तान और बांग्लादेश से बड़ी संख्या में गरीब अल्पसंख्यकों के भारत में आने के लिए दरवाजे खोल दिए हैं। केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा सोमवार को कानून को अधिसूचित किए जाने के बाद बनर्जी, केरल में सत्तारूढ़ वाम दल और तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रमुक भी कानून का कड़ा विरोध कर रहे हैं।

भूटान के पीएम पांच दिवसीय यात्रा पर आएंगे भारत

नई दिल्ली। भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग टोबगे 14-18 मार्च तक भारत की आधिकारिक यात्रा पर आएंगे। जनवरी 2024 में पदभार ग्रहण करने के बाद प्रधानमंत्री टोबगे की यह पहली विदेश यात्रा है। विदेश मंत्रालय के अनुसार प्रधानमंत्री टोबगे के साथ आने वाले प्रतिनिधिमंडल में विदेश मामलों और विदेश व्यापार मंत्री, ऊर्जा एवं प्राकृतिक संसाधन मंत्री, उद्योग, वाणिज्य एवं रोजगार मंत्री और भूटान की शाही सरकार के वरिष्ठ अधिकारी शामिल होंगे। इस दौरे में भूटान के प्रधानमंत्री राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात करेंगे और प्रधानमंत्री के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। विदेश मंत्री और अन्य गण्यमान्य व्यक्ति भूटान के प्रधानमंत्री से मुलाकात करेंगे। इस दौरान प्रधानमंत्री टोबगे मुंबई भी जाएंगे। मंत्रालय के अनुसार भारत और भूटान के बीच सभी स्तरों पर विश्वास, सद्भावना और आपसी समझ पर आधारित मित्रता और सहयोग के अनुकरणीय संबंध हैं। भूटान के प्रधानमंत्री की यात्रा दोनों पक्षों को हमारी अनूठी साझेदारी में प्रगति की समीक्षा करने और भारत और भूटान के बीच मित्रता और सहयोग के स्थायी संबंधों का विस्तार करने के तरीकों और साधनों पर चर्चा करने का अवसर प्रदान करेगी।

सीएए देश के लिए खतरनाक : केजरीवाल

- तीन देशों से आएंगे करोड़ों लोग, रोजगार की समस्या हो जाएगी विकराल

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार द्वारा सीएए लागू करने को लेकर देश में सियासी पारा गरमा गया है। इसे लेकर अब दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा है और कहा, कि सीएए देश के लिए खतरनाम है। जब तीन देशों से करोड़ों लोग आएंगे तो देश में रोजगार की समस्या और विकराल रुप धारण कर लेगी। उन्होंने कहा कि हमारे युवा रोजगार के लिए लाठियां खा रहे हैं और सरकार रोजगार का समाधान खोजने की बजाय सीएए की बात कर रही है।

केंद्र की मोदी सरकार ने नागरिकता संशोधन अधिनियम-2019 की अधिसूचना जारी कर देश में एक तरह से सियासी पारा बढ़ाने का कार्य कर दिया है। इसी के चलते दिल्ली के मुख्यमंत्री और आप संयोजक अरविंद केजरीवाल का कहना है कि सीएए लागू होने के बाद 3 देशों से करोड़ों लोग भारत आएंगे। ऐसे में आखिर उन्हें रोजगार कौन देगा? यह स्थिति देश के लिए खतरनाक है। सीएम केजरीवाल ने कहा कि सीएए प्रावधानों के मुताबिक बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में हिंसा या फिर किसी अन्य तरीके से वहां के अल्पसंख्यक यदि बेघर होते हैं तो पूरी छानबीन व जांच के बाद उन्हें भारत की नागरिकता दी जा सकती है। इसमें इन तीनों देशों में रहने वाले हिन्दू, सिख, बौद्ध, ईसाई, पारसी जैसे अल्पसंख्यक समुदाय के व्यक्तियों को यह सुविधा मिल सकेगी। इस पर आपत्ति दर्ज कराते हुए उन्होंने कहा कि इधर देश का युवा रोजगार के लिए लाठियां खा रहा है और सरकार रोजगार का समाधान खोजने की बजाय सीएए में उलझी हुई है। सीएम केजरीवाल ने कहा, कि केंद्र सरकार हमारे बच्चों को तो रोजगार नहीं दे रही है, लेकिन पाकिस्तान से आने वालों को रोजगार देने का वादा जरुर कर रही है। सीएए से उत्तपन्न होने वाली गंभीर समस्या की ओर इशारा करते हुए सीएम केजरीवाल ने कहा, कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश वैसे भी गरीब देश हैं और जैसे ही भारत इनके अल्पसंख्यक नागरिकों के लिए अपने दरवाजे भारत खोलेगा तो भारी भीड़ देश में आ जाएगी। ढाई करोड़ में से यदि डेढ़ करोड़ लोग ही भारत आ गए तो उन्हें रोजगार कौन देगा? सीएए गंदी राजनीति वाला खेलः भाजपा का पूरा खेल गंदी राजनीति का ही हिस्सा है। सीएम केजरीवाल ने दावा किया, इन लोगों को लाया गया और चुन-चुन कर उन इलाकों में बसाया गया, जहां भाजपा का वोट कम है। ऐसा ही लोगों का कहना है ह्न उन्होंने कहा, कि हरियाणा सरकार रोजगार के अभाव में बच्चों को इजराइल भेजती है और पाकिस्तानियों को भारत लाकर रोजगार देना चाह रहे हो। उन्होंने आगे कहा कि प्रत्येक देश पड़ोसी देशों को रोकने के लिए अपनी सीमा की दीवार मजबूत करता है, लेकिन भाजपा इन देशों के गरीबों को लाने की कोशिश में लगी हुई है। भाजपा की नीतियों से तंग आए व्यापारियों ने देश छोड़ासीएम केजरीवाल का कहना है कि पिछले 10 सालों में 11 लाख से ज्यादा व्यापारी और उद्योगपति भाजपा की नीतियों से तंग आकर भारत छोड़कर चले गए हैं। ये लोग रोजगार देते थे। लाना ही है तो इन्हें लाएं, ताकि युवाओं को वो रोजगार दे सकें। क्या कहता है सीएएः नागरिकता संशोधन अधिनियम-2019 यानी सीएए को केंद्र सरकार ने सोमवार को अधिसूचित कर दिया है। सीएए के मुताबिक अब पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से आए बिना दस्तावेज वाले गैर-मुस्लिम प्रवासियों को भारतीय नागरिकता दी जा सकेगी। 31 दिसंबर, 2014 तक भारत आए बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी और ईसाई लोगों को भारतीय नागरिकता देना शुरू किया जा सकेगा।

अधीर चौधरी ने निर्वाचन आयुक्त पद के लिए सूचीबद्ध उम्मीदवारों का मांगा विवरण

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने निर्वाचन आयुक्तों के चयन के लिए प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली उच्चाधिकार प्राप्त समिति की बैठक से पहले विधि मंत्रालय को पत्र लिखकर सूचीबद्ध किए गए उम्मीदवारों के 'डोजियर' के साथ उनका विवरण मांगा है। विधायी विभाग के सचिव राजीव मणि को लिखे पत्र में चौधरी ने उनसे निर्वाचन आयुक्त पद के लिए सूचीबद्ध किए गए उम्मीदवारों का विवरण उनके बायोडाटा के साथ भेजने को कहा है।चौधरी निर्वाचन आयुक्त के चयन से संबंधित समिति का हिस्सा हैं। कांग्रेस नेता ने विधि मंत्रालय के अधिकारी से कहा है कि केंद्रीय सतर्कता आयुक्त (सीवीसी) की नियुक्ति के लिए अपनाई गई प्रक्रिया के अलावा मुख्य सूचना आयुक्त (सीआईसी) और सूचना आयुक्तों सहित अन्य शीर्ष अधिकारियों की नियुक्ति के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया का अनुसरण किया जाना चाहिए। चौधरी सीआईसी और सीवीसी के चयन के लिए प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली समिति के सदस्य भी हैं।

उत्तराखंड : यूसीसी बिल को राष्ट्रपति की मंजूरी

सीएम धामी ने कहा-यह हर्ष और गौरव का क्षण

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। उत्तराखंड में यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) लागू करने का रास्ता अब साफ हो गया है। पुष्कर धामी सरकार द्वारा तैयार यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) को बुधवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की तरफ से मंजूरी दे दी गई है। इसकी जानकारी खुद सीएम धामी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के जरिए दी। सीएम धामी ने लिखा कि समान नागरिक संहिता कानून लागू होने से सभी नागरिकों को समान अधिकार मिलने के साथ-साथ महिलाओं पर हो रहे उत्पीड़न पर भी लगाम लगेगी। उन्होंने पोस्ट में राष्ट्रपति भवन और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को भी टैग किया है। सीएम धामी ने पोस्ट में लिखा, "हम सभी प्रदेशवासियों के लिए यह अत्यंत हर्ष और गौरव का क्षण है कि हमारी सरकार द्वारा उत्तराखंड विधानसभा में पारित समान नागरिक संहिता विधेयक को आज राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अपनी मंजूरी प्रदान की है। निश्चित तौर पर प्रदेश में समान नागरिक संहिता कानून लागू होने से सभी नागरिकों को समान अधिकार मिलने के साथ ही महिलाओं पर हो रहे उत्पीड़न पर भी लगाम लगेगी। उन्होंने आगे लिखा, प्रदेश में सामाजिक समानता की सार्थकता को सिद्ध करते हुए समरसता को बढ़ावा देने में यूनिफॉर्म सिविल कोड अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन के अनुरूप हमारी सरकार नागरिकों के हितों के संरक्षण और उत्तराखंड के मूल स्वरूप को बनाए रखने के लिए संकल्पित है।"

भाजपा में शामिल हुए कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव अजय कपूर

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश में राजनीतिक जमीन तलाश रही कांग्रेस को भाजपा ने बुधवार को एक बड़ा झटका दिया। उत्तर प्रदेश में तीन बार विधायक का चुनाव जीतने वाले पूर्व कांग्रेस विधायक और वर्तमान में पार्टी के राष्ट्रीय सचिव अजय कपूर ने बुधवार को भाजपा का दामन थाम लिया। भाजपा राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े, भाजपा राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अनिल बलूनी और अन्य कई नेताओं की मौजूदगी में बुधवार को दिल्ली के भाजपा राष्ट्रीय मुख्यालय में कांग्रेस नेता अजय कपूर ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। भाजपा राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े ने अजय कपूर का पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि ये बिहार कांग्रेस के सह प्रभारी हैं और वे बिहार भाजपा के प्रभारी हैं तो उनके आने से पार्टी को निश्चित तौर पर बिहार में भी फायदा मिलेगा। वहीं, अनिल बलूनी ने अजय कपूर का पार्टी में स्वागत करते हुए बताया है कि वह उत्तर प्रदेश में तीन बार विधायक रह चुके हैं और वर्तमान में कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव

एनसीसी में तीन लाख कैडेटों को शामिल करने के प्रस्ताव को मंजूरी

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने राष्ट्रीय कैडेट कोर के विस्तार के लिए तीन लाख कैडेट रिक्तियों को भरने से संबंधित प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इससे देश भर के शैक्षणिक संस्थानों में एनसीसी की बढ़ती मांग को पूरा करने की उम्मीद है। इस प्रस्ताव की मंजूरी के बाद एनसीसी में अब कैडेटों की स्वीकृत संख्या 20 लाख हो जायेगी, जो इसे दुनिया का सबसे बड़ा वर्दीधारी युवा संगठन बना देगी। वर्ष 1948 में केवल 20,000 कैडेटों के साथ एनसीसी का गठन हुआ था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार एनसीसी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में पेश किए जाने के साथ, एनसीसी का यह विस्तार देश के भावी मार्गदर्शक

के रूप में अहम भूमिका निभाने की युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में बड़ा कदम होगा।इस विस्तार से सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में रिक्तियों का आनुपातिक वितरण होगा और एनसीसी के इच्छुक शैक्षणिक संस्थानों की प्रतीक्षा सूची में कमी आएगी। इस विस्तार योजना में चार नए समूह मुख्यालयों और दो नई एनसीसी इकाइयों की स्थापना शामिल है। इस विस्तार योजना का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसमें पूर्व सैनिकों को एनसीसी प्रशिक्षकों के रूप में रोजगार देने का प्रस्ताव शामिल है, जिससे उनके कौशल और लंबे अनुभव का लाभ उठाया जा सके। इस पहल से एनसीसी कैडेटों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण सुनिश्चित हो सकेगा और उनके लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे।यह विस्तार अनुशासन, नेतृत्व और सेवा की भावना से ओतप्रोत मार्गदर्शक तैयार करने के प्रति समर्पण का प्रतीक है। एनसीसी का लक्ष्य एक ऐसा वातावरण तैयार करना है, जहां युवा राष्ट्र निर्माण में सार्थक योगदान दें। यह पहल ह्यअमृतपीढ़ीह्न के प्रेरित, अनुशासित और देशभक्त युवाओं के आधार का विस्तार करेगी जो विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने में योगदान देंगे।

वादा गरीब महिला को एक लाख रुपये और नौकरी का वादा

आम चुनाव में मोदी की गारंटी को टक्कर देने आ गई कांग्रेस की नारी न्याय गारंटी

प्रातः किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी लोकसभा चुनाव 2024 में वोटरों को लुभाने की कोशिश में लगी हुई है। जनाधार बढ़ाने की पुरजोर कोशिश में जुटे पार्टी आलाकमान ने महिलाओं के लिए बड़ा ऐलान किया है। नारी न्याय गारंटी की घोषणा कर पार्टी सुप्रीमो मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि पार्टी देश की आधी आबादी के लिए नया एजेंडा सेट करेगी। खरगे ने कहा, कांग्रेस नारी न्याय गारंटी के तहत कांग्रेस 5 घोषणाएं कर रही है। उन्होंने गारंटियों के नाम भी गिनाए। पहली गारंटी-महालक्ष्मी गारंटी के नाम से

जाना जाएगा। इसके अलावा आधी आबादी पूरा हक, शक्ति का सम्मान, अधिकार मैत्री और सावित्रीबाई फुले छात्रावास गारंटी का ऐलान भी किया गया। खरगे ने कहा कि कांग्रेस की महालक्ष्मी गारंटी के तहत हर गरीब परिवार की एक-एक महिला को सालाना एक लाख रुपये की मदद मिलेगी। दूसरी घोषणा-आधी आबादी पूरा हक के तहत केंद्र सरकार के स्तर पर होने वाली नई भर्तियों में आधे से ज्यादा पदों पर महिलाओं का अधिकार होगा। तीसरी गारंटी- शक्ति का सम्मान के तहत आंगनवाड़ी, आशा और मध्याह्न भोजन कार्यकताओं की मासिक आय में केंद्र का योगदान दोगुना होगा। कांग्रेस की चौथी गारंटी-अधिकार मैत्री है। कांग्रेस इसके तहत महिलाओं के बीच जागरूकता पैदा करने का प्रयास करेगी। हर पंचायत में एक पैरालीगल नियुक्त किया जाएगा। उनके अधिकारों की रक्षा के अलावा महिलाओं की मदद भी की जाएगी।

कांग्रेस ने जिस पांचवीं गारंटी का जिक्र किया है, इसमें शिक्षा पर फोकस करने का वादा किया है। सावित्रीबाई फुले छात्रावास गारंटी के तहत भारत सरकार कामकाजी महिलाओं के लिए जिला मुख्यालयों पर कम से कम एक छात्रावास बनाएगी। देश भर में इन छात्रावासों की संख्या दोगुनी करने का वादा भी किया है। गौरतलब है कि मंगलवार को कांग्रेस प्रमुख खरगे ने आदिवासियों से जुड़े छह संकल्पों की घोषणा की थी। खरगे ने कहा था कि उनकी पार्टी जल-जंगल और जमीन को बचाने के लिए संकल्पित है। उन्होंने आदिवासी लोगों के लिए कांग्रेस पार्टी के छह संकल्पों का भी जिक्र किया।

संक्षिप्त समाचार

युवक ने ट्रेन के आगे कूदकर की आत्महत्या

रूड़की, एजेंसी। एक युवक ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने पंचनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। सिविल लाइंस कोतवाली पुलिस के अनुसार सोमवार रात करीब आठ बजे सूचना मिली थी कि एक युवक ने ढंढेरा के पास ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटना की जानकारी ली। साथ ही शव की शिनाख्त कराई। युवक की पहचान रोहित निवासी गांव लिब्बरहेड़ी, मंगलौर के रूप में हुई। कोतवाली प्रभारी आरके सकलानी ने बताया कि युवक की शादी दिसंबर माह में हुई थी। मृतक के परिजनों को सूचना दे दी गई थी। बताया कि आत्महत्या के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

प्रकृति को समझने के लिए हुई है दर्शन की उत्पति : प्रो. प्रधान

ऋषिकेश, एजेंसी। श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय के पं. ललित मोहन शर्मा परिसर में भारतीय ज्ञान परंपरा उत्कृष्ट केंद्र एवं फैकल्टी डेवलपमेंट सेंटर की ओर से आयोजित सात दिवसीय संकाय संवर्धन कार्यक्रम के अंतिम दिन विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिया। बीएचयू के प्रो. अवधेश प्रधान, विवेकानंद, प्रो. सुज्ञान कुमार मोहंती ने भारतीय ज्ञान परंपरा में विमान शिल्प एवं प्रौद्योगिकी, प्रसिद्ध रंगमंच, फिल्म और साहित्य की विस्तृत जानकारी दी। जिसमें उन्होंने हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडियन थियेटर एंड इन्फ्लुएंस ऑफ क्लासिकल ट्रेडिशनल थियेटर को सारगर्भित किया। अंबेडकर विश्वविद्यालय के प्रो. गोपाल प्रधान ने राहुल सांस्कृत्यायन की निगाह में भारतीय दर्शन पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि दर्शन की उत्पत्ति ही प्रकृति को समझने के क्रम में हुई है। वह प्रकृति भी बाहर नहीं है, मानव प्रकृति ही प्रकृति है। सात दिवसीय वर्चुअल कार्यक्रम में करीब 25 व्याख्यान हुए।

तहसीलदार, नायब और बीडीओ का पद खाली

ऋषिकेश, एजेंसी। यमकेश्वर तहसील में तहसीलदार, नायब तहसीलदार और खंड विकास अधिकारी का पद खाली चल रहा है। जिससे स्थानीय लोगों के प्रमाणपत्रों और अन्य कार्य प्रभावित हो रहे हैं। अधिकारियों की तैनाती न होने से लोगों को तहसील से बैरंग जाना पड़ रहा है। 30 जनवरी को तहसीलदार सुधा डोभाल का तबादला टिहरी जनपद में हो गया था। उनकी मूल तैनाती सतपुली तहसील में थी। उनके पास यमकेश्वर और जाखणीखाल तहसील का अतिरिक्त चार्ज था। काम की अधिकता होने के कारण वह एक महीने में मात्र दो दिन ही यमकेश्वर तहसील में बैठ पा रही थी। उसके बाद से यमकेश्वर तहसील में तहसीलदार का पद खाली चल रहा है। कोटद्वार की तहसीलदार साक्षी उपाध्याय को यमकेश्वर और जाखणीखाल तहसील का अतिरिक्त चार्ज दिया गया है, लेकिन लोकसभा चुनाव से संबंधित काम के कारण वह यमकेश्वर और जाखणीखाल तहसील को पर्याप्त समय नहीं दे पा रही हैं। वहीं खंड विकास अधिकारी दृष्टि आनंद का भी 11 फरवरी को यमकेश्वर ब्लॉक से पौड़ी तबादला हो गया था। उनके तबादले के बाद किसी दूसरे अधिकारी की तैनाती नहीं हो पाई। वहीं नायब तहसीलदार किशोर रौतेला का भी 26 फरवरी को बागेश्वर जिले में तबादला हो गया था।

तहसील परिसर में किया सांकेतिक प्रदर्शन

ऋषिकेश, एजेंसी। उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी संयुक्त संघर्ष समिति के सदस्यों ने दस सूत्री मांगों के समाधान को लेकर तहसील परिसर में सांकेतिक प्रदर्शन किया। विभिन्न मांगों के समाधान को लेकर समिति पदाधिकारियों ने एसडीएम कुमकुम जोशी के माध्यम से प्रदेश सरकार को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने अवगत कराया कि वर्ष 1994 से लेकर वर्ष 2000 तक राज्य नहीं तो चुनाव नहीं में भाग लिया गया। साथ ही जेल भरो आंदोलन, रेल रोको, धरना प्रदर्शन, चक्काजाम जैसे विभिन्न प्रकार के आंदोलनों में भाग लिया। उत्तराखंड राज्य बनाने में पूर्ण भागीदारी निभाई।राज्य आंदोलनकारियों की मूल प्रत्यावेदनों की पूरी सूची डीएम देहरादून को दी गई थी। लेकिन अभी तक चिह्नीकरण नहीं हो पाया है।

रामनगर में दीपक रावत का जलवा, क्लासरूम में बच्चों से की बातचीत

नैनीताल, एजेंसी। कुमाऊं कमिश्नर दीपक रावत आज रामनगर पहुंचे, जहां उन्होंने बाढ़ प्रभावित मोहान क्षेत्र के चुकुम गांव का दौरा किया। इसी बीच उन्होंने अधिकारियों को चुकम गांव में बरसात से होने वाली परेशानियों को दूर करने का आदेश दिया।

ग्रामीणों ने बताया कि बारिश के सीजन में बाढ़ आने से खेतीबाड़ी के साथ जन-जीवन प्रभावित होता है। आवाजाही पूर्ण रूप से बंद हो जाती है। जिस पर दीपक रावत ने कहा कि चुकम गांव में बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए सरकार हर संभव प्रयास कर रही है।उन्होंने कहा कि सीएम पुष्कर सिंह धामी के निर्देश क्रम में चुकम गांव के बाढ़ ग्रस्त इलाकों का जिला प्रशासन सर्वे कर रहा है।

कुमाऊं कमिश्नर दीपक रावत ने कहा कि चुकम गांव के एक छोर में नदी बहती है, जबकि दूसरे छोर में पहाड़ है। इस कारण गांव में बाढ़ की स्थिति बनी रहती है। साथ ही इससे स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता है और खेती बाड़ी भी प्रभावित हो रही है। बताया कि बाढ़ की रोकथाम के लिए सिंचाई विभाग ने

आपदा प्रबंधन के तहत योजना बनाई है। जिसके तहत सुरक्षा दीवार, चेक डाम आदि को बनाया जाएगा, ताकि बाढ़ का पानी गांव को प्रभावित नहीं कर सके। साथ ही पूर्व में प्रभावित लोगों को सरकार की विस्थापन नीति के तहत सरकारी भूमि आदि की सुविधा देने के लिए कार्रवाई की जा रही है। दीपक रावत ने बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र सुन्दरखाल, रामनगर का स्थलीय निरीक्षण किया। जहां लगभग 500 परिवार निवासिन हैं। ग्रामीणों ने दीपक रावत के सामने बिजली, पानी, रास्ता आदि की समस्याएं रखीं। इसी दौरान ग्रामीणों ने बताया कि यहां मानसून काल में बाढ़ की समस्या भी रहती है, जिसके बचाव के लिए ग्रामीणों ने अन्यत्र स्थान पर विस्थापित करने की मांग रखी, इस संबंध में दीपक रावत ने ग्रामीणों से संयुक्त सहमति पत्र उपलब्ध कराने के लिए कहा ताकि विस्थापन मानकों के अधीन ससमय विस्थापन की कार्रवाई की जा सके।

चुकुम में बाढ़ से निपटने के लिए बनी है योजना : कमिश्नर

नैनीताल, एजेंसी। कमिश्नर दीपक रावत ने रामनगर के बाढ़ग्रस्त क्षेत्र चुकुम गांव का स्थलीय निरीक्षण कर स्थानीय लोगों से नुकसान और समस्याओं की विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने कहा कि बाढ़ की रोकथाम के लिए सिंचाई विभाग ने आपदा प्रबंधन के तहत योजना बनाई है। इसके तहत सुरक्षा दीवार, चेक डाम आदि बनाया जाएगा ताकि बाढ़ का पानी गांव को प्रभावित नहीं कर सके। कमिश्नर ने राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में बच्चों से भी बात की। ग्रामीणों ने कमिश्नर को बताया कि बरसात में बाढ़ आने से खेतीबाड़ी के साथ जनजीवन प्रभावित होता है। आवाजाही बंद हो जाती है। ग्रामीणों ने बिजली, पानी, रास्ता आदि की समस्याएं रखीं। इस पर आयुक्त दीपक रावत कहा कि चुकम गांव में बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर जिला प्रशासन बाढ़ ग्रस्त इलाकों का सर्वे कर रहा है। कमिश्नर ने बाढ़ग्रस्त सुंदरखाल, रामनगर का स्थालीय निरीक्षण भी किया, जहां लगभग 500 परिवार रहते हैं। इस मौके पर एसडीएम रामनगर राहुल शाह, मुख्य अभियंता सिंचाई संजय शुक्ला, हल्द्वानी, उप निदेशक अर्थ एवं संख्या राजेन्द्र तिवारी हल्द्वानी, तहसीलदार कुलदीप पांडेय, नायाब तहसीलदार दयाल मिश्रा, रामनगर वन प्रभाग के डीएफओ दिगांथ नायक, एसडीओ वन विभाग पूनम कैंथोला आदि मौजूद रहे।

ढाबे पर सवारी नहीं उतरी तो...कंडक्टर को धमकाया, देहरादून जा रही बस के परिचालक ने सुनाई आपबीती

नैनीताल, एजेंसी। उत्तराखंड परिवहन निगम के परिचालक से अभद्रता करने का मामला सामने आया है। अनुबंधित ढाबे में सवारी नहीं उतरने पर परिचालक के साथ अभद्रता की गई।

रोडवेज बस से अनुबंधित ढाबे में सवारी नहीं उतरने पर परिचालक के साथ अभद्रता करने का मामला सामने आया है। परिचालक ने परिवहन निगम के अधिकारियों से इसकी शिकायत की है। इससे अन्य परिचालकों में भी नाराजगी है।

परिवहन निगम के परिचालक मोहम्मद आफताब ने बताया कि बीते 10 मार्च की सुबह हल्द्वानी से देहरादून के लिए चली बस में 15 से अधिक सवारियां थीं। सुबह नौ बजे जसपुर के अनुबंधित ढाबे पर बस रोकी। यहां उन्होंने चाय पी और पर्ची कटाकर बस की ओर आने लगे तो ढाबे के कर्मचारी ने सवारी नहीं उतरने पर सवाल किया। इस पर उन्होंने सवारी की मर्जी की बात कही तो वह अभद्रता करने लगा। कहा कि इन ढाबों में खाने की क्वालिटी भी खराब रहती है।

बताया कि इस संबंध में

उन्होंने मौके से ही एआरएम हल्द्वानी डिपो को फोन कर ढाबा संचालक से बात करने को कहा तो उन्होंने मना कर दिया। अब मामले की लिखित में शिकायत दी है। एआरएम सुरेंद्र बिष्ट का कहना है कि परिचालकों ने देहरादून रूट के ढाबों पर अभद्रता करने की मौखिक और लिखित शिकायत की है। साथ ही खाने की क्वालिटी खराब होने की बात भी कही है। इस संबंध में मुख्यालय को पत्र भेजा जा रहा है।

दिल्ली, देहरादून आदि रूटों पर अनुंबधित ढाबों में यात्रियों से वसूली हो रही है। परिचालकों का कहना है कि यहां शौचालय जाने पर भी रुपये लिए जा रहे हैं जबकि अनुबंधित ढाबों में यात्रियों को हर तरह की सुविधा देना निगम प्रबंधन की शर्तों में आता है।

एंबुलेंस से लौट रही शिक्षिका की सड़क हादसे में मौत, बेटे ने भी तोड़ा दम

ऊधम सिंह नगर, एजेंसी। रुद्रपुर में एनएच 74 पर तेज रफ्तार एंबुलेंस सड़क किनारे खड़े ट्रक से टकरा गई। हादसे में एंबुलेंस सवार शिक्षिका की मौत हो गई, जबकि उनके बेटे ने बरेली के अस्पताल में दम तोड़ा।

रुद्रपुर में एनएच 74 पर तेज रफ्तार एंबुलेंस सड़क किनारे खड़े ट्रक से टकरा गई। हादसे में एंबुलेंस सवार शिक्षिका की मौत हो गई, जबकि उनके बेटे ने बरेली के अस्पताल में दम तोड़ा। हादसे में मृतका के पति, एंबुलेंस चालक सहित चार लोग घायल हो गए। सभी घायलों को भोजीपुरा बरेली स्थित राममूर्ति अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मूलरूप से ग्राम हरदुआ किफायततुल्ला थाना नवाबगंज बरेली निवासी मधुलिका गंगवार (42) अल्मोड़ा के जैंती स्थित राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में गणित की प्रवक्ता थीं। वह परिवार के साथ हल्द्वानी में रहती थीं। उनका बेटा देबांश (12) हल्द्वानी के एक स्कूल में पांचवीं का छात्र था। रिश्तेदारों के अनुसार एक पखवाड़े पहले मधुलिया हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गई। उनका एसटीएच हल्द्वानी और राममूर्ति अस्पताल में इलाज हुआ था लेकिन परिजन बेहतर इलाज के लिए उन्हें हिमालय इंस्टीट्यूट देहरादून ले गए। इलाज के बाद हालत बेहतर होने पर सोमवार रात मधुलिका पति दिनेश, बेटे देवांश और भतीजों विकास व मोहित के साथ एंबुलेंस से घर लौट रही थीं। एंबुलेंस को प्रदीप चला रहा था।

जानकारी के अनुसार दिनेशपुर थाना क्षेत्र के मोहननगर के पास एंबुलेंस सड़क किनारे खड़े ट्रक से जा टकराई। हादसे में वाहन में सवार मधुलिका सहित छह लोग घायल हो गए। आनन-फानन सभी को इलाज के लिए जिला अस्पताल लाया गया, जहां डाक्टर ने मधुलिका को मृत घोषित कर दिया। गंभीर रूप से घायल देवांश सहित पांच लोगों को हायर सेंटर रेफर किया गया। मधुलिका के रिश्तेदार जीपी गंगवार ने बताया कि राममूर्ति अस्पताल में देवांश की भी मौत हो गई है।

उसके शव का पोस्टमार्टम हो चुका है। मधुलिका के शव का पोस्टमार्टम होने के बाद दोनों शवों को गांव ले जाया जाएगा। इधर सीओ पंतनगर ओमप्रकाश ने बताया कि हादसे की वजह से पता लगाया जा रहा है। शव के पोस्टमार्टम कराने की कार्रवाई की जा रही है।

सीएम धामी ने नैनीताल विधानसभा को दी है 348 करोड़ की सौगात, विधायक सरिता आर्य ने दी जानकारी

नैनीताल, एजेंसी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने नैनीताल विधानसभा पर खास मेहरबानी दिखाई है। उन्होंने अब तक विधानसभा को 348 करोड़ के विकास कार्यों की सौगात दी है। विधायक सरिता आर्य ने पत्रकार वार्ता कर कही। साथ ही शहर के आंतरिक मार्गों के जीर्णोद्धार कार्य का शुभारंभ किया।

मंगलवार को विधायक सरिता आर्य ने नैनीताल क्लब में पत्रकार वार्ता कर बताया कि मुख्यमंत्री ने नैनीताल विधानसभा को करोड़ों की सौगात दी है, जिससे पुराने सभी रिकॉर्ड टूट गए हैं। विधानसभा क्षेत्र में 348 करोड़ के विकास कार्य किये जा रहे हैं, जबकि 104.45 करोड़ के कार्य पूरे किये जा चुके हैं।

उन्होंने बताया कि सरकार ने बलियानाला भूस्खलन रोकथाम को 178 करोड़, सीवर ट्रीटमेंट प्लांट के लिए 97 करोड़, ठंडी सड़क भूस्खलन रोकथाम को दस करोड़, नैनीताल के चौराहों के चौड़ीकरण को 5.5 करोड़, डीएसबी परिसर के छात्रावासों के जीर्णोद्धार को पांच करोड़, आंतरिक सड़कों के जीर्णोद्धार को 19 करोड़, लोअर मालरोड सुरक्षा कार्य के लिए 3.48 करोड़, कैंची धाम के लिए 28 करोड़, नयना देवी मंदिर के लिए 11 करोड़ का बजट स्वीकृत और जारी कर चुकी है।

तल्लीताल में 11.73 करोड़, मल्लीताल मस्जिद तिराहा पार्किंग को 1.22 करोड़ समेत

तमाम कार्य पूर्व में पूर्ण किये जा चुके हैं। जिसका सीधा फायदा जनता को मिल रहा है। आगामी लोकसभा चुनाव में पार्टी प्रत्याशी अजय भट्ट रिकार्ड मतों से जीत दर्ज कर इतिहास रचेंगे। इस दौरान वरिष्ठ नेता पूरन मेहरा, शिवांशु जोशी आदि मौजूद रहे।

शहर के 63 आंतरिक मार्ग वर्षों से मरम्मत कार्य नहीं होने से बदहाल हो गए थे, जिनमें गड्ढे बनने के कारण अक्सर सड़क दुर्घटनाएं होती रहती थी। शहरवासियों की लगातार मांग के बाद लोनिवि की ओर से मार्गों के मरम्मत को 19 करोड़ का प्रस्ताव बनाया था। जिसमें पहली किश्त पांच करोड़ लोनिवि को मिलने के बाद टेंडर प्रक्रिया पूरी कर ली गई है।

मंगलवार को जू रोड के समीप विधायक सरिता आर्य ने आंतरिक सड़कों के जीर्णोद्धार कार्य का शुभारंभ किया। इस दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष आनंद बिष्ट, भूपेंद्र बिष्ट, दयाकिशन पोखरिया, तुलसी कठायत, तारा राणा, रीना मेहरा आदि मौजूद रहे।

काम समझने से पहले हो जाता है आईएफएस दंपती का तबादला

नैनीताल, एजेंसी। हल्द्वानी वन विभाग में 11 मार्च को आईएफएस के स्थानांतरण हुए हैं। डीएफओ कुंदन कुमार का फिर स्थानांतरण हुआ है। दो साल में उनका यह छठा स्थानांतरण है। हल्द्वानी वन विभाग में 11 मार्च को आईएफएस के स्थानांतरण हुए हैं। डीएफओ कुंदन कुमार का फिर स्थानांतरण हुआ है। दो साल में उनका यह छठा स्थानांतरण है। डीएफओ कुंदन कुमार पहले हल्द्वानी वन प्रभाग में तैनात थे, यहां से उन्हें करीब दो साल पहले वन अनुसंधान भेजा गया। इसके बाद तराई पश्चिम वन प्रभाग में नई तैनाती दी गई। फिर उनका स्थानांतरण रामनगर वन प्रभाग में किया गया। कुछ समय बाद वहां से फिर से वन अनुसंधान में भेजा गया। यहां कुछ महीनों बाद ही टौंस वन प्रभाग में डीएफओ पद पर भेजा गया। अब एक बार फिर से वन अनुसंधान में नई तैनाती दी गई है। डीएफओ अभिलाषा का भी दो साल में चार बार स्थानांतरण हुआ है। फारेस्ट ट्रेनिंग अकादमी में लंबे समय से फैकल्टी और अधिकारियों की कमी चल रही थी, बीच में फैकल्टी की कमी को दूर किया

गया गया था मगर अकादमी में अपर निदेशक, सहायक निदेशक के पद रिक्त चल रहे हैं। अब शासन ने एक वन संरक्षक और एक उप वन संरक्षक को अकादमी में तैनाती का आदेश जारी किया है। फारेस्ट ट्रेनिंग अकादमी निदेशक डॉ. तेजस्विनी पाटिल कहती हैं कि अधिकारियों के आने से अकादमी के कामकाज को और बेहतर करने में मदद मिलेगी। हाल में वन विभाग में अधिकारियों के स्थानांतरण होने से केवल पश्चिम वृत्त के अधीन एक प्रभाग में ही डीएफओ की कमी दूर हो सकी है। तराई पूर्वी वन प्रभाग पद पर तैनात रहे संदीप कुमार बीते दिनों प्रति नियुक्ति पर दूसरे राज्य में चले गए थे। इसके बाद संबंधित डिविजन का कामकाज तराई केंद्रीय वन प्रभाग के डीएफओ हिमांशु देख रहे थे, अब डीएफओ हिमांशु का स्थानांतरण तराई केंद्रीय वन प्रभाग से तराई पूर्वी वन प्रभाग में कर दिया गया है। तराई केंद्रीय वन प्रभाग में बागेश्वर डीएफओ का दायित्व संभाल रहे यूसी तिवारी को भेजा गया है। डीएफओ का पद दिसंबर से खाली चल रहा है, यहां का चार्ज डीएफओ चंपावत के पास है। यहां पर किसी भी अधिकारी की तैनाती नहीं हुई है। रामनगर डीएफओ के पास भी दो चार्ज हैं, वे डीएफओ रामनगर के साथ ही उप निदेशक कॉर्बेट टाइगर रिजर्व की भी जिम्मेदारी संभाल रहे हैं।

'भाजपा ने दिया मछली पालन को कृषि उद्योग का दर्जा'

हरिद्वार, एजेंसी। लक्सर रोड स्थित भाजपा कार्यालय में भाजपा मछुवारा प्रकोष्ठ की गोष्ठी हुई। प्रदेश सह संयोजक राजवीर सिंह कश्यप ने कहा कि भाजपा ही ऐसी पार्टी है, जिसकी सरकार की ओर से मछली पालन को अलग से कृषि उद्योग का दर्जा दिया गया है। गोष्ठी में भाजपा जिला अध्यक्ष संदीप गोयल ने कहा कि भाजपा में ही ओबीसी समाज के हितों को ध्यान में रखते हुए ओबीसी आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया गया है। गरीब कल्याण के लिए फ्री राशन, आयुष्मान कार्ड योजना, आवास योजना आदि का लाभ भी सरकार की ओर से दिया जा रहा है। जिला मंत्री बिशनपाल कश्यप ने कहा कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के नारे को साकार करते हुए हमारी सरकार सभी वर्गों को साथ लेकर चल रही है। गोष्ठी में उपस्थित सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने सुझाव पेटी में डालकर पार्टी हाई कमान को भेजे।

प्रमुख वेडिंग प्लानर्स के साथ मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की बैठक

देहरादून, एजेंसी

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की अध्यक्षता में बुधवार को कैम्प कार्यालय सभागार में डेस्टिनेशन वेडिंग पर उत्तरी भारत के प्रमुख वेडिंग प्लानर्स के साथ वर्चुअल बैठक आयोजित हुई। बैठक में उत्तरी भारत के 75 से अधिक प्रमुख वेडिंग प्लानर्स ने प्रतिभाग किया, जिसमें से वैडिंग प्लानर सौरभ व सीता ने अपने अनुभव साझा करते हुये बताया कि आज कल के युवाओं को वेडिंग के लिये नेचुरल व्यू चाहिये, जिसके लिये उत्तराखण्ड बेस्ट वेडिंग डेस्टिनेशन है तथा यहां का मौसम भी काफी अच्छा है। उन्होंने बताया कि वे अब तक 60 से अधिक शादियों की व्यवस्था कर चुके हैं। इसी प्रकार वेडिंग प्लानर शैलजा व आयुष ने बताया कि हम देवभूमि उत्तराखण्ड के ऋषिकेश, त्रियुगीनारायण, चकराता आदि में वेडिंग करा चुके हैं। उन्होंने कहा कि यहां का वातावरण, मौसम, प्रकृति की विविधता आदि को देखते हुये देवभूमि उत्तराखण्ड के प्रति लोगों का जबरदस्त आकर्षण है। सीजेवाई गुड़गांव से

वेडिंग प्लानर सुश्री रेनू ने अपने अनुभव बताते हुये कहा कि हम अभी तक 200 से अधिक विवाह करा चुके हैं। इसी तरह अपने-अपने सुझाव बैठक में वेडिंग प्लानर्स ने साझा किये। मुख्यमंत्री ने बैठक में वर्चुवल रूप से जुड़े हुये देश के प्रमुख वेडिंग प्लानर्स का हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन करते हुये कहा कि आप वेडिंग के क्षेत्र में पहले से जुड़े हुये हैं तथा आप लोगों ने काफी अच्छे-अच्छे सुझाव वेडिंग डेस्टिनेशन के सम्बन्ध में दिये हैं, जिन्हें जल्दी ही अमल में लाया जायेगा। मुख्यमत्री ने कहा कि उत्तराखंड में कई ऐसे धार्मिक और प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण स्थल है, जिन्हें फिल्मों की शूटिंग के साथ-साथ प्री-वेंडिंग शूट के लिए भी प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने कहा कि चारधाम के अलावा उत्तराखंड का नैसर्गिक सौंदर्य हमेशा से देश-दुनिया के लोगों को आकर्षित करता रहा है तथा अब वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में भी प्रदेश खास पहचान बनाएगा। सरकार उत्तराखंड को वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में विकसित करने के लिए एक विस्तृत नीति बनाने पर कार्य कर रही है और जल्द ही उसके सुपरिणाम सामने आएंगे, उन्होंने यह भी कहा की प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की अपेक्षा के अनुरूप उत्तराखंड जल्द ही वेडिंग डेस्टिनेशन के क्षेत्र में भारत ही नहीं वरन विश्व में नंबर 1 बनेगा। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जिक्र करते हुये कहा कि उत्तराखंड ग्लोबल समिट के उद्घाटन सत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से शादियों के लिए विदेश जाने के बजाय वेडिंग के लिये उत्तराखंड आने का आह्वान किया था, जिस पर हम लगातार कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में वेडिंग के लिये सैकड़ों डेस्टिनेशसन हैं तथा जहां भी आपकी नजर पड़ेगी तो पूरी देवभूमि ही डेस्टिनेशन है। उन्होंने युवाओं का उल्लेख करते हुये कहा कि वेडिंग को हर कोई यादगार बनाना चाहता है तथा हमारा भी प्रयास है कि हरेक की वेडिंग यादगार बने। उन्होंने कहा कि जो उत्तराखण्ड में मिल सकता है, वह पूरी दुनियां में कहीं और नहीं मिल सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यहां त्रियुगीनारायण है, जहां शिव-पार्वती विवाह संपन्न हुआ था, यहां जागेश्वर धाम है, यहां बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री जैसे मंदिर हैं, यहां रामनगर जैसा वृहद वन क्षेत्र है। यहां आदि कैलाश है, यहां क्या नहीं है। उन्होंने कहा कि हम भविष्य में आप सभी के सुझावों को लेकर पॉलिसी बनाने के साथ ही हमारा हर प्रकार का सहयोग आप सभी को प्राप्त होगा। बैठक में सचिव नियोजन आर0 मीनाक्षी सुन्दरम ने कहा कि देवभूमि उत्तराखण्ड में चारधाम के अलावा अनेकों स्थल हैं तथा त्रियुगीनारायण तो शिव-पार्वती विवाह के लिये ही प्रमुख रूप से जाना जाता है।

शिक्षक ने सातवीं कक्षा की छात्रा से की छेड़खानी, परिजनों का हंगामा

रूड़की, एजेंसी। एक राजकीय जूनियर हाईस्कूल के शिक्षक ने कक्षा सात की छात्रा के साथ छेड़खानी कर दी। छात्रा ने परिजनों को इसकी जानकारी दी। परिजन एकत्रित होकर स्कूल पहुंचे और आरोपी के खिलाफ जमकर हंगामा किया। उन्होंने आरोप लगाया कि शिक्षक छात्रा के मोबाइल पर भी अश्लील मैसेज भेज चुका है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने किसी तरह परिजनों को समझाकर शांत किया। साथ ही आरोपी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया है।ढ्ढ

ढ्ढसिविल लाइंस कोतवाली क्षेत्र स्थित एक गांव में एक राजकीय जूनियर हाईस्कूल है। मंगलवार सुबह कक्षा सात की एक छात्रा फोटो स्टेट कराने के लिए स्कूल के एक कमरे में गई थी। तभी वहां पर सहायक अध्यापक पहुंच गया। आरोप है कि अध्यापक ने छात्रा को पीछे से पकड़ लिया और उसके साथ अश्लील हरकतें शुरू कर दीं।ढ्ढ

ढ्ढइस पर छात्रा ने शोर मचा दिया। शोर सुनकर आसपास मौजूद छात्र और शिक्षक मौके पर पहुंच गए। सूचना मिलते ही परिजन भी मौके पर पहुंच गए और शिक्षक की हरकतें जानकर जमकर हंगामा कर दिया। साथ ही आरोपी शिक्षक के साथ मारपीट करने का भी प्रयास किया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जानकारी ली। साथ ही शिक्षक को गिरफ्तार कर कोतवाली ले आई।

इसके बाद परिजन और बड़ी संख्या में आसपास के लोग भी कोतवाली पहुंचे। उन्होंने आरोपी पर कड़ी कार्रवाई की मांग। मामले में छात्रा के परिजनों की ओर से तहरीर दी गई। कोतवाली प्रभारी आरके सकलानी ने बताया कि तहरीर के आधार पर शिक्षक के खिलाफ छेड़खानी, पोक्सो समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कर लिया गया है।

सीएम केजरीवाल ने मोती नगर फ्लाईओवर का किया उद्घाटन, अब आप तीन मिनट में तय करेंगे 30 मिनट का सफर

इस फ्लाईओवर से धौंलाकुंआ से आजादपुर और दिल्ली से हरियाणा के रोहतक आने-जाने वाले लोगों को होगा फायदा

- इसके शुरू होने से सालाना 6 लाख लीटर ईंधन और 50 हजार टन कॉर्बन डाईऑक्साइड का प्रदूषण कम होगा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने मोती नगर रिंग रोड पर बना तीन लेन का फ्लाईओवर जनता को समर्पित कर दिया। इस फ्लाईओवर से धौंलाकुंआ से आजादपुर और दिल्ली से हरियाणा के रोहतक आने - जाने वाले लोगों को बहुत फायदा मिलेगा। सीएम ने दिल्लीवासियों को बधाई देते हुए कहा कि पहले ट्रैफिक जाम के चलते आधा किलोमीटर का यह सफर तय करने में आधा घंटा लग जाता था, लेकिन अब केवल तीन मिनट में तय होगा। यह एक बड़े प्रोजेक्ट का हिस्सा है। इसके आगे क्लब रोड फ्लाईओवर बनाया जा रहा है, जो जुलाई तक तैयार हो जाएगा। इसके बाद लोगों को और राहत मिल जाएगी। सीएम ने कहा कि दिल्ली में 2014 तक 63 फ्लाईओवर बने थे और हमने 10 साल में 31 फ्लाईओवर बना दिए। एक तरह से आजादी के बाद जितने फ्लाईओवर बने, हमने उसका 50 फीसद फ्लाईओवर बना दिए। हम दिल्ली में रह रहे हर तबके लिए कुछ न कुछ करने की कोशिश कर रहे हैं। मेरी अपील है कि आप ऐसे ही अपना प्यार और विश्वास बनाए रखिए। वहीं, पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने कहा कि इसके शुरू होने से सालाना 6 लाख लीटर ईंधन और 50 हजार टन कॉर्बन डाईऑक्साइड का प्रदूषण कम होगा। पीडब्ल्यूडी ने मोती नगर रिंग रोड पर तीन लेन का यह फ्लाइओवर बनाया है। सीएम अरविंद केजरीवाल ने फीता काट कर इस फ्लाइओवर का उद्घाटन और नाम पट्टिका का अनावरण किया। पीडब्ल्यूडी के अफसरों ने सीएम को फ्लाइओवर के मॉडल के बारे में बताया। सीएम अरविंद केजरीवाल, पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी, विधायक सोमनाथ भारती, शिवचरण गोयल, गिरिश सोनी को नवांकुर भेंट कर स्वागत किया गया। इस दौरान पीडब्ल्यूडी के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे। सीएम अरविंद केजरीवाल ने दिल्लीवासियों को बधाई देते हुए कहा कि पहले यहां आधा किलोमीटर का सफर तय करने के लिए आधा घंटा लगा करता था। जब कोई आदमी ट्रैफिक जाम में फंस जाए तो उसे बहुत टैंशन होती है। अब इस फ्लाईओवर के बनने से यह रास्ता तीन मिनट में तय हो जाएगा। मोती नगर का फ्लाइओवर इस प्रोजेक्ट का एक छोटा सा हिस्सा है। इसका मुख्य हिस्सा इसके आगे क्लब रोड फ्लाई ओवर बन रहा है। जो इससे ज्यादा बड़ा होगा। उसका काफी हिस्सा बन चुका है और वो जुलाई तक बनकर तैयार हो जाएगा। मोती नगर फ्लाइओवर बनने में डेढ़ साल का समय लगा और अगले क्लब रोड का फ्लाइओवर पौने दो साल में बनकर तैयार हो जाएगा। सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आजादी के बाद पिछले 75 साल में दिल्ली में 63 फ्लाइओवर बने थे। दिल्लीवालों ने जब से हमें दिल्ली जिम्मेदारी दी है, पिछले 10 सालों में हमने 31 फ्लाइओवर बना दिए। आज हम यह 31वें फ्लाईओवर का उद्घाटन कर रहे हैं। दिल्ली में जो काम पिछले 75 साल में हुआ था, उसका 50 फीसद काम हमने 10 साल मे करके दिखा दिया। इसके लिए साफ नियत चाहिए। काम करने के लिए पैसे की कमी नहीं है, पहले केवल नियत की कमी होती थी। सीएम अरविंद केजरीवाल ने बताया कि दिल्ली में इस समय दो किस्म में काम चल रहे हैं। एक काम जनता की भलाई के लिए हो रहे हैं। जैसे बिजली मुफ्त कर दी गई। इससे लोगों को महंगाई से हो रही परेशानी थोड़ी कम हुई। बिजली मुफ्त करने से दिल्ली के लगभग 73 फीसद लोगों को बिजली का बिल जीरो आता है। दिल्ली में आज 24 घंटे बिजली हो गई। इससे लोगों को बड़ा फायदा हुआ है।उन्होंने कहा कि हम लोगों ने बच्चों के लिए शानदार सरकारी स्कूल बनाए। मध्यम वर्ग और गरीब तबका प्राइवेट स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए मजबूर था और उसका एक-एक बच्चे पर हर महीने 3 से 4 हजार रुपए खर्च हो जाता था। अब मध्यम वर्ग और गरीब लोगों को अपने बच्चो को महंगे प्राइवेट स्कूलों में भेजने की जरूरत नहीं है। हमने सरकारी स्कूल इतने शानदार कर दिए हैं कि वो आज प्राइवेट स्कूलों से किसी भी मामले में कम नहीं हैं। बल्कि हमारे सरकारी स्कूल प्राइवेट स्कूलों से दो प्वाइंट आगे ही हैं। अब बहुत सारे लोग अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल से निकालकर सरकारी स्कूल में भर्ती करा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि हमने केवल शानदार बिल्डिंग्स बना कर ही छोड़ दिया है, बल्कि हमारे सरकारी स्कूलों के नतीजे भी बहुत अच्छे आ रहे हैं। अब बच्चे सरकारी स्कूलों से निकलकर डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बन रहे हैं। इन बच्चों को एक बेहतर भविष्य मिला है। सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हमने दिल्ली के सारे अस्पताल अच्छे कर दिए और हर मौहल्ले का अंदर मोहल्ला क्लीनिक खोल दिया। आज इतनी महंगाई हो गई है कि अगर घर में कोई बीमार हो जाए तो प्राइवेट अस्पतालों में उसकी दवाई और इलाज का बहुत खर्चा आ जाता है। लेकिन अब आपको प्राइवेट अस्पताल जाने की जरूरत नहीं है।

लोकसभा में सरकार का कार्यकाल तो इकत्तीस मई के बाद भी मिलेंगे : अनुराग ठाकुर

डॉ. अतुल कुमार

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय पर आयोजित प्रेस वार्ता में पत्रकारों द्वारा लोकसभा चुनाव के पूर्व की आखिरी कैबिनेट बैठक मानते हुए प्रश्न किये जाने पर सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने चुटकी लेते हुए जवाब दिया कि वैसे तो इस लोकसभा में सरकार का कार्यकाल तो इकत्तीस मई तक का है मगर इसके बाद भी हम ऐसे ही मिलेंगे। अनुराग ठाकुर के जवाब में लोकसभा चुनाव में भाजपा की जीत का आत्मविश्वास झलक रहा था। सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि जनहित में सरकार को कार्य करने के लिए कोई रोक नहीं है। सरकार देश हित के लिए चुनाव की घोषणा के बाद भी कैबिनेट की बैठक करती रहेगी। आचार सहिंता में काम रोका नहीं जाना। विगत लोकसभा चुनाव की घोषणा भी तेरह मार्च 2019 को हुई थी तथा सात चरणों के उस चुनाव में मतगणना 23 मई 2019 को की गयी। विपक्ष का आरोप रहा है कि चुनाव आयुक्त गोयल के अचानक पद से त्यागपत्र देने के कारण चुनाव प्रबंधन को लेकर समस्या रहेगी। माना जा रहा है कि 15 मार्च को रिक्त हुए चुनाव आयुक्त पर पर नियुक्ती कर दी जाएगी। वर्तमान लोकसभा का कार्यकाल 16 जून 2024 को समाप्त होने वाला है। इस आलोक में कम से कम तीन माह पूर्व यानि की 16 अप्रेल को चुनाव आयोग को आगामी कार्यकाल के लिए चुनाव की तिथि और कार्यक्रम की घोषणा देनी होती है। इस आशय का एक पत्र पहले ही चुनाव आयोग द्वारा अपने महकमे के अधिकारियों को तैयार रहने के लिए जारी किया जा चुका है।

हम आईटीएटी के आदेश में दखल नहीं दे सकते... हाईकोर्ट ने दिया कांग्रेस को झटका, 100 करोड़ के बकाया कर की होगी वसूली

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने 100 करोड़ के बकाया कर की वसूली पर रोक लगाने से इनकार करने संबंधी आईटीएटी के आदेश को बरकरार रखा है। आईटीएटी के आदेश के खिलाफ कांग्रेस की याचिका को अदालत ने खारिज कर दिया। मंगलवार को अदालत ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद निर्णय सुरक्षित रख लिया था। आईटीएटी के आदेश को कांग्रेस चुनौती दी थी। मामले की सुनवाई कर रही जस्टिस यशवंत वर्मा और जस्टिस पुरुषेंद्र कौरव ने आदेश पारित करते हुए कहा, हमें आईटीएटी के आदेश में हस्तक्षेप करने का कोई आधार नहीं मिला। कोर्ट ने आगे कहा, हमें नहीं लगता कि 13 फरवरी, 2024 को मूल्यांकन अधिकारी द्वारा जारी अधिनियम की धारा 226(3) के तहत वसूली नोटिस में प्रामाणिकता की कमी है, जिससे हमें हस्तक्षेप करने की आवश्यकता पड़े। आईटीएटी द्वारा आठ मार्च को पार्टी के आवेदन को खारिज करने के बाद कांग्रेस ने हाईकोर्ट का रुख किया था। कांग्रेस ने आईटीएटी से उसके खिलाफ वसूली कार्यवाही शुरू करने वाले आयकर विभाग के 13 फरवरी के नोटिस पर रोक लगाने की मांग की थी। आकलन अधिकारी ने आकलन वर्ष 2018-19 के लिए 100 करोड़ रुपये से अधिक की कर मांग की थी। कांग्रेस की तरफ से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता विवेक तन्खा ने अदालत से आग्रह किया कि उसे कुछ सुरक्षा दी जाए अन्यथा पार्टी टूट जाएगी। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के लिए अगले कुछ दिनों में अधिसूचना जारी होने की उम्मीद है और पार्टी काफी दबाव में है क्योंकि उसके बैंक खाते फ्रीज कर दिए गए हैं। वहीं, आयकर विभाग की तरफ से पेश हुए अधिवक्ता जोहेब हुसैन ने कहा कि कांग्रेस को वर्ष 2021 में मांग का 20 प्रतिशत भुगतान करने का विकल्प दिया गया था, लेकिन ऐसा नहीं किया गया। उन्होंने तर्क दिया कि यदि निर्धारिती पेशकश के समय मांग का 20 प्रतिशत जमा करने की सुविधा का लाभ नहीं उठाता है, तो पूरी राशि वसूली योग्य हो जाती है। जोहेब हुसैन ने कहा कि यह सामान्य तरीके से किया जाता है और याचिकाकर्ता पार्टी के लिए इसमें कुछ खास नहीं है। उन्होंने कहा कि ऐसी धारणा बनाई जा रही है कि विभाग चुनाव से ठीक पहले कर की वसूली कर रहा है, लेकिन यह एक नियमित प्रक्रिया है। इसका चुनाव से कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने पीठ को यह भी बताया कि मूल कर मांग 102 करोड़ रुपये थी और ब्याज के साथ यह 135.06 करोड़ रुपये हो गई। उन्होंने कहा कि अब तक 65.94 करोड़ रुपये मिले हैं। इसके जवाब में कांग्रेस की तरफ से पेश अधिवक्ता ने कहा कि आयकर अधिकारियों ने पार्टी के पिछले 7-8 वर्षों के मूल्यांकन को फिर से खोल दिया है।

बहरीन से लेकर आया 1.15 करोड़ का गोल्ड, ज्वेलरी

आईजीआई इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर कस्टम की टीम ने गोल्ड तस्करी के एक बड़े मामले का खुलासा किया है। इस मामले में एक करोड़ 15 लाख से ज्यादा का गोल्ड ज्वैलरी बरामद किया गया। कस्टम प्रवक्ता के अनुसार इस मामले में आरोपी हवाई यात्री को गिरफ्तार किया गया है।

नरेला में मैट्रो को मंजूरी नहीं तो लोकसभा चुनाव में वोट भी नहीं

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली आदर्श मूल ग्रामीण पंचायत महासंघ के अध्यक्ष एवं रिठाला रोहिणी, बवाना, नरेला मैट्रो रुट संघर्ष समिति की हाई पावर कार्डिनेशन कमेटी के वरिष्ठ सदस्य शिक्षाविद् दयानंद वत्स भारतीय ने आज केंद्र सरकार द्वारा रिठाला से रोहिणी बवाना नरेला कुंडली मैट्रो कारिडोर विस्तार को केंद्र सरकार द्वारा मंजूरी नहीं दिए जाने को उत्तर पश्चिमी लोकसभा क्षेत्र के लाखों लोगों के साथ किया गया क्रूर मजाक बताया है। वत्स ने कहा कि इससे क्षेत्र के लाखों ग्रामीणों में जन-प्रतिनिधियों और केंद्र सरकार के प्रति भारी गुस्सा और आक्रोश व्याप्त हो गया है। आज जिन दो कारिडोर को मंजूरी दी गई है वह पहले से ही मैट्रो नेटवर्क से जुड़े हैं। सबसे अधिक जरूरत रिठाला नरेला मैट्रो कारिडोर को मंजूरी देने की थी। यहां मैट्रो की कनेक्टिविटी नहीं है। पिछले 24सालों से यहां के लोगों को छला जा रहा है। रिठाला से आगे रोहिणी, बवाना और नरेला के बड़े औद्योगिक क्षेत्र, यहां की हजारों आवासीय इकाइयों, सैंकड़ों गांवों को मैट्रो की मंजूरी की पूरी उम्मीद थी। वत्स ने कहा कि हम संघर्ष समिति की और से लगातार केंद्रीय शहरी विकास मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी के संपर्क में थे। केंद्रीय मंत्री ने हमारे प्रतिनिधि मंडल को कहा था कि वे खुद दिसंबर 2023में नरेला आकर इसका उद्घाटन करेंगे। लेकिन आज फिर से इस रुट के कारिडोर को मंजूरी नहीं दी गई। इससे स्थानीय निवासी सदमे में हैं और अपने आपको ठगा सा महसूस कर रहे हैं। रिठाला बरवाला बवाना नरेला मैट्रो रुट संघर्ष समिति पहले ही निर्णय ले चुकी है कि ह्य नरेला में मैट्रो नहीं तो लोकसभा चुनाव में वोट भी नहीं देंगे। उत्तर पश्चिमी लोकसभा क्षेत्र के लोग मतदान का बहिष्कार कर सकते हैं, नोटा का प्रयोग कर सकते हैं।

15 करोड़ का ड्रग्स निगल कर लाया था 71 कैपशूल में

- नाइजीरीयन ड्रग ड्रग तस्कर को कराया था हॉस्पिटल में भर्ती

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नाइजीरिया का रहने वाला एक ड्रग तस्कर करोड़ों की कोकीन को अलग-अलग कैप्सूल में छुपाकर उसे निगलकर दिल्ली पहुंच गया और वह जब कस्टम जांच के लिए आगे बढ़ा तो उसके चाल ढाल और चलने के तरीका को देखकर वहां पर मौजूद कस्टम के ऑफीसरों को शक हो गया। क्योंकि यह जिस तरीके से चल रहा था, उससे उन्हें शक पैदा हो गया। जब ग्रीन चैनल क्रॉस करवाने के दौरान इसकी पूछताछ और छानबीन की गई तो फिर मामले का खुलासा हुआ। आरोपी हवाई यात्री ने बताया कि वह कोकीन के कैप्सूल को निगलकर आया है। इसके बाद इसे दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां लगभग 10 दिनों तक हुई मेडिकल कार्रवाई के बाद 71 कैप्सूल बरामद किए गए। जिसमें 1041 ग्राम फाइन क्वालिटी का कोकीन निकला। जिसकी कीमत 15 करोड़ 61 लाख रुपए बताई जा रही है। आरोपी नाइजीरियाई नागरिक को गिरफ्तार कर लिया गया है।

द्वारका एएटीएस ने दो भगोड़ा को गिरफ्तार किया

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

द्वारका जिला के एंटी ऑटो थेफ्ट स्क्वाड की पुलिस टीम ने दो भगोड़ा को गिरफ्तार किया है। जो मौका देखकर पुलिस की नजर से बच रहे थे। इनकी पहचान अमित उर्फ संजू उर्फ कुलदीप और मोहित के रूप में हुई है। मोहित पहले से नजफगढ़ और बाबा हरिदास नगर के दो मामलों में शामिल भी रहा है। डीसीपी अंकित सिंह ने बताया कि इंस्पेक्टर कमलेश कुमार की देखरेख में हेड कांस्टेबल राजेश कुमार की टीम इनके बारे में लगातार टेक्निकल सर्विलांस की मदद से पता लगा रही थी। छानबीन के दौरान एक-एक करके इन दोनों भगोड़ा को उनके ठिकाने से पकड़ा गया। इनको द्वारका कोर्ट के द्वारा भगोड़ा घोषित किया गया था। इन लोगों ने पूछताछ में पुलिस को बताया कि वह सजा से बचने के लिए अपना ठिकाना बदलकर छुप रहे थे। आगे की कार्रवाई पुलिस टीम कर रही है।

दिल्ली पुलिस ने रामलीला मैदान में महापंचायत के लिए दे दी है इजाजत : संयुक्त किसान मोर्चा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नई दिल्ली। संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) ने मंगलवार को कहा कि दिल्ली पुलिस ने उसे 14 मार्च को रामलीला मैदान में किसान मजदूर महापंचायत आयोजित करने की अनुमति दे दी है। दिल्ली पुलिस ने कहा कि उसने कड़ी शर्तों के साथ इजाजत दी है। पुलिस उपायुक्त (मध्य) एम हर्षवर्धन ने कहा, हमने सख्त शर्तें लगाई हैं और एसकेएम नेताओं ने एक शपथपत्र पर हस्ताक्षर किए हैं कि वे शर्तों का पालन करेंगे। एसकेएम ने कहा कि महापंचायत में मोदी सरकार की नीतियों के खिलाफ लड़ाई तेज करने का प्रस्ताव पारित किया जाएगा। तीन केंद्रीय कृषि कानूनों के खिलाफ दिल्ली की सीमाओं पर 2020-21 में किसानों के विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व करने वाले किसान संगठनों की अगुवाई करने वाले एसकेएम ने इस बात पर जोर दिया कि यह महापंचायत शांतिपूर्ण रहेगा। एसकेएम ने एक बयान में दावा किया, दिल्ली पुलिस ने 14 मार्च, 2024 को रामलीला मैदान में महापंचायत आयोजित करने और दिल्ली नगर निकाय प्रशासन के सहयोग से पार्किंग स्थान और पानी, शौचालय और एम्बुलेंस जैसी अन्य बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था करने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) जारी किया है। एसकेएम ने किसानों और कार्यकर्ताओं से ह्यकिसान मजदूर महापंचायत में भाग लेने की अपील की और कहा कि इस आयोजन को ह्यराजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण और सफल बनाने के लिए तैयारियां जोरों पर हैं।

रोशनारा रोड पर इलेक्ट्रिक की दुकान में लगी आग

नई दिल्ली। दिल्ली के सब्जी मंडी इलाके के रोशनारा रोड पर इलेक्ट्रिक की दुकान और गोदाम में बुधवार दोपहर अचानक आग लग गई। स्थानीय पुलिस ने आसपास के मकानों को खाली करवाया। क्योंकि आसपास संकरी गलियों से लगे हुए मकान बने हैं। इसके बाद दमकल की चार गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग बुझाने में जुटीं। दमकल विभाग के निदेशक अतुल गर्ग ने मामले की पुष्टि करते हुए बताया कि दोपहर 12 बजे इसकी सूचना कंट्रोल रूम को मिली थी। आग गोदाम और दुकान दोनों में लगी है। जहां पर होम अप्लायंस का सामान भरा हुआ था। दमकल कर्मियों ने करीब तीन घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। फिलहाल कूलिंग कर काम जारी है। वहीं पुलिस आग लगने के कारणों की जांच कर रही है।

कैंसर की नकली दवाईयों मामले में बिहार से एक और गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली पुलिस के क्राइम ब्रांच की टीम ने नकली कैंसर दवा रैकेट में शामिल एक और बड़ी कामयाबी हासिल की है। इस मामले में एक और आरोपी को बिहार के मुजफफरपुर से दबोचा गया है। इसकी पहचान आदित्य कृष्ण के रूप में हुई है। पुलिस ने उसको कोर्ट में पेश करने के बाद आगे की पूछताछ के लिए रिमांड पर लिया है। क्राइम ब्रांच के मुताबिक आरोपी आदित्य कृष्ण इस सिंडिकेट में शामिल नीरज चौहान से दवाईयां खरीदता था। इसके बाद आगे पुणे और एनसीआर में सप्लाई करता था। वह मुजफ्फरपुर में अपनी खुद की केमिस्ट शॉप भी चलाता था। आरोपी ने आईआईटी बीएचयू से बीटेक की पढ़ाई कर रखी है। इसके बाद वह गलत गतिविधियों में शामिल हो गया। कम वक्त में ज्यादा रुपए कमाने की चाहत में आरोपी इस धंधे का हिस्सा बन गया। गौरतलब है क्राइम ब्रांच इस रैकेट में शामिल सात लोगों को पहले ही अरेस्ट कर चुकी है, जिनमें दो दिल्ली के नामी अस्पताल के स्टाफ थे। यह गैंग मोती नगर इलाके में किराए पर लिए गए दो फ्लैट में कैंसर की नकली दवाओं को शिशियों में भरकर उन्हें आगे सप्लाई करते थे। पुलिस इनसे इस गौरख धंधे की चेन में शामिल अन्य लोगों के बारे में जानकारी जुटा रही है। ताजा गिरफ्तारी नीरज चौहान से की गई पूछताछ के आधार पर हुई है।

शरीर, मन और आत्मा के लिए ध्यान-अभ्यास

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

सावन कृपाल रूहानी मिशन की ओर से 12 मार्च, 2024 को दिल्ली टेक्नोलोजिकल यूनिवर्सिटी के प्रज्ञान हॉल में ह्यशरीर, मन और आत्मा के लिए ध्यान-अभ्यासह्न विषय पर आध्यात्मिक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें खासतौर पर इस यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों के अलावा वाईस चांसलर प्रो. प्रतीक शर्मा, रजिस्ट्रार प्रो. मधूसूदन सिंह, प्रसिद्ध इंजीनियर श्री सूरज पाल भाटिया और प्रो. विजय कुमार भी उपस्थित थे। इस आध्यात्मिक कार्यशाला में यह समझाया गया कि आज के आधुनिक युग में लोग ध्यान-अभ्यास के प्रति जागरूक हो रहे हैं क्योंकि वे अपनी आत्मा के साथ-साथ अपने शरीर और मन को भी स्वस्थ रखना चाहते हैं। लेकिन इस भाग-दौड़ भरी जिंदगी, अनियमित जीवन शैली और हमारे बदलते खान-पान ने हमें शारीरिक तौर पर इतना अस्वस्थ कर दिया है कि हमारा शरीर रोगों का घर बन गया है। आज के दौर में हरेक इंसान अपने आपको अस्वस्थ महसूस कर रहा है। इसके अलावा आज का इंसान यह भी सोच रहा है कि यदि उसके पास रुपया-पैसा, जमीन-जायदाद, कारें, बैंक-बैलेंस, और हीरे-जवाहरात होंगे तो उसे जीवन में कभी परेशानी, चिंता व दुःख-तकलीफ नहीं आएगी और वह एक स्वस्थ जीवन व्यतीत कर सकेगा लेकिन आमतौर पर ऐसा होता नहीं है क्योंकि इन सब चीजों से हमारे स्वास्थ्य से कोई लेना-देना ही नहीं है। अब ये सवाल उठता है कि जब हर तरफ तनाव और चिंता का माहौल हो तो हम एक स्वस्थ जीवन कैसे जिये? सदियों से हमारे संतों-महापुरुषों ने हमें स्वस्थ रहने के लिए ध्यान-अभ्यास की विधि बताई है क्योंकि ध्यान-अभ्यास ही एक ऐसी रामबाण दवा है जिससे हम शारीरिक तौर पर ही स्वस्थ नहीं रहते बल्कि यह हमारे मन और आत्मा को भी स्वस्थ रखता है। प्राचीन काल के ऋषि-मुनियों ने भी ध्यान-अभ्यास के महत्त्व का जिक्र अनेक धर्मग्रंथों में किया है। अगर हम अपने जीवन में इसका अभ्यास करेंगे तो हम देखेंगे कि ध्यान-अभ्यास के फायदों की सूची कभी ना खत्म होने वाली है। प्रतिदिन ध्यान-अभ्यास करने से शारीरिक तंदुरुस्ती तो आती ही है, इसके अलावा इसके द्वारा हमें सबसे ज्यादा मानसिक शांति मिलती है, जिससे कि हमारे अंदर तनाव कम होता है और हमारा मन हमेशा शांत रहता है। आजकल कई डॉक्टर्स भी अपने मरीजों को स्वस्थ रहने के लिए ध्यान-अभ्यास करने की सलाह दे रहे हैं क्योंकि जब हमारी आत्मा स्वस्थ होगी तो हमारा मन और शरीर खुद-ब-खुद स्वस्थ होगा। ध्यान-अभ्यास की विधि में हम अपना ध्यान बाहर की दुनिया से हटाकर दो भ्रूमध्य आँखों के बीच ह्यशिवनेत्रह्न पर टिकाते हैं। इसे मेडिटेशन, भजन-सिमरन और ध्यान टिकाना भी कहा गया है। इसका अभ्यास कोई भी कर सकता है चाहे वो छोटा बच्चा हो या बुजुर्ग, चाहे एक धर्म को मानने वाला हो या किसी दूसरे धर्म को, तंदुरुस्त हो या बीमार, चाहे वो एक देश में रहता है या किसी दूसरे देश में। इसे हम अपने घर या ऑफिस में भी कर सकते हैं। ध्यान-अभ्यास के द्वारा हम अपने जीवन के मुख्य उद्देश्य जोकि अपने आपको जानना व पिता-परमेश्वर को पाना है, को भी इसी जीवन में पूरा कर सकते हैं। कार्यशाला के अंत में उपस्थित सभी को ध्यान-अभ्यास की बैठक पर भी बिठाया गया और सावन कृपाल रूहानी मिशन का संक्षिप्त परिचय दिया गया और उन्हें संत राजिन्दर सिंह जी महाराज व संत-मत की तालीम से भी परिचित कराया गया। सावन कृपाल रूहानी मिशन के अध्यक्ष संत राजिन्दर सिंह जी महाराज आज संपूर्ण विश्व में ध्यान-अभ्यास द्वारा प्रेम, एकता व शांति का संदेश प्रसारित कर रहे हैं, जिसके फलस्वरूप उन्हें विभिन्न देशों द्वारा अनेक शांति पुरस्कारों व सम्मानों के साथ-साथ पाँच डॉक्टरेट की उपाधियों से भी सम्मानित किया जा चुका है। सावन कृपाल रूहानी मिशन के संपूर्ण विश्व में लगभग 3200 से अधिक केन्द्र स्थापित हैं तथा मिशन का साहित्य विश्व की 55 से अधिक भाषाओं में प्रकाशित हो चुका है। इसका मुख्यालय विजय नगर, दिल्ली में है तथा अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय नेपरविले, अमेरिका में स्थित है।

मंत्री राजकुमार आनंद ने नरेला विधानसभा क्षेत्र में डॉ. अंबेडकर चौपाल का किया उद्घाटन

- 195 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैली इस दो मंजिला इमारत में हॉल, कमरे और लॉबी एरिया शामिल है

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के एससी/एसटी मंत्री राज कुमार आनंद ने बुधवार को नरेला विधानसभा क्षेत्र के अकबरपुर मजरा गांव में डॉ. बी आर अंबेडकर चौपाल का उद्घाटन कर सामुदायिक विकास की ओर एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया। यह चौपाल एससी/एसटी विकास निधि द्वारा तैयार की गई है, जो केजरीवाल सरकार द्वारा अनुसूचित जाति/जनजाति समुदायों का निरंतर विकास करने की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। उद्घाटन समारोह में क्षेत्रीय विधायक शरद चौहान, पटेल नगर से पूर्व विधायक वीना आनंद, क्षेत्र की जनता समेत अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे। इस उद्घाटन से नरेला विधानसभा क्षेत्र के निवासियों के बीच एकता और प्रगति का नया अध्याय जुड़ेगा। लगभग 195 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैली इस दो मंजिला इमारत में हॉल, कमरे और लॉबी एरिया शामिल है। यह बुनियादी ढांचा, समुदाय संगठन और कल्याण को बढ़ावा देने का उद्देश्य रखता है और सरकार के समावेशी विकास और समर्पण का प्रतिबिम्ब है। उपस्थित लोगों ने केजरीवाल सरकार के विकास कार्यों को तरजीह देने के अपने वादों के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने डॉ. बी आर अंबेडकर चौपाल जैसी पहल के ट्रांसफॉर्मेटिव प्रभाव को स्वीकार किया, जो समाज को सशक्त बनाने और सामाजिक एकता को बढ़ावा देने की ओर एक सकारात्मक कदम साबित होगा। मंत्री राजकुमार आनंद ने कहा कि यह उद्घाटन दिल्ली में एससी/एसटी बस्तियों को सुधारने की योजना में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो केजरीवाल सरकार के समान विकास और सामाजिक न्याय के मॉडल को दर्शाता है।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, गुरुवार, 14 मार्च, 2024

देशहित में नहीं है सीएए : अरविंद केजरीवाल

- अगर भाजपा ने सीएए वापस नहीं लिया तो देश के लोग चुनाव में भाजपा के खिलाफ वोट कर अपना गुस्सा जाहिर करें- केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी ने भाजपा की केंद्र सरकार द्वारा देश में सिटिजनशिप अमेंडमेंट एक्ट (सीएए) लागू करने का सख्त विरोध किया है। आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल का कहना है कि सीएए देश हित में नहीं है। भारत के करोड़ों बच्चों से नौकरियां छीनकर और भारतीयों के घर तोड़ कर पाकिस्तान-बांग्लादेश-अफगानिस्तान से आने वाले करोड़ों लोगों को नौकरियां और घर देने के लिए सीएए लाया गया है। लोग कह रहे हैं कि भाजपा सीएए लाकर देश के साथ ऐसा खिलवाड़ सिर्फ. और सिर्फ. वोट बैंक के लिए कर रही है। जहां-जहां भाजपा का वोट कम हैं, वहां-वहां दूसरे देशों के गरीब लोगों को झुग्गियां बना कर बसाया जाएगा, जिससे भाजपा का पक्का वोट बैंक तैयार हो सके। उन्होंने कहा, देश पर 10 साल से राज कर रही भाजपा ने अगर काम किया होता तो उसको चुनाव से ठीक पहले सीएए लाने की जरूरत नहीं पड़ती। अगर भाजपा सीएए वापस नहीं लेती है तो देश के लोग चुनाव में भाजपा के खिलाफ वोट कर अपना गुस्सा जाहिर करें। भाजपा की केंद्र सरकार महंगाई-बेरोजगारी का समाधान ढूंढने के बजाय सीएए की बात कर रही- केजरीवाल-आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा देश में लागू सीएए को लेकर बुधवार को एक डिजिटल प्रेसवार्ता की। उन्होंने सीएए का विरोध करते हुए कहा कि मंगलवार को केंद्र की भाजपा सरकार ने देश में सीएए लागू करने की अधिसूचना जारी की। देश पर 10 साल राज करने के बाद लोकसभा चुनाव से ठीक पहले इन लोगों को सीएए की बात करनी पड़ रही है। अगर ये 10 साल में कुछ अच्छा काम कर लेते तो आज सीएए की जगह अपने कामों पर देश की जनता से वोट मांग रहे होते। आज देश में सबसे बड़ी समस्या महंगाई और बेरोजगारी की है। देश में इतनी ज्यादा महंगाई हो गई है कि हर किसी को अपना घर चलाना मुश्किल हो गया है। पूरे देश में कमरतोड़ महंगाई हो गई है। उधर हमारे देश के युवा रोजगार के लिए दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। उनके ऊपर डंडे और लाठियां बरसाई जा रही हैं। ऐसे में केंद्र सरकार महंगाई और बेरोजगारी का समाधान ढूंढने के बजाय सीएए की बात कर रही है तो यह बड़े ही दुख की बात है। भारत सरकार का जो पैसा हमारे परिवार और देश के विकास पर खर्च होना चाहिए, वो पैसा पाकिस्तानियों को बसाने पर खर्च किया जाएगा- केजरीवाल आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सीएए के बारे में कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार का कहना है कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के अल्पसंख्यक अगर भारत की नागरिकता लेना चाहें तो उनको भारत की नागरिकता दे दी जाएगी। इसका मतलब है कि इन तीनों देशों से बड़ी संख्या में अल्पसंख्यकों को भारत में लाया जाएगा। उनको भारत में बसाया जाएगा, उनको रोजगार और घर दिए जाएंगे। यह कितनी अजीब बात है कि केंद्र की भाजपा सरकार को हमारे बच्चों को रोजगार नहीं दिए जा रहे हैं और वो पाकिस्तान से अल्पसंख्यकों को लाकर उनके बच्चों को रोजगार देना चाहती हैं। हमारे लोगों के पास तो घर नहीं हैं, भारत के ढेरों लोग बेघर हैं, लेकिन भाजपा के लोग पाकिस्तान से ढेरों लोगों को भारत में बसाकर उनको घर देना चाहते हैं। भाजपा वाले हमारे बच्चों का रोजगार पाकिस्तान से लाए जाने वाले अल्पसंख्यकों के बच्चों को देना चाहते हैं, हमारे हक के घर में पाकिस्तानियों को बसाना चाहते हैं। भारत सरकार का जो पैसा हमारे परिवार और देश के विकास पर खर्च होना चाहिए, वो पैसा भारत में पाकिस्तानियों को बसाने पर खर्च किया जाएगा। भाजपा वाले पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश से आए लाखों लोगों को कहां बसाएंगे?- केजरीवाल आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में करीब ढाई से तीन करोड़ अल्पसंख्यक हैं। यह तीनों देश बहुत ही गरीब देश हैं। जैसे ही भारत के दरवाजे खुलेंगे, इन तीन देशों भारी भीड़ हमारे देश में आ जाएगी।

दिल्ली में आप-कांग्रेस गठबंधन को झटका, दोनों दलों के पूर्व विधायक बीजेपी में शामिल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली में आप-कांग्रेस गठबंधन को लोकसभा चुनाव से पूर्व झटका लगा है। दिल्ली से कांग्रेस के पूर्व विधायक बलवान तंवर, आम आदमी पार्टी के पूर्व विधायक नारायण दत्त शर्मा, यादव महासभा के अध्यक्ष जगदीश यादव, सामाजिक कार्यकर्ता रमेश अंबावता आज भाजपा में शामिल हो गए। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने इन्हें भाजपा की सदस्यता दिलाई। इस दौरान अनुराग ठाकुर ने जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कांग्रेस और आप पर जमकर हमला बोला। उन्होंने केजरीवाल को ठग करार दिया। वहीं उन्होंने कांग्रेस शासन को जमकर कोसा। उन्होंने कहा कि जो काम कांग्रेस ने 70 साल में नहीं किया, उसे मोदी सरकार ने 10 साल में करके दिखा दिया। उन्होंने नागरिकता कानून को लेकर भी अपनी प्रतिक्रिया दी।

इंडियन किसान यूनियन ने एमपी के प्रदेश अध्यक्ष के लिए ज्योति राय के नाम की घोषणा किया

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

न्यू दिल्ली / भोपाल - इंडियन किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मिनिस्टर चौधरी रामकुमार जी ने प्रदेश इकाइयों को भंग करके अभी हाल ही में देश के 20 प्रदेशों के नए सिरे से प्रदेशों के मुख्य पदाधिकारी की घोषणा की है जिसमें मध्य प्रदेश से प्रदेश अध्यक्ष के पद पर ग्राम चटकीय पोस्ट पांडा सारंगपुर एवं प्रदेश महामंत्री के पद पर श्रीमती ज्योति राय अब्बास नगर रोड भोपाल को नामित कर घोषणा की है। प्रदेश महामंत्री ज्योति राय प्रदेश महामंत्री बनने के उपरांत सकलनपुर माता मन्दिर जाते वक्त होशंगाबाद में डॉक्टर विश्व बन्धु जी ने अपने किसान साथियों के साथ हर्ष व्यक्त किया और उनको पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया।

विश्व किडनी दिवस पर विशेष जानकारी

किडनी समस्याओ के लिए लाइफस्टाइल भी जिम्मेदार है : डॉ. अनुजा पोरवाल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नोएडा: क्रॉनिक किडनी डिजीज (सीकेडी) यानी किडनी के पुराने और गंभीर रोगों से आशय है समय के साथ किडनी फंक्शन में खराबी आना। मौजूदा समय में डायबिटीज, हाइपरटेंशन और अनहैल्दी लाइफस्टाइल के अलावा बार-बार पैदा होने वाली पथरी की शिकायत जैसी वजहों से इस बीमारी के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। सीकेडी के कारण कई तरह की गंभीर समस्याएं हो सकती हैं, जैसे कि उच्च रक्तचाप (हाइपरटेंशन), एनीमिया (खून की कमी), हड्डियों का कमजोर होना, नसों को नुकसान और हृदय व खून की नसों संबंधी बीमारियां। चिंता की बात यह है कि जहां एक ओर सीकेडी के मामले तो बढ़ रहे हैं, वहीं इस रोग के बारे में जानकारी की बहुत कमी है। इसके अलावा, मरीजों की देखभाल के लिए उचित हैल्थकेयर सुविधाओं का भी अभाव है। साथ ही, राष्ट्रीय स्तर पर रजिस्ट्री के न होने से भी यह समस्या लगातार बढ़ रही है। इस समस्या का समाधान करने और जागरूकता बढ़ाने के लिए फोर्टिस नोएडा ने एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया, ताकि सीकेडी के बढ़ते मामलों की ओर ध्यान दिलाया जा सके और उन मरीजों के मामलों को सामने लाया जा सके जो अंतिम चरण की किडनी की बीमारी को हराकर आज स्वस्थ जीवन जी रहे हैं। ऐसा पहला मामला 29 वर्षीय महिला का था जो स्टेज 5 की किडनी की गंभीर बीमारी थीं। शुरूआत में उन्हें डायलिसिस पर रखा गया, इसके बाद उनकी तबियत तेजी से बिगड़ने लगी। उनमें उच्च रक्तचाप, बार-बार उल्टी जैसा महसूस होने, भूख न लगने और नींद न आने जैसे लक्षण दिखने लगे। इसके अलावा, उनके फेफड़ों में ट्यूबरकुलोसिस भी हो गया और नियमित तौर पर होने वाले डायलिसिस के साथ-साथ टीबी की दवाइयां भी दी जाने लगीं। हालांकि, डायलिसिस से कुछ हद तक ही खून की सफाई हो पाती है और इसकी वजह से मरीज के खानपान पर भी रोक लगा दी गई जिसके चलते वह और भी कमजोर हो गईं और संक्रमण का खतरा भी बढ़ गया। डायलिसिस की वजह से मरीज के गर्भवती की संभावनाएं भी कमजोर पड़ने लगीं, ऐसे में परिवार शुरू करने के लिए किडनी ट्रांसप्लांट ही एकमात्र उपाय था। इस बारे में मरीज के परिवार से चर्चा की गई और उनके पिता ने अपनी किडनी दान की। ट्रांसप्लांट के बाद उनकी तबियत में सुधार हुआ और अब वह सेहतमंद जीवन जी रही हैं। दूसरे मामले में 38 वर्षीय पुरुष में किडनी संबंधी कुछ सामान्य समस्या हुई जो बाद में बिगड़ने लगा और इसका काफी बुरा असर किडनी पड़ने लगा था। मरीज को काफी तेज बुखार रहने लगा और उनका कैरेटनाइन 8.2 के स्तर पर पहुंच गया। इससे जुड़ी हर तरह की जांच की गई और सीटी चेस्ट करने पर बड़े लिम्फ नॉड्स का पता चला। इसके बाद उनकी ब्रॉन्कोस्कोपी की गई जिससे ट्यूबरकुलोसिस (टीबी) संक्रमण होने की जानकारी मिली। इसके बाद स्टेरॉयड के साथ-साथ उनका एंटी-ट्यूबरकुलर उपचार शुरू किया गया। टीबी का असर सिर्फ उनके फेफड़ों पर ही नहीं पड़ रहा था, बल्कि इस वजह से उनकी किडनियों में जलन भी हो रही थी और उनकी डायबिटिक किडनी बीमारी बढ़ रही थी। उनकी किडनी ने मूल काम करने बंद कर दिए थे और तीन हफ्तों की अवधि स्थिति खराब होती चली गई। अचानक से सामने आए टीबी संक्रमण की वजह से उनकी किडनी की गंभीर बीमारी (सीकेडी) और भी गंभीर हो गई। फोर्टिस में कम डोज वाले स्टेरॉयड के साथ-साथ एंटी-ट्यूबरकुलर थेरेपी की मदद से उनका कैरेटनाइन सामान्य स्तर पर आ गया। तीसरे मामला 15 वर्षीय सेहतमंद बच्चे का था जिसके शरीर में अचानक से सूजन आ गई और मूत्र की मात्रा कम हो गई। फोर्टिस नोएडा में बच्चे की किडनी बायोप्सी कराई गई जिससे गंभीर और घातक बीमारी का पता चला। बच्चे की दोनों किडनियां 90 फीसदी तक खराब हो चुकी थीं। बच्चों के लिए यह बहुत ही असाधारण किस्म की बीमारी थी क्योंकि आम तौर पर ऐसी बीमारी वयस्कों में देखने को मिलती है। यह बीमारी कुछ खास प्रकार के एंटीबॉडीज की वजह से होती है जो सामान्य तौर पर पेट में पायी जाती हैं। सांस और पेट संबंधी कुछ संक्रमणों के कारण ये एंटीबॉडीज अपना रास्ता बदल सकती हैं और किडनी को नुकसान पहुंचाना शुरू कर देती हैं। इम्युनोसप्रेसेंट्स शुरू करने बाद भी बच्चा डायलिसिस पर निर्भर हो गया और इसकी वजह से उसमें अवसाद के लक्षण दिखने शुरू हो गए और उपचार भी प्रभावित होने लगा। सीजर और कोविड-19 से संक्रमित उसकी स्थिति और बिगड़ ने लगी जिसकी वजह से अस्पताल में भर्ती होना और वेंटिलेटर जरूरी हो गया। अस्पताल में चुनौतीपूर्ण 10 दिन बिताने के बाद, बच्चे की स्थिति में सुधार हुआ और उसे डिस्चार्ज कर दिया गया। ट्रांसप्लांट के बारे में काउंसलिंग की गई, लेकिन परिवार इस स्थिति में सर्जरी कराने की उसकी क्षमता को लेकर चिंतित था। आखिरकार उन्होंने सहमति और इस बच्चे की मां ने अपनी किडनी दान दी जिससे मरीज को नया जीवन मिला।

कोहलर इंजन्स ने 8वें ईमा एग्रीमैक इंडिया 2024 में नवीनतम उत्पादों का प्रदर्शन किया

- कोहलर, भारत के उभरते बाजार को पहचानते हुए, ग्राहकों की मांगों को पूरा करने और विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अत्याधुनिक समाधान पेश करने के लिए तैयार है

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नई दिल्ली : कोहलर इंजन्स ने बेंगलुरु में 29 फरवरी से 3 मार्च 2024 तक आयोजित कृषि-मशीनरी और उपकरण पर अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी और सम्मेलन, ईमा एग्रीमैक इंडिया 2024 में अपने उत्पादों की नवीनतम श्रृंखला का प्रदर्शन किया। भारतीय बाजार परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए हैं, विशेष रूप से हाल ही में भारत स्टेज श उत्सर्जन मानकों की शुरूआत के साथ, जो एक महत्वपूर्ण बदलाव और कई समाधानों की आवश्यकता को दशार्ता है। कोहलर, भारत के उभरते बाजार को पहचानते हुए, ग्राहकों की मांगों को पूरा करने और विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अत्याधुनिक समाधान पेश करने के लिए तैयार है। कोहलर बूथ पर प्रदर्शित केडीआई 1903 टीसीआर, तीन ट्रेम स्टेज-वी प्रमाणित केडीआई मॉडलों में से एक, 2026 में प्रभावी होने वाला था। 19 - 37 किलोवाट रेंज में केडीआई-टीसी 1903 के साथ, और केडीआई-टीसीआर 2504 फैला हुआ था। 37-56 किलोवाट रेंज, यह इंजन परिवार ओईएम के लिए एकीकरण प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करता है, विभिन्न अनुप्रयोगों और परिचालन स्थितियों में अनुपालन और अनुकूलनशीलता सुनिश्चित करता है। कोहलर ने औरंगाबाद संयंत्र में उत्पादित अपने नवीनतम नवाचारों में से एक का प्रदर्शन भी कियाः केएसडी 1403 टीसी। बाजार और ग्राहक-उन्मुख दृष्टिकोण के साथ विकसित, के एसडी इंजन विस्तारित सेवा अंतराल, रखरखाव में आसानी प्रदान करता है, जिसके परिणामस्वरूप स्वामित्व की कुल लागत कम होती है, उन्नत प्रदर्शन और पूरे जीवनकाल में उपयोग में आसानी होती है। केडी 441, केडी 15 सिंगल-सिलेंडर एयर-कूल्ड इंजन श्रृंखला का हिस्सा, जो विश्वसनीयता और दक्षता के लिए जाना जाता है, का भी प्रदर्शन किया गया। जेनसेट, कॉम्पैक्ट रोलर्स, कृषि, समुद्री और निर्माण जैसे विभिन्न अनुप्रयोगों में बहुमुखी होने के लिए डिजाइन किया गया, KD441 CPCB4+ मानकों को पूरा करते हुए भारत के लिए तैयार किया गया है। कोहलर इंजन के अध्यक्ष विन्सेन्जो पेरोन ने ईआईएमए एग्रीमैक के उद्घाटन दिवस पर आयोजित ह्लसतत भविष्य के लिए नवाचार के माध्यम से कृषि मशीनीकरण में बदलावह्व सम्मेलन में एक पैनलिस्ट के रूप में भाग लिया। बैठक में देश में कृषि के भविष्य में नवीन मशीनरी की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया गया। विन्सेन्जो पेरोन ने अपने भाषण में इंजन विकास पर प्रकाश डाला एक प्रमुख पहलू थाः नया विनियमन जो परिवर्तन लाने जा रहा है उसे अभी भी नाटकीय रूप से कम करके आंका गया है। ये नए कड़े उत्सर्जन नियम किसानों को ट्रैक्टरों का उपयोग करने की अनुमति देंगे जो 90% कम प्रदूषण करते हैं एक पुराना ट्रैक्टर ऐसा करता है। इसलिए, भारत वी की शुरूआत अधिक टिकाऊ पर्यावरण की दिशा में सुधार का एक बड़ा कदम है। पेरोन ने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला, कोहलर इंजन में, हम सक्रिय रूप से वैकल्पिक ईंधन पर काम कर रहे हैं। हम मूल रूप से मानते हैं कि आंतरिक दहन इंजन तकनीक बहुत लंबे समय तक रहने वाली है, लेकिन हम इसके माध्यम से अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र के डीकाबोर्नाइजेशन में योगदान देंगे।ह्व एचवीओ या हाइड्रोजन जैसे वैकल्पिक ईंधन पर चलने में सक्षम इंजनों का विकास। कोहलर इंजन के बारे में कोहलर एक सदी से भी अधिक समय से इंजन का निर्माण कर रहा है और दुनिया भर में अंतिम उपयोगकताओं के जीवन में आसानी और सुविधा लाने के लिए अपनी स्थापना के बाद से अपने उत्पाद पोर्टफोलियो को बढ़ाना जारी रखा है। कंपनी 140 एचपी पावर तक के डीजल, पेट्रोल और गैस इंजनों की एक व्यापक रेंज पेश करती है - जिसे उद्योग के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों (निर्माण, अर्थ-मूविंग, कृषि, जनरेटर और बागवानी) में मशीन और उपकरण निमार्ताओं द्वारा विश्व स्तर पर अपनाया जाता है। अधिक जानकारी के लिए कृपया kohlerengines.com पर जाएं।

होम अप्लायंस की दुकान और गोदाम में लगी भीषण आग

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नॉर्थ दिल्ली के सब्जी मंडी इलाके के रोशनारा रोड पर इलेक्ट्रिक की दुकान और गोदाम में अचानक आग लगने से हड़कम मच गया। मौके पर स्थानीय पुलिस ने पहुंचकर आसपास के मकानों को खाली करवाया । क्योंकि आस पास संकरी गलियों से लगे हुए मकान बने हैं। इसके बाद दमकल की चार गाड़ियां मौके पर पहुंच गई है। आग बुझाने का काम चल रहा है। फायर डायरेक्टर अतुल गर्ग ने मामले की पुष्टि करते हुए बताया कि दिन में लगभग 12:00 बजे इसकी सूचना कंट्रोल रूम को मिली थी। आग गोदाम और दुकान दोनों में लगी है। जहां पर होम अप्लायंस का सामान भरा हुआ था। साढ़े तीन घंटे बीत चुके हैं, लेकिन आग पर पूरी तरह काबू नहीं पाया गया है। लगभग 20 फायर कर्मियों की टीम आग बुझाने में लगी हुई है।

लेडी से पर्स लूटा, पुलिस को देखकर सरपट भागने लगा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

सुभाष नगर पुलिस चौकी की टीम ने पेट्रोलिंग के दौरान एक शातिर बदमाश को गिरफ्तार किया है। जो हथियार लेकर वारदात करने निकला था और लूट की कोशिश कर रहा था। जिसकी पहचान रमेश नगर के रहने वाले रवि के रूप में हुई है। डीसीपी वेस्ट विचित्र वीर ने बताया कि उसके पास से कंट्री मेड पिस्टल, दो जिंदा कारतूस बरामद करके स्कूटी को भी जप्त किया गया है। इसके खिलाफ राजौरी गार्डन थाना में आर्म्स एक्ट का मामला भी दर्ज किया गया। एसीपी सुमा मददा की देखरेख में एसएचओ सुमन कुमार, चौकी इंचार्ज धनंजय गुप्ता की पुलिस टीम पेट्रोलिंग कर रही थी।

द्वारका में हिट एंड रन का मामला

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

द्वारका सबसिटी में रफ्तार का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा है। ओवर स्पीड के कारण लोगों की जान आफत में फंस रही है। ऐसा ही एक ताजा मामला आज सुबह द्वारका सेक्टर 17 में थाना के पास सामने आया है। जिसमें अज्ञात काले रंग की गाड़ी ने एक कार को ऐसी टक्कर मारी कि वह पलटकर चारों खाने चित होकर डिवाइडर पर पहुंच गया। उस वक्त उस कार में पिता और पुत्री सवार थे। वह दोनों स्कूल के लिए घर से निकले थे, इसी दौरान अचानक यह हादसा हुआ। पीड़ित कार सवार नीरज ने बताया की बेटी को छोड़ने के लिए वह स्कूल जा रहे थे। जैसे ही द्वारका नॉर्थ थाना के पास पहुंचे तो एक काले रंग की बड़ी गाड़ी ने उनकी कार को अचानक जोर का टक्कर मार दिया। वह कुछ समझ नहीं पाए और टक्कर इतनी जोरदार थी कि उनकी गाड़ी उछलकर डिवाइडर से टकराते हुए चारों खाने चित हो गई। ऊपर वाले का शुक्र था, की दोनों बाल-बाल बच गए, हल्की चोट लगी। मौके पर मौजूद लोगों ने बताया कि इस मामले की सूचना मिलती ही मौके पर फायर ब्रिगेड की टीम तो मदद के लिए पहुंच गई। लेकिन 100 कदम की दूरी पर थाना होने के बावजूद कोई भी पुलिसकर्मी काफी देर तक नहीं पहुंचा। अब इस मामले में पुलिस सीसीटीवी फुटेज की मदद से फरार गाड़ी का पता लगाने का प्रयास करेगी।

विज्ञान भवन दिल्ली में वर्ष का सर्वश्रेष्ठ एजुकेशन इंस्टीट्यूशन अवार्ड 2024 से धर्मेंद्र कौशिक को नवाजा गया

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नई दिल्ली विज्ञान भवन में एशिया के सबसे बड़ा सिक्स सिग्मा के लीडरशिप समिट और सिक्स सिग्मा एक्सीलेंस अवार्डस का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश से 1500 से अधिक प्रतिनिधियों ने भागीदारी की कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वायु सेना चीफ ऑफ स्टाफ श्री सी आर चौधरी रहें, आचार्य सतीश सदगुरुदेव नाथ महाराज के हाथों वर्ष का सर्वश्रेष्ठ एजुकेशन इंस्टीट्यूशन सम्मान 2024 से धर्मेंद्र कौशिक, निर्देशक - जी.ए.वी. ग्रुप ऑफ स्कूल, को सम्मानित किया गया। उनको विद्यालय में गरीब विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा तथा आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों का सहयोग करते रहना शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए दिया गया। अपनी सफलता को आगे बढ़ाते हुए गुरुग्राम में तीन अन्य शिक्षण संस्थानों को सुचारू रूप से चला रहे हैं, तथा आने वाले नए सत्र में एक और शिक्षण संस्थान प्रारंभ कर रहे है और उनके सेवा रूपी कार्य को देखते हुए इस अवार्ड के लिए चुना और 10 मार्च को विज्ञान भवन दिल्ली में एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया। आचार्य सतीश सदगुरुदेव नाथ ने काम की सराहना की व कहा आप जैसा कार्य सभी शैक्षणिक संस्था को भी करना चाहिए। पुरस्कार को पाकर धर्मेंद्र कुमार ने सिक्स सिग्मा संस्था, प्रबंध निदेशक डॉक्टर प्रदीप भारद्वाज व आए अतिथि गणमान्य और अपने साथी सहयोगी का बहुत धन्यवाद किया और कहा कि आज मैं जो भी हूं वह सब आप सब जनता जनार्दन के आशीर्वाद से हूं।

सीएए कानून पर देश को गुमराह करने वाली भाजपा से आप नेता आतिशी के तीखे सवाल

- जब देश में बेरोजगारी चरम पर है, युवाओं की बेरोजगारी का दर 25% है, ऐसे में जो थोड़ी बहुत नौकरियाँ देश में है, वो भाजपा पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान के लोगों की क्यों देना चाहती है?

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

सीएए कानून पर पूरे देश को गुमराह करने वाली भाजपा से वरिष्ठ आप नेता व दिल्ली कैबिनेट मंत्री आतिशी ने प्रेस-कॉन्फ्रेंस के जरिए तीखे सवाल किए। उन्होंने सवाल पूछते हुए कहा कि, सीएए के जरिए 2 करोड़ लोगों को देश में लाकर भाजपा भारत के युवाओं की नौकरियाँ पाकिस्तानियों को क्यों देना चाहती है? जब देश में बेरोजगारी चरम पर है, युवाओं की बेरोजगारी का दर 25% है, ऐसे में जो थोड़ी बहुत नौकरियाँ देश में है, वो भाजपा पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान के लोगों की क्यों देना चाहती है? क्या अगर इन शरणार्थियों को नौकरियाँ नहीं दी तो इनकी गरीबी की हालत बनी रहेगी ऐसे में क्या ये सड़कों पर गुंडागर्दी, चोरी-चकारी नहीं करेंगे? क्या लॉ एंड ऑडर की परिस्थिति नहीं बिगड़ेगी? उन्होंने सवाल किया कि, सीएए के जरिए जब 2 करोड़ से ज्यादा लोग भारत में आयेंगे तो भाजपा उन्हें रहने के लिए घर कहा देगी?* अगर इन्हें घर नहीं दिया तो क्या ये हमारे गली-मोहल्लों में झुग्गियाँ बसाकर नहीं रहेंगे? जब भाजपा के पास इन लोगों को देने के लिए घर नहीं है, नौकरियाँ नहीं है, कुछ इंतजाम नहीं है तो उसके बाबजूद भी 1.5-2 करोड़ गरीब लोगों को पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान से क्यों लाना चाहते है? आतिशी ने कहा कि, भाजपा शासित केंद्र सरकार को ऐसी क्या आन पड़ी इन 2 करोड़ लोगों को भारत लाना चाहती है? क्या इसके पीछे का कारण इनका वोट-बैंक है? उन्होंने कहा कि, पिछले कुछ सालों में 11 लाख लोग जिनमें बिजनेस मैन, प्रोफेशनल्स और हाई-नेटवर्थ लोग शामिल है, भारत की नागरिकता छोड़ दूसरे देशों के चले गये है; भाजपा उन्हें वापिस लाने का प्रयास क्यों नहीं कर रही है ?मोदी सरकार को भारत के युवाओं की चिंता नहीं है, उनकी जाती हुई नौकरियों की चिंता नहीं है, देश के लोगों की सेफ़्टी-सिक्योरिटी की चिंता नहीं है, भाजपा को सिर्फ. अपने वोट बैंक की चिंता है। भाजपा शासित केंद्र सरकार पहले अपने देश की समस्याएँ सुलझाए; देश से गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी दूर करें और उसके बाद किसी और को लाने की सोचे। आप नेता आतिशी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि, भाजपा नेता रविशंकर प्रसाद जी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि अरविंद केजरीवाल जी ने विचित्र वक्तव्य दिया है, उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल जी का तर्क गलत है। लेकिन पूरी प्रेस कॉन्फ्रेंस में इस सवाल का जबाव नहीं दिया कि, वो भारत के युवाओं की नौकरियाँ पाकिस्तानियों को क्यों देना चाहते है। आतिशी ने कहा कि, रविशंकर प्रसाद जी ने प्रेस-कॉन्फ्रेंस में बहुत बड़ी-बड़ी बातें की लेकिन इस सवाल का जबाव नहीं दिया कि जब हमारे देश में बेरोजगारी चरम पर है, युवाओं की बेरोजगारी का दर 25% है, फ्रेश ग्रेजुएट्स की बेरोजगारी का दर 42% है। ऐसे में जो थोड़ी बहुत नौकरियाँ देश में है, वो ये पाकिस्तान, बांग्लादेश के लोगों की क्यों देना चाहते है? उन्होंने कहा कि, भाजपा जबाव दे कि, क्या सीएए का कानून आने से भारत में पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान से गरीब लोग नहीं आयेंगे? अगर इन देशों से 1.5-2 करोड़ लोग भी भारत में आ जाते है तो भाजपा इन्हें कहा रखेगी?

यूएसए में लेविस लाइफ सेटल होने का सपना टूटा

- डंकी के जरिए यूएसए भेजने की 05 बार कोशिश हुई फेल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

आपने डंकी फिल्म तो देखी ही होगी,,कि लोगों को किस तरीके से अलग-अलग रास्तों के जरिए विदेश भेजने की कोशिश की जाती है। लोग कई देश में अपना करियर चुनने के लिए और अपने जिंदगी को लेविस लाइफ में तब्दील करने के लिए लगातार प्रयास करते हैं। एक ऐसा ही मामला का खुलासा आईजीआई एयरपोर्ट पुलिस ने किया है।जिसमें पंजाब के रहने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया। जिसकी पहचान सुल्तान सिंह के रूप में हुई है। वह डंकी स्टाइल में एक शख्स को वरअ तक पहुंचाने के लिए लगातार पांच बार प्रयास किया था। लेकिन पांचो बार वह कामयाब नहीं हो सका और छठी बार में गिरफ्तार हो गया। फिर उसकी निशानदेही पर पुलिस ने लगातार कई जगह छापे मारकर पंजाब से आरोपी एजेंट सुल्तान सिंह को भी गिरफ्तार कर लिया। डीसीपी एयरपोर्ट उषा रंगरानी ने बताया कि इसी महीने 8 मार्च को पंजाब के रहने वाले गुरप्रीत सिंह नाम के एक शख्स को कजाकिस्तान से वापस आईजीआई एयरपोर्ट पर भेजा गया था। यहां पर जब छानबीन की गई तो पता चला कि उसका डॉक्यूमेंट फर्जी है। उससे पूछताछ हुई तो उसने फिर पूरे मामले का खुलासा किया। बताया कि उसे वरअ में सेटल होना था, इसके लिए उसने अपने गांव के ही सुल्तान सिंह नाम के शख्स से मुलाकात की। उससे 50 लाख रुपए में बातें हुई। गुरप्रीत ने 10 लाख रुपए सुलतान सिंह को एडवांस में दिया। आरोपी एजेंट सुल्तान सिंह ने उसे डंकी के जरिए अलग-अलग कंट्री के द्वारा उसे वरअ तक भेजने की कोशिश की लेकिन वह हर बार नाकामयाब रहा।

उम्र 45, मामले 44, शराब की पेटी हुई 43 बरामद

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

44 मामलों में शामिल एक शातिर शराब तस्कर को खयाला थाना की पुलिस टीम ने गिरफ्तार किया है। उसके पास से 43 शराब की पेटियां बरामद की गई है। जिसमें 2150 क्वार्टर शराब के भरे हुए थे। डीसीपी विचित्र वीर ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी की पहचान मोनू उर्फ सिकंदर के रूप में हुई है। यह जेजे कॉलोनी खयाला का रहने वाला है। दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में कई अलग अलग मामलों में यह शामिल रहा है। इसके बारे में हेड कांस्टेबल मुकेश और अजीत को सूचना मिली थी। जिसके आधार पर एसीपी सुरेंद्र सिंह राठी की देखरेख में एसएचओ विनोद अहलावत की टीम ने छापा मारकर इसे दबोचा। फिर 43 पेटी अवैध शराब की बरामद की गई।

डेस्टिनेशन उत्तराखण्ड

प्रगति की ओर अग्रसर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उत्तराखण्ड विशेषकर बद्रीनाथ और केदारनाथ के साथ गहरा संबंध है और उनकी यात्राओं और इन प्रमुख तीर्थ स्थलों के विकासकार्यों के लिए किए गए दूरदर्शी प्रयासों में साफ देखा जा सकता है

बद्रीनाथ और केदारनाथ से मिल रहा आध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ावा

"माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में हम अपने राज्य के समग्र विकास, यहां की प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और अपार संभावनाओं को निखारने के लिए प्रतिबद्ध हैं। राज्य की प्रगतिशील नीतियों और रणनीतिक पहल के माध्यम से हम आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, बुनियादी ढांचे में सुधार करने और नागरिकों के लिए जीवन की गुणवत्ता को बेहतर की दिशा में अग्रसर हैं। हमारा लक्ष्य उत्तराखण्ड को प्रगति का एक मॉडल बनाना है जहां परंपरा और नवीनता का संगम होता है और जहां हर व्यक्ति राज्य की समृद्धि और कल्याण के लिए कार्य कर विकास में योगदान देता है।

पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

सुरम्य उत्तरी राज्य उत्तराखण्ड अपने आध्यात्मिक महत्व और प्राकृतिक सुंदरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहां भक्तों और आगंतुकों को समान रूप से आकर्षित करने वाले विभिन्न स्थलों में से एक बद्रीनाथ और केदारनाथ है। यहां श्रद्धालु व भक्त शांति का अनुभव करने के लिए आते हैं। इन पवित्र स्थानों को पुनर्स्थापित करने और आध्यात्मिक पर्यटन के लिए यहां की संभावनाओं का सामने लाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विशेष रुचि दिखाई हैं। उनके दिशा-निर्देशन व मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में पूरी समर्पण और प्रतिबद्धता से उत्तराखण्ड में परिवर्तनकारी कार्यों पर विशेष बल दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उत्तराखण्ड के बद्रीनाथ और केदारनाथ के साथ गहरा संबंध को हम सबने देखा है। यह बात उनकी यात्राओं और इन प्रतिष्ठित तीर्थ स्थलों के उत्थान के लिए दूरदर्शी प्रयासों से स्पष्ट झलकता है। बाबा केदार के प्रति उनकी श्रद्धा, केदारनाथ धाम की समय-समय पर यात्राओं के माध्यम से प्रदर्शित होती है। यह इस क्षेत्र की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत के प्रति उनके समर्पण को भी उजागर करती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की महात्वकांक्षा बद्रीनाथ और केदारनाथ धाम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देकर उत्तराखंड को विश्व पटल पर लाने की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस दृष्टिकोण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू केदारनाथ धाम का पुनर्निर्माण है, जो प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल की शुरुआत से ही उनके दिल के करीब रहा है। 2013 की विनाशकारी बाढ़ के बाद केदारनाथ के पुनरुद्धार की आवश्यकता पर उन्होंने जोर दिया।

ऐसे में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यह सुनिश्चित किया कि पुनर्निर्माण ऐसा होना चाहिए, जिससे धाम की प्रतिभा और दिव्यता को पूर्ण रूप में प्रदर्शित किया जा सके। इसमें आदि गुरु शंकराचार्य की प्रतिमा के निर्माण से लेकर प्रगति का प्रत्यक्ष अवलोकन करने तक, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की रणनीति केदारनाथ की पवित्रता बनाए रखने के प्रति उनके समर्पण को दर्शाती है।

इसके अलावा, उत्तराखण्ड के आध्यात्मिक बुनियादी ढांचे के समग्र विकास को धरातल पर उतारने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के रणनीतिक प्रयास अब केदारनाथ और उसके आगे के क्षेत्रों तक फैल चुके हैं। काशी विश्वनाथ कॉरिडोर की तर्ज पर बद्रीनाथ धाम मास्टर प्लान जैसी परियोजनाएं, बद्रीनाथ को एक स्मार्ट आध्यात्मिक पहाड़ी शहर में बदलने के प्रयास को दर्शाती हैं। दिल्ली-देहरादून आर्थिक कॉरिडोर और ऋषिकेश कर्णप्रयाग रेल परियोजना भी इन पवित्र स्थलों तक कनेक्टिविटी और पहुंच में सुधार प्रधानमंत्री के समर्पण को उजागर

उत्तराखण्ड के आध्यात्मिक महत्व को बनाए रखने के साथ केदारनाथ में पुनर्निर्माण कार्यों ने उसके पूर्व गौरव को बढ़ा दिया है, जो दुनिया भर से तीर्थ यात्रियों को राज्य की ओर आकर्षित कर रहा है

करती है। इन प्रयासों के चलते उत्तराखण्ड में आध्यात्मिक पर्यटन और तीर्थयात्रियों की संख्या में लगातार वृद्धि देखी जा रही है। ऑल वेदर रोड परियोजना, जिसे चारधाम सड़क परियोजना के रूप में भी जाना जाता है, यह उत्तराखण्ड के चार धामों को जोड़कर भक्तों और आगंतुकों के लिए निर्बाध यात्रा को संभव बनाने वाली एक महत्वपूर्ण योजना है। इसी तरह से ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना, अपनी उद्यमशीलता और सरल तकनीक के साथ केदारनाथ और आस-पास के क्षेत्रों तक पहुंच में सुधार करने के लिए संकल्पित है। केदारनाथ और बद्रीनाथ का महत्व जितना आध्यात्मिक है, उतना ही यह अपनी प्राकृतिक सौन्यता के लिए भी विश्व स्तर पर श्रद्धालुओं और प्रकृति प्रेमियों को आकर्षित करता है। हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों के बीच स्थित केदारनाथ 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक के रूप में प्रसिद्ध है। यह प्रतिष्ठित चारधाम यात्रा का अहम पड़ाव भी है। यहां के आध्यात्मिक महत्व को बनाए रखने के साथ जुड़े पुनर्निर्माण उपायों ने केदारनाथ को उसका पुराना गौरव पाने में मदद की है, जिससे दुनिया भर से तीर्थयात्री आकर्षित होकर यहां आ रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा हाल ही में महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के उद्घाटन से केदारनाथ में नए विकास पर बल दिया जा रहा है। आदि गुरू शंकराचार्य की प्रतिमा के अनावरण से लेकर सरस्वती रिटेनिंग वॉल और तीर्थ पुरोहित घरों जैसी आवश्यक परियोजनाओं का उद्घाटन करने तक, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यात्रा उत्तराखण्ड की आध्यात्मिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए समर्पण का प्रतीक है। केदारनाथ के साथ उनका भावनात्मक जुड़ाव, उनकी सच्ची बातें श्रद्धालुओं बीच गूंजती हैं और इन धार्मिक स्थानों के महत्व को विस्तार देती हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा ऐसे उद्यमों का परिवर्तनकारी प्रभाव बुनियादी ढांचे के विकास से आगे बढ़ता है, जिससे उत्तराखण्ड में समावेशी विकास और पर्यटन को बल मिलता है। नीतिगत प्रोत्साहन और क्षेत्रीय प्राथमिकता, विशेष रूप से पर्यटन और नवीकरणीय ऊर्जा पर उनके फोकस ने उत्तराखण्ड को निरंतर विकास करने वाले अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। बुनियादी ढांचे के विस्तार में राज्य की प्रगति और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के प्रति उनके समर्पण ने न केवल अर्थव्यवस्था को बल दिया है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी प्रतिभा का प्रदर्शन भी किया है। बद्रीनाथ और केदारनाथ में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अटूट आस्था ने उत्तराखण्ड में आध्यात्मिक पर्यटन के पुनरुद्धार को प्रेरित किया है। दूरदर्शी प्रयासों और नए विकास कार्यों के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इन धार्मिक स्थानों को पुनर्स्थापित कर समृद्धि और विस्तार के एक नए युग की शुरुआत भी की है। प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं हाल के वर्षों में हासिल की गई अविश्वसनीय उपलब्धियों के लिए उत्तराखण्ड सरकार को हार्दिक बधाई देता हूं। यह सराहनीय प्रगति पर्यटन और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे उन्नत क्षेत्रों पर ध्यान देने के साथ रणनीतिक दृष्टिकोण का उदाहरण भी प्रस्तुत करती है। बुनियादी ढांचे के विकास में सुधार, सतत विकास के लिए बेहतर मानक स्थापित होते देखकर मुझे खुशी होती है। अपने प्राकृतिक संसाधनों और पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में उत्तराखण्ड की रणनीति न केवल इसकी अर्थव्यवस्था को मजबूत करती है, बल्कि वैश्विक स्तर पर क्षमता को भी प्रदर्शित करती है। मैं समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए राज्य के समर्पण की प्रशंसा करता हूं और आने वाले वर्षों में लगातार प्रगति की भी आशा करता हूँ।

"मैं पिछले कुछ वर्षों में हुई उल्लेखनीय प्रगति के लिए उत्तराखण्ड सरकार को बधाई देता हूं। ऐसा निरंतर नीतिगत प्रोत्साहन, पर्यटन और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान देने के चलते संभव हुआ है। इसके साथ ही, राज्य ने बुनियादी ढांचे के विकास में महत्वपूर्ण प्रगति की है और सतत विकास के लिए नए मानक स्थापित किए हैं। प्राकृतिक संसाधनों के साथ पर्यटन को बढ़ावा देने की उत्तराखण्ड की प्रतिबद्धता ने न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान किया है, बल्कि वैश्विक मंच पर क्षमता को भी प्रदर्शित किया है। मैं समावेशी विकास के प्रति राज्य के समर्पण की सराहना करता हूं और आने वाले वर्षों में निरंतर सफलता की आशा करता हूं।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

वेडिंग डेस्टिनेशन के तौर पर उभर रहा उत्तराखण्ड

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी मार्ग दर्शन में उत्तराखण्ड दुनिया के सबसे बेहतरीन वेडिंग डेस्टिनेशन में से एक बनकर उभर रहा है

देश के उत्तरी क्षेत्र में हिमालय की प्राकृतिक सुंदरता के बीच स्थित उत्तराखण्ड अपने आध्यात्मिक महत्व, सुंदर पहाड़ियों और समृद्ध सांस्कृति क विरासत के लिए जाना जाता है। इसे देवताओं की भूमि या 'देवभूमि' के रूप में भी जाना जाता है। यही कारण है कि उत्तराखण्ड श्रृद्धालुओं के लिए सबसे प्रतिष्ठित तीर्थ स्थलों में से एक के रूप में जाना जाता है। हालांकि, राज्य ने पिछले कुछ वर्षों में बड़े बदलाव देखे हैं, जो इसे एक आध्यात्मिक गंतव्य के तौर पर विकसित कर रहे हैं। इसके साथ ही हाल के वर्षों में डेस्टिनेशन वेडिंग काफी ट्रेंड में रही है और इस दिशा में भी उत्तराखण्ड किसी से पीछे नहीं है। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि उत्तराखण्ड डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए सबसे तेजी से उभरते राज्यों में एक बनने की राह पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। उत्तराखण्ड को सर्वश्रेष्ठ विवाह स्थल बनाने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विचार राज्य की असीम संभावनाओं में उनके विश्वास को दर्शाता है। दिसंबर 2023 में देहरादून में उत्तराखण्ड ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने युवाओं को 'वेड इन इंडिया' अभियान शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया था। इस दौरान उन्होंने संपन्न परिवारों से अपने विवाह के लिए उत्तराखण्ड को डेस्टिनेशन के रूप में चुनने का आह्वान किया था। अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक विरासत के चलते उत्तराखण्ड एक आदर्श विवाह स्थल के रूप में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। नैनीताल की शांत झील से लेकर औली की बर्फ से ढकी पहाड़ियों तक राज्य का हर भू-भाग करिश्माई आकर्षण का अनुभव कराता है। जो लोग अपने विवाह को अविस्मणीय अनुभव देना चाहते हैं, वे अपने वैवाहिक समारोहों की मेजबानी टिहरी की शांत झील, मसूरी की खूबसूरत पहाड़ियों या हरिद्वार के प्राचीन मंदिरों में कर सकते हैं। जो बातें उत्तराखण्ड को शादियों के लिए एक अद्वितीय गंतव्य बनाती है,

वह न केवल इसके आश्चर्यजनक स्थल हैं, बल्कि इसकी समृद्ध विरासत और जीवंत संस्कृति भी हैं। राज्य में आयोजित होने वाली शादियां केवल एक समारोह से कहीं बढ़कर होते हैं। ऋषिकेश के आध्यात्मिक वातावरण से लेकर त्रियुगीनारायण की पवित्र ज्योति तक हर स्थान राज्य की सांस्कृतिक छवि की एक अनूठी झलक देखने को मिलती है। साथ ही, प्रधानमंत्री मोदी की धारणा एकजुटता के उत्सव से कहीं बढ़कर है। वह राज्य में डेस्टिनेशन वेडिंग को प्रोत्साहित करके स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने और उत्तराखण्ड के लोगों के जीवन का स्तर बेहतर बनाने के लिए तत्पर हैं। इससे आगंतुकों की आमद और निवेश की संभावनाओं से रोजगार पैदा करने, बुनियादी ढांचे को समृद्ध बनाने और समग्र विकास को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

डेस्टिनेशन वेडिंग के आयोजन के लिए उत्तराखण्ड में त्रियुगीनारायण, ऋषिकेश, जोशीमठ, शांति कुंज हरिद्वार, स्वर्ण मंदिर, चकराता, हर्षिल, देहरादून, कनाताल, मसूरी, औली, टिहरी झील, रामनगर, नरेंद्रनगर, ब्रह्मताल, नैनीताल, अल्मोडा, रानीखेत, भीमताल, रामगढ़, मुक्तेश्वर, रानीगढ़, नौकुचियाताल, और घोड़ा खाल आदि प्रसिद्ध स्थलों में शामिल हैं।

डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए उत्तराखण्ड को सर्वोच प्राथमिकता देने का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का दृष्टिकोण उन सभी चीजों को बढ़ावा देता है, जो इस राज्य को उन्नत बनाती हैं। उत्तराखण्ड पर्यटन के क्षेत्र में एक वैश्विक राज्य बनने के लिए पूरी तरह तैयार है। यहां पर्यटक, रोमांच और उद्यम राज्य की ओर आकर्षित हो रहे हैं क्येंकि उत्तराखण्ड सर्वोत्तम योगाभ्यास, रोमांचक खेल और सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करता है।

धार्मिक वैभव को पुनर्जागृत करता मानसखंड मंदिर माला मिशन

'मानसखंड मंदिर माला मिशन' के हृदय स्थल के रूप में यहां के 48 पौराणिक मंदिरों को पुनर्जीवित और पुनर्स्थापित किया जा रहा है। इसमें कुमाऊं के विभिन्न जिलों में फैले 16 पौराणिक मंदिरों पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है।

उत्तराखण्ड कई प्राचीन मंदिरों और पवित्र स्थलों की भूमि है। यही कारण है कि यह देवभूमि के रूप में विश्वविख्यात है। ये मंदिर कुमाऊं क्षेत्र में फैले हुए हैं और लंबे समय से आस्था और भक्ति के प्रतीक के रूप में लोगों के दिलों में बसे हैं। यहां दुनिया के विभिन्न हिस्सों से श्रद्धालुओं का आना लगा रहता है। उत्तराखण्ड की वादियों में स्थित ऐसे मंदिरों तक भक्तों और श्रद्धालुओं की पहुंच बनाने को लेकर धामी सरकार विशेष प्रयास कर रही है। प्रदेश के ऐसे कई धार्मिक स्थलों, जिनके बारे में भक्तों को ज्ञात नहीं है, उनकी भव्यता से साक्षात्कार कराने के लिए कनेक्टिविटी को बेहतर करने की दिशा में काम किए जा रहे हैं। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने इन मंदिरों के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व को समझते हैं और मंदिरों के वास्तुशिल्प चमत्कारों को पुनर्स्थापित और पुनर्जीवित करने के लिए 'मानसखंड मंदिर माला मिशन' के तहत एक दूरदर्शी पहल शुरू की है। इस प्रयास का मूल 48 पौराणिक मंदिरों को पुनर्जीवित और पुनर्स्थापित करना है, जिसमें कुमाऊं क्षेत्र के विभिन्न जिलों में फैले 16 मंदिरों पर विशेष जोर दिया गया है। सैकड़ों वर्षों से आस्था का केंद्र रहे ये मंदिर अब बड़े परिवर्तन का साक्षी बनने को तैयार हैं, उनकी पहुंच और भव्यता में सुधार के लिए बुनियादी ढांचे में विकास की योजना बनाई गई है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का विजन केवल भौतिक नवीनीकरण तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें एक समग्र रणनीति भी शामिल है, जिसमें उन्नत सड़क कनेक्टिविटी, आतिथ्य और आवास सेवाएं और संरक्षण जैसी बातें शामिल हैं।

गिरिजा देवी मंदिर

मानसखंड मंदिर माला मिशन के प्रतिष्ठित स्थलों तक सड़क कनेक्टिविटी में सुधार करने के लिए कार्य किया जा रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी कहते हैं कि मानसखंड की परिकल्पना के तहत आने वाले जितने भी धार्मिक स्थल और पर्यटक स्थल हैं, उन्हें अच्छी कनेक्टिविटी देने पर हमारा ध्यान केंद्रित है। राज्य में तीर्थयात्रा और पर्यटन को बढ़ावा देने में निर्बाध परिवहन नेटवर्क की भूमिका अहम है। इन मंदिरों को जोड़ने वाली सड़कों के निर्माण को प्राथमिकता दी जा रही है। तीर्थयात्रा के दौरान सुविधा के साथ-साथ बेहतर सड़क व अन्य बुनियादी ढांचा के विकास से इन स्थलों में रहने वाले स्थानीय निवासियों के लिए भी आर्थिक संभावनाएं बनेंगी। पारंपरिक आध्यात्मिकता के साथ-साथ आधुनिक सुविधाओं का विकास मानसखंड मंदिर माला मिशन के लिए अहम है। मुख्यमंत्री धामी चाहते हैं कि यह कार्य सिर्फ बुनियादी ढांचे के विकास तक सीमित नहीं होने चाहिए, बल्कि इसके माध्यम से भक्तों और आगंतुकों को विशेष सुविधाएं प्रदान करना भी हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है। इसके लिए आसपास के स्थानों के विस्तार और आतिथ्य सेवाओं के प्रावधान के लिए बजट का आवंटन किया गया है और यह पर्यटकों के लिए एक अविस्मरणीय और समृद्ध अनुभव सुनिश्चित करने की दिशा में उत्तराखण्ड सरकार की प्रतिबद्धता को भी उजागर करता है। इस कार्य को धरातल पर उतारने के लिए मुख्यमंत्री धामी ने जनवरी 2024 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की और उनसे मानसखंड मंदिर माला मिशन के काम पर समर्थन मांगा। बैठक में उन्होंने मानसखंड मंदिर माला मिशन के उद्देश्यों और अनिवार्यताओं पर प्रकाश डाला। इस मिशन की सफलता ने आवश्यक संसाधन जुटाने के उनके संकल्प को दर्शाया है। साथ ही, उत्तराखण्ड के आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को बढ़ावा देने में भी इस पहल की महत्वता बढ़ने वाली है।

मानसखंड एक्सप्रेस

मानसखंड एक्सप्रेस मानसखंड मंदिर माला मिशन के तहत शुरू की जा रही एक विशेष ट्रेन सेवा है, जो कोलकाता को टनकपुर से जोड़ेगी। लंबी दूरी की इस ट्रेन की सेवा 15 अप्रैल से शुरू होने वाली है और यह कुमाऊं क्षेत्र के मंदिरों और देशभर के भक्तों के बीच एक मजबूत संबंध के रूप में कार्य करेगी। मानसखंड एक्सप्रेस स्थानीय और क्षेत्रीय परिवहन सेवाओं से युक्त होगी और आतिथ्य सेवा का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करेगी। इसके अलावा, राज्य की विरासत और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए उत्तराखण्ड सरकार का अपने ऐतिहासिक स्थलों और मंदिरों के संरक्षण और उन्नति के लिए प्रतिद्धता के साथ काम कर रही है। इसके लिए विरासत अधिनियम बनाने के उपाय किए गए हैं। मानसखंड मंदिर माला मिशन के तहत मान्यता प्राप्त 16 मंदिरों में से प्रत्येक के लिए अलग-अलग मास्टर प्लान तैयार किए गए हैं और इनके माध्यम से सरकार उनके संपूर्ण पुनरुद्धार कर रही है। एक सहकारी मिशन के तहत विभिन्न विभागों और प्रभागों का संगम इस प्रयास को आगे बढ़ा रहा है। जैसे-जैसे मानसखंड मंदिर माला मिशन गति पकड़ रहा है, यह न केवल धार्मिक स्थलों को पुनर्स्थापित करने बल्कि क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास को भी सुनिश्चित कर रहा है। उत्तराखण्ड की परंपरा और आधुनिकता, आध्यात्मिकता और बुनियादी ढांचे के विस्तार का बेहतर संयोजन निश्चित रूप से उत्तराखण्ड के लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के विजन को दर्शाता है। राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने के लिए मानसखंड मंदिर माला मिशन, देश के भविष्य को आकार देने के लिए दूरदर्शी नेतृत्व की क्षमता का एक भी अप्रतिम उदाहरण है।

बैजनाथ

बागनाथ मंदिर

गुरुद्वारा नानकमत्ता साहिब

जागेश्वर धाम मंदिर

कसार देवी मंदिर

2024 का नागरिक शास्त्र

नागरिकता संशोधन बिल को 2016 में संसद में पेश किया गया। दिसंबर, 2019 में लोकसभा और राज्यसभा में पारित किया गया। जाहिर है कि कानून बनाने की पटकथा को अंतिम रूप दे दिया गया, लेकिन 4 साल 3 माह की लंबी अवधि के बाद कानून की अधिसूचना तब जारी की गई, जब आम चुनाव की घोषणा कुछ दिन बाद होने ही वाली थी। इस संदर्भ में अधिसूचना के समय पर कठोर सवाल किए जाने स्वाभाविक हैं। अधिनियम के नियम, उसकी पात्रता और शर्तें आदि तय करने में इतना लंबा वक्त गुजार दिया गया, यह वाकई आश्चर्यजनक स्थिति है। अब एक तरफ नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) की अधिसूचना जारी की गई है, तो दूसरी तरफ पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और केरल के मुख्यमंत्री पी. विजयन ने इस कानून को अपने राज्य में लागू करने से इंकार कर दिया है। उप्र की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने भी यह बयान दिया है कि पहले सभी संशयों और असमंजस को दूर कर लेना चाहिए था। वैसे किसी भी मुख्यमंत्री को यह क्षेत्राधिकार नहीं है कि संसद द्वारा पारित और भारत सरकार द्वारा अधिसूचित किसी कानून को लागू करने से स्पष्ट इंकार कर सके। यह परोक्ष रूप से संघीय टकराव की स्थिति है, जिस पर सर्वोच्च अदालत की संविधान पीठ को फैसला देना पड़ सकता है। सीएए को ध्रुवीकरण अथवा मुस्लिम-विरोध का नागरिक शास्त्र कहा जा सकता है, जो एक निश्चित हद तक 2024 के आम चुनाव को प्रभावित करेगा। वैसे इसमें भी अर्द्धसत्य ही है। बेशक पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश के पीड़ित, अत्याचारों को झेलते उन देशों के घोर अल्पसंख्यकों-हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई, पारसी-को ही भारत की नागरिकता मुहैया कराने की व्यवस्था सीएए में की गई है, लिहाजा भाजपा अपने जनाधार में ध्रुवीकरण करा चुनावी फायदा उठा सकती है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भी भाजपा इसका सफल प्रयोग बंगाल में कर चुकी है। विरोधियों की आशंका, उनके असमंजस और डर बयां किए जा रहे हैं कि सीएए का लिंक एनआरसी से है। सीएए के जरिए मुसलमानों के एक तबके की नागरिकता छीनी जा सकती है। ऐसी दलीलें महज अफवाहें हैं और देश में विभाजनकारी हालात पैदा करने को विरोध किया जा रहा है। असम, मेघालय, त्रिपुरा में कुछ संगठन आंदोलित हो चुके हैं। याद रहे कि राजधानी दिल्ली के ह्यशाहीन बागह्ल इलाके में इसी मुद्दे पर मुसलमानों ने 100 दिन का आंदोलन चलाया था और बाद में पूर्वोत्तर दिल्ली में दंगे भी भडके थे, लिहाजा सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त किए जा रहे हैं। सुरक्षा बलों ने ह्यफ्लैग मार्चह्ल तक निकाला है। फिलहाल करीब 18 लाख 74000 आवेदन इन तीनों पड़ोसी देशों से आ चुके हैं। सबसे ज्यादा शरणार्थी 16.39 लाख पाकिस्तान से आए हैं या आना चाहते हैं। पाकिस्तान में हिंदू आदि अल्पसंख्यक 1.18 फीसदी, बांग्लादेश में 8.5 फीसदी और अफगानिस्तान में मात्र 0.04 फीसदी हैं। उनके लिए भारत ह्यमानवतावादी धार्मिक संरक्षक देशह्ल है। ये तीनों इस्लामी देश हैं, लिहाजा कानून में मुसलमानों की नागरिकता का कोई भी प्रावधान नहीं है। गौरतलब यह भी है कि नागरिकता का ऐसा कानून 1955 से हमारे देश में लागू है, जब जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री थे। उसमें 6 संशोधन भी किए जा चुके हैं। मोदी सरकार ने नागरिकता संशोधन अधिनियम, 2019 बना कर इसे व्यापकता दी है। पात्र शरणार्थी एक निश्चित वेबपोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। अधिकार प्राप्त समिति इस पर अंतिम फैसला लेगी। इसके प्रमुख निदेशक (जनगणना) होंगे और 7 अन्य सदस्य भी समिति में होंगे। कानून के नियमों में स्पष्ट उल्लेख है कि सीएए में नागरिकता छीनने का प्रावधान नहीं है। वैसे भी संविधान में उल्लेख है कि भारत के किसी भी नागरिक की नागरिकता छीनी नहीं जा सकती। आज जो सीएए विरोधी राजनीतिक प्रदर्शन किए जा रहे हैं, वे हिंदू-मुसलमान की सियासत ही है, ताकि इस मुद्दे पर ज्यादा से ज्यादा मुस्लिम वोट बटोरे जा सकें। हिंदू आदि का अधिकतम ध्रुवीकरण भाजपा के पक्ष में होना चाहिए। इस कानून का विरोध जायज नहीं लगता।

खरमास में आम चुनावों का खरखासा.....

भारत में निष्ट और अनिष्ट को लेकर बहुत सी मान्यताएं हैं। मजे की बात ये है कि ज्योतिष पर भरोसा रखने वाले देश में इस बार आम चुनाव खरमास में होने जा रहे हैं जबकि खरमास में कोई भी शुभ कार्य वर्जित माना जाता है। खरमास में ही नए दो चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति होना है और इसी काल में नए आम चुनावों की तिथियां घोषित की जाएँगी। मै तो इस तरह के झांसे में नहीं आता फिर भी आपको बता दूँ कि खरमास को विशेष ज्योतिषीय घटना है। ज्योतिषानुसार, सूर्य देव के धनु और मीन राशि में प्रवेश करने से खरमास लगते हैं। खरमास साल में 2 बार लगते हैं और खरमास के दौरान कुछ कामों को करने से मनाही होती है। इस साल 14 मार्च, गुरुवार से खरमास की शुरूआत होने वाली है और ये खरमास आने वाली 13 अप्रैल तक रहेंगे।। केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा ने खरमास को देखते हुए ही शायद नागरिक संशोधन कानून पाक रमजान महीने में लागू किया है। इसी पाक रमजान महीने में खटटर साहब को हरियाणा की चौकीदारी से आजाद कर वहां नायब साहब की सरकार बनवाई गयी है और इसलिए लोकसभा चुनाव के लिए प्रत्याशियों कि पहली सूची खरमास शुरू होने से बहुत पहले जारी कर दी गयी। कांग्रेस और दूसरे क्षेत्रीय दलों ने भी कम से कम इस मामले में एक-एक सूची जारी कर शगुन कर लिया। लेकिन नए दो चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति और आम चुनावों की घोषणा को खरमास से नहीं बचाया जा सका। ज्योतिषी खरमास को शुभ समय नहीं मानते, इसके चलते इस दौरान शादी करने से मना किया जाता है। खरमास के दिनों में मुंडन, गृह प्रवेश और सगाई वर्जित है खरमास में कुछ नया खरीदने से भी मना किया जाता है, खासकर संपत्ति या गाड़ी खरीदनी से हमेशा मना किया जाता है। संयोग से किसी भी ज्योतिषाचार्य ने खरमास में चुनाव करने की मनाही नहीं की। मुमकिन है कि ज्योतिषी चुनावों को शुभ कार्य मानते ही न हों ! क्योंकि अब चुनाव काले धन से लड़े जाते हैं। चुनाव जीतने के लिए हर गलत काम किया जाता है। खरमास को कोई मलमास कहता है तो कोई पुरुषोत्तम मास। खर का मतलब दुष्ट भी होता है और गधा भी। इसीलिए दुनिया के तमाम गधे इस महीने में बहुत खुश दिखाई देते हैं हालाँकि उनका ज्योतिष ज्ञान शून्य होता है। दुष्ट लोगों के लिए मलमास बड़े काम का होता है। वे इस महीने में अपनी दुष्टता का भरपूर प्रदर्शन कर सकते हैं। राजनीति इस युग में दुष्टता का पर्याय है। इसमें गधे-घोड़ों की महत्ता ज्यादा बढ़ गयी है गधे और खच्चर कभी भी बोझा धोने के लिए राजी रहते है। उन्हें कभी भी चौकीदारी दी जा सकती है या चौकीदारी से हटाया जा सकता है। रहे घोड़े तो वे हमेशा बिकने के लिए राजी होते हैं और बिना हिनहिनाये बिक जाते हैं। उनकी स्वामिभक्ति स्थाई नहीं होती। वे जिस घुड़साल में बांधे जाते हैं उसी के हो जाते हैं। उन्हें तो केवल अपनी कीमत और दाना-पानी से मतलब होता है। पिछले दिनों खरमास से पहले और खरमास के बाद भी गधों और घोड़ों की खूब मांग रही। खरमास में इनका बाजार उठान पर होता है। मुझे अच्छा लग रहा है कि देश के आम चुनाव इस बार खरमास में ही घोषित किये जायेंगे। नए चुनाव आयुक्त भी इसी खरमास की उपलब्धियों में शुमार किये जायेंगे। सरकार के फैसलों का शुभ-अशुभ से कोई लेना-देना नहीं होता। सरकार जो करती है वो शुभ ही होता है। सरकार शिलान्यास करे या लोकार्पण, हरी झंडी दिखाए या लाल आँखें सभी कुछ शुभ है। सरकार के हाथ केवल हाथ नहीं बल्कि वे कर-कमल होते हैं सरकार के हिसाब से जात-पांत कुछ नहीं है, इसलिए खटटर साहब को हटाने और नायब साहब को हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाने में किसी को कोई ऐतराज नहीं होना चाहिए। खरमास से पहले हरियाणा में सत्ता परिवर्तन एक शुभ घटना है। भले ही चौटाला फैमिली इस घटना से चोटिल हुई है। राजनीति में ये तो आम बात है। फिर अमरबेल जिसका भी आसरा लेती है, उसका खून चूसती ही है। भाजपा इस काल की सबसे बड़ी अमरबेल है। चौटालाओं को भाजपा के साथ खड़ा होने से पहले अकालियों, शिव सैनिकों, बसपाइयों और समाजवादियों से सलाह -मश्विरा करना चाहिए था। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने बहुत सही समय पार इलेक्टोरल बांड के मामले में अपना फैसला सुनाया। मजा तो तब आये जब सुप्रीम कोर्ट सरकार से बांड से धन की उगाही की फेहरिश्त चुनाव आयोग की वेब साइट पर डालने के साथ ही अखबारों में भी उनका विज्ञापन कराये। आजकल केंद्र और राज्यों की सरकारें वैसे भी अपनी तमाम उपलब्धियों का विज्ञापन हार चैनल पार करा रहीं है। इलेक्टोरल बांड से धन हासिल करना भी सरकार की एक बड़ी उपलब्धि है। उसका भी प्रचार सरकारी पैसे से ही होना चाहिए, क्योंकि हर कोई तो चुनाव आयोग की वेब साइट पर जा नहीं पायेगा, और क्या पता कि ये जानकारी अपलोड होते ही केंचुआ कि वेब साइट दम तोड़ दे। इसमें आखिर समय ही कितना लगता है। यदि ऐसा हुया तो सांप भी मर जायेगा और सरकार की लाठी भी नहीं टूटेगी। किसी भी वेब साइट को हैक करना एक अहिंसक काम है।

उत्तर प्रदेश : कानून व्यवस्था के दावे और हकीकत

पिछले दिनों कबीर नगर में खलीलाबाद के डीघा गांव में अज्ञात लोगों द्वारा उनके साथ उन्हीं के घर में घुस कर कथित तौर पर पहले सामूहिक बलात्कार किया गया और बाद में उनके शरीर को चाकुओं के वार से छन्नी कर दिया गया। जिसके चलते मौके पर ही उनकी मौत हो गयी और हत्यारे घटना को अंजाम देकर फरार हो गये। नंदिनी राजभर का लहूलुहान शव उनके कमरे में फर्श पर पड़ा मिला। क्या इस हत्याकांड को अंजाम देने वालों को इस बात का जरा भी भय नहीं था कि ह्यअगले चौराहे पर उनका इंतजार यमराज कर रहे होंगे?

निर्मल रानी
लेखिका

उत्तर प्रदेश, देश का सबसे बड़ा ही नहीं बल्कि राजनैतिक दृष्टि से भी यह सबसे महत्वपूर्ण राज्य है। यह राज्य केवल हाई प्रोफाइल राजनीतिज्ञों, साहित्यकारों, कवियों, शायरों का ही नहीं बल्कि हाई प्रोफाइल अपराध व अपराधियों का भी गढ़ है। यहां के बेखौफ अपराधियों के लिये कभी भी और किसी भी जगह बड़े से बड़े अपराध को अंजाम देना मामूली बात है। फिर चाहे कोई व्यक्ति थाने में हो, पुलिस कस्टडी में या जेल में या भीड़ भाड़ के इलाके में या अपने को सुरक्षित समझते हुये अपने घर में चैन से सो रहा हो, किसी भी जगह हत्या को अंजाम देना ऐसे शातिर अपराधियों के लिये मामूली बात है। उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था का विषय अक्सर चुनावी मुद्दा भी बनता रहता है। प्रत्येक राजनैतिक दल एक दूसरे पर कानून व्यवस्था के मामले में असफल होने और अपराध को बढ़ावा देने का आरोप लगाते रहते हैं। राज्य की वर्तमान सरकार तो प्रदेश की कानून व्यवस्था को दुरुस्त करने का कुछ ज्यादा ही ढिंढोरा पीटती रहती है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रदेश को अपराधमुक्त बनाने का जहां दावा करते रहते हैं वहीँ वह यह बताने से भी नहीं चूकते कि पिछली (सपा) सरकार में माफिया व अपराधी बेखौफ घूमा करते थे। 17 सितम्बर 2023 को उनके गृह नगर गोरखपुर में दिया गया योगी के भाषण का यह अंश कानून व्यवस्था के प्रति उनके नजरिये को दशार्ता है या यह सिर्फ तालियां पिटवाने के लिये की गयी लफ़्फाजी थी, यह तो राज्य की आपराधिक घटनाएं ही बता रही हैं। उस समय मुख्यमंत्री योगी ने कहा था कि -ह्यकानून संरक्षण के लिए है। लेकिन कानून को बंधक बनाकर व्यवस्था में सेंध लगाने का प्रयास करने की इजाजत किसी को नहीं है। कानून सुरक्षा के लिए है, लेकिन यदि किसी ने बहन-बेटी के साथ छेड़खानी की तो अगले चौराहे पर उस शोहदे का इंतजार यमराज कर रहे होंगे। उसे यमराज के यहां भेजने से कोई रोक नहीं पाएगा। हमें सुरक्षा के बेहतरीन वातावरण देना होगा। तो क्या मुख्यमंत्री की इस चेतावनी के बाद राज्य की कानून व्यवस्था खासकर महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों में कोई कमी आई या फिर यह भी महज ह्यफिल्मी डायलॉगह्ल या फिर जुमला साबित हुआ? राज्य की बिगड़ती कानून व्यवस्था स्वयं इस बात का सुबूत है। आम महिलाओं के साथ होने वाली बलात्कार व शारीरिक शोषण की अनेक घटनाओं की तो बात ही छोड़िये इस राज्य में तो अब हाई प्रोफाइल महिला नेता भी सुरक्षित नहीं रहीं। यहां तक कि सत्ता से जुड़े लोगों को भी अपराधी बेखौफ अपना निशाना बना रहे हैं। ताजातरीन उदाहरण उत्तर प्रदेश में भाजपा के सहयोगी दल सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) की वरिष्ठ महिला नेत्री नंदिनी राजभर की हत्या का है। नंदिनी राजभर सुभासपा की महिला विंग की प्रदेश महासचिव थीं। पिछले दिनों कबीर नगर में खलीलाबाद के डीघा गांव में अज्ञात लोगों द्वारा उनके साथ उन्हीं के घर में घुस कर कथित तौर पर पहले सामूहिक बलात्कार किया गया और बाद में उनके शरीर को चाकुओं के वार से छन्नी कर दिया गया। जिसके चलते मौके पर ही उनकी मौत हो गयी और हत्यारे घटना को अंजाम देकर फरार हो गये। नंदिनी राजभर का लहूलुहान शव उनके कमरे में फर्श पर पड़ा मिला। क्या इस हत्याकांड को अंजाम देने वालों को इस बात का जरा भी भय नहीं था कि ह्यअगले चौराहे पर उनका इंतजार यमराज कर रहे होंगेह्ल? यह घटना क्या यह सोचने के लिये मजबूर नहीं करती कि जब अपराधियों द्वारा एक सत्ता समर्थक नेत्री के घर में घुसकर उसका यह हश्र किया जा सकता है तो रास्ता चलती आम महिलाओं की सुरक्षा की आखिर क्या गारंटी है? चाक चौबंद कानून व्यवस्था का दावा कर अपनी ही पीठ थपथपाने वाला यही वह प्रदेश है जहां 15 अप्रैल, 2023 को पुलिस सुरक्षा के मध्य तीन हमलावरों ने पूर्व सांसद अतीक अहमद व उसके भाई अशरफ की उस समय गोली मारकर हत्या कर दी थी जब यह दोनों भाई मेडिकल जांच के लिए प्रयागराज के काल्विन अस्पताल ले जाये जा रहे थे। उस समय तीन अपराधी पुलिस सुरक्षा की परवाह किये बिना पुलिस का घेरा तोड़कर इन दोनों भाइयों पर गोलियां बरसाने लगे जिसमें दोनों भाइयों की मौके पर ही मौत हो गई थी। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने भी यूपी सरकार को फटकार लगाई थी। इसी तरह गत वर्ष 2 अक्टूबर को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले का वह हत्याकांड जिसमें मात्र 35 मिनट के भीतर दो परिवार के छह लोगों की हत्या कर दी गई थी। इस हत्याकांड ने उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश में सनसनी फैला दी थी। उस समय भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दोषियों के विरुद्ध सख़्त कार्रवाई करने का आदेश दिया था और सत्ताधारी नेताओं की ओर से कहा गया था कि ह्य इस मामले में ऐसी कार्रवाई की जाएगी कि वह लोगों के लिए नजीर बन जाएगी ह्ल। परन्तु दरअसल ऐसी घटनायें तो शासन की विफलता की ही नजीर पेश करती हैं। रहा सवाल सख़्त कार्रवाई करने के निर्देश का या अपराधियों को ह्यनजीर बनने वाली सजाह्ल देने या दुख प्रकट करने का तो इन लफ़्फाजियों से न तो मृतकों का जीवन वापस आ सकता है न ही अपराध में कमी आती दिखाई देती है। योगीराज में इस तरह का हाई प्रोफाइल सामूहिक हत्याकाण्ड 17 जुलाई 2019 को उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के घोरावल थाना क्षेत्र के उभ्भा गांव में हुआ था जबकि लगभग 30 ट्रैक्टर में भरकर आए 150 सशस्त्र लोगों ने जिनके पास कथित तौर पर 10 से अधिक राइफलें थीं। जब इन सशस्त्र हमलावरों को रोकने के लिए गांव वालों ने गुहार लगाई तो उन्होंने उन पर ही गोलियों बरसानी शुरू कर दीं। नतीजतन 10 लोगों की मौके पर ही मौत हो गयी। योगी सरकार के प्रदेश में चाक चौबंद कानून व्यवस्था के दावों के बीच अपराधियों द्वारा ऐसी अनेक आपराधिक घटनायें प्रदेश में आये दिन अंजाम दी जाती हैं। महिलाओं के साथ भी आये दिन अपराध होते रहते हैं। परन्तु इन वास्तविताओं को नजरअंदाज कर इन्हें उत्तर प्रदेश या मणिपुर जैसी डबल इंजन की सरकारों वाले राज्य की नहीं बल्कि केवल बंगाल और केरल की आपराधिक घटनायें ही नजर आती हैं। गोया इन्हें उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था के अपने ही दावों और उसकी हकीकत में कोई फर्क नजर नहीं आता।

भाजपा और कांग्रेस गठबंधन का अंतर

भाजपा ने वैचारिक मुद्दों और राजनीतिक एजेंडे पर भी सहयोगी पार्टियों को अपने साथ लिया है। हालांकि इस मामले में भी बिहार अपवाद है, जहां भाजपा को जनता दल यू की लाइन पर चल कर जाति गणना और आरक्षण बढ़ाने के मुद्दे का समर्थन करना पड़ रहा है। बाकी राज्यों में भाजपा ने जाति गणना और आरक्षण के मुद्दे को हाशिए में डाला है। हिंदुत्व के एजेंडे से दूरी दिखाने वाली पार्टियां और नेता भी भाजपा के हिंदुत्व व राष्ट्रवाद के एजेंडे को स्वीकार करके गठबंधन में शामिल हुए हैं।यहां तक कि किसानों के मुद्दे पर भी जयंत चौधरी सरकार का विरोध नहीं कर रहे हैं, बल्कि किसानों के खिलाफ बही खड़े हो गए हैं। हैरानी नहीं होगी अगर इस मुद्दे के बावजूद अकाली दल का भी भाजपा से तालमेल हो। सवाल है कि प्रादेशिक पार्टियां क्यों अपनी राजनीतिक और वैचारिक जमीन छोड़ कर या उसके साथ समझौता करके भाजपा के साथ गठबंधन कर रही हैं? यह मामूली सवाल नहीं है। इसका सरल जवाब तो यह है कि सत्ता की दिवानगी में पार्टियां हर तरह के समझौते कर रही हैं। लेकिन इसके साथ साथ मौजूदा लोकतांत्रिक व्यवस्था में जाति, धर्म और व्यापक रूप से सामाजिक व्यवस्था की अंतरक्रिया को समझने की भी जरुरत है।

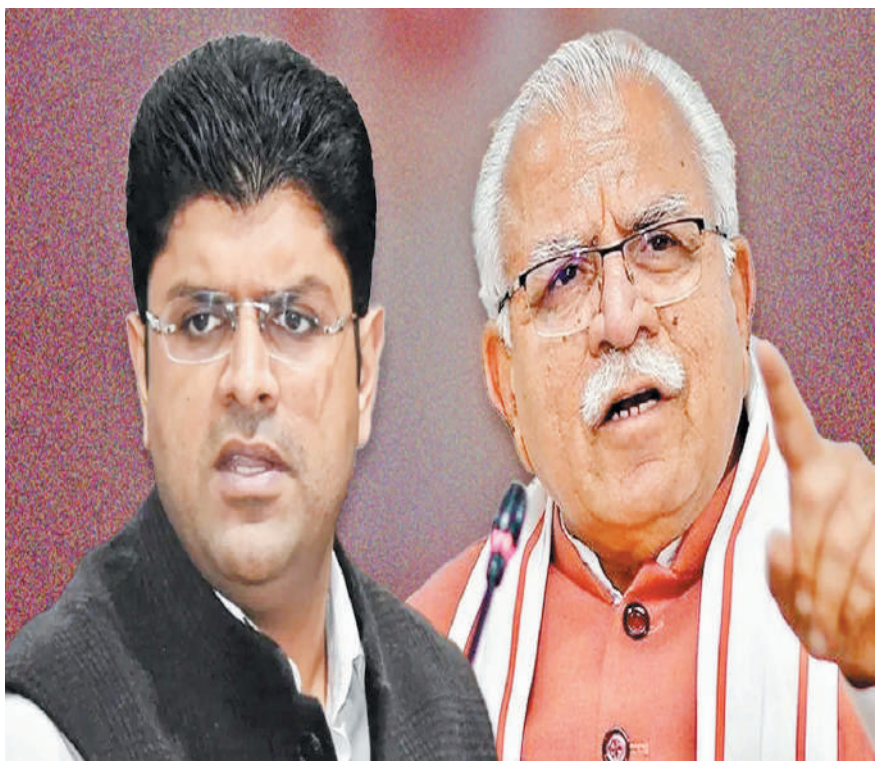

अजीत द्विवेदी
लेखक

लोकसभा चुनाव में भाजपा और कांग्रेस दोनों गठबंधन बना रहे हैं। दोनों का फर्क यह है कि भाजपा का गठबंधन उसकी शर्तों पर हो रहा है, जबकि कांग्रेस सहयोगी पार्टियों की शर्तों पर गठबंधन कर रही है। यह दोनों पार्टियों की राजनीतिक स्थिति का फर्क भी बताता है। एक तरफ 10 साल से सत्ता में रह कर बेहिसाब शक्ति और संपदा इकट्ठा करने वाली भाजपा है तो दूसरी ओर राजनीति के बियाबान में भटक रही कांग्रेस है, जो 10 साल से सत्ता से बाहर है, राज्यों में कई जगह जीती हुई सरकारें गंवा चुकी है और ज्यादातर नेता केंद्रीय एजेंसियों की जांच के दायरे में हैं।तभी ऐसा लग रहा है कि वह कहीं भी गठबंधन करने के लिए अपनी शर्तें आरोपित करने की स्थिति में नहीं है। पिछले साल के अंत में हुए राज्यों के चुनाव में खराब प्रदर्शन ने कांग्रेस की मोलभाव करने की क्षमता को और कम कर दिया। अब स्थिति यह है कि वह महाराष्ट्र में दूसरे नंबर की पार्टी के तौर पर लड़ेगी तो पश्चिम बंगाल में सभी सीटों पर उम्मीदवारों की ममता बनर्जी की एकतरफा घोषणा के बावजूद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे कह रहे हैं कि अब भी तालमेल हो सकता है। कांग्रेस को आम आदमी पार्टी के साथ तालमेल में कई जगह समझौता करना पड़ा है। उसके नेता मजबूरी बताते हुए कह रहे हैं कि कैसे गुजरात में भरूच की अहमद पटेल की सीट आप के लिए छोडी पड़ी। लोकसभा सीटों के समझौते के नाम पर झारखंड में जेएमएम ने राज्यसभा की कांग्रेस की सीट हथिया ली है।बहरहाल, कांग्रेस की कमजोरियां अपनी जगह हैं और सत्ता से बाहर होने के अलावा भी उसके कई कारण हैं। उसके बरक्स भाजपा सभी नए और पुराने सहयोगी दलों के साथ अपनी शर्तों पर समझौता कर रही है। भाजपा ने 38 पार्टियों का गठबंधन बनाया है लेकिन यह सुनिश्चित किया है कि पिछले एनडीए की छाया इस पर नहीं रहे। यह नया एनडीए है, जिसमें सब कुछ भाजपा के हिसाब से हो रहा है। बिहार एकमात्र अपवाद है, जहां भाजपा को मशक्कत करनी पड़ रही है। लेकिन उसके भी ऐतिहासिक कारण हैं। बिहार में भाजपा कभी भी मजबूत ताकत नहीं रही है। तभी उसे हमेशा नीतीश कुमार के सहारे की जरुरत पड़ती है। जब वह 2014 में अकेले लड़ी थी तब भी उसे रामविलास पासवान और उपेंद्र कुशवाहा के सहारे की जरुरत थी। 2019 से पहले भाजपा ने प्रयास करके नीतीश की एनडीए में वापसी कराई थी और जब वे 2022 में फिर साथ छोड़ कर चले गए थे तो तमाम नाराजगी के बावजूद 2024 में फिर उनकी वापसी कराई गई है। लेकिन इस बार मामला थोड़ा उलझा हुआ है। भाजपा पुराने सहयोगियों को भी साथ में रखना चाहती है तभी सीटों की संख्या का पेंच उलझ गया है। नीतीश अपने हिस्से की सीटें नहीं छोड़ रहे हैं तो चिराग पासवान, पशुपति पारस, उपेंद्र कुशवाहा और जीतन राम मांझी भी अपनी अपनी मांग पर अड़े हैं। सो, देश के बाकी राज्यों के मुकाबले भाजपा के लिए बिहार थोड़ा मुश्किल दिख रहा है फिर भी भाजपा सारे विवाद सुलझाने में जुटी है।इसके मुकाबले देश के लगभग सभी राज्यों में भाजपा अपने हिसाब से समझौता कर रही है। यहां तक कि ओडिशा जैसे राज्य में, उसने सत्तारूढ़ बीजू जनता दल को इस बात के लिए तैयार किया है कि वह भाजपा के लिए अपनी जीती हुई लोकसभा सीटें छोड़े। यह आमतौर पर नहीं होता है। ध्यान रहे भाजपा का पूरा फोकस इस समय लोकसभा चुनाव पर है। वह विधानसभा चुनाव पर ज्यादा ध्यान नहीं दे रही है।उसे केंद्र में तीसरी बार सरकार बनानी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बार भाजपा के लिए 370 और एनडीए के लिए चार सौ सीटों का लक्ष्य रखा है। पिछली बार ओडिशा में भाजपा को छप्पर फाड़ सीटें मिली थीं। वह 21 में से आठ सीट जीतने में कामयाब रही थी। इस बार अपनी सीटें बढ़ाने के लिए वह 15 साल बाद बीजू जनता दल की एनडीए में वापसी करा रही है और उसको इस बात के लिए तैयार किया है कि वह अपनी जीती हुई पांच सीटें छोड़ें ताकि भाजपा 14 सीटों पर लड़े। बीजद की पांच जीती हुई सीटें लेने के बावजूद भाजपा उसे लोकसभा में एकतरफा बढ़त नहीं देना चाहती है। तभी वह 15 साल पुराने फॉर्मूले के आधार पर विधानसभा सीटों का बंटवारा चाहती है।छह साल बाद टीडीपी की भी एनडीए में वापसी हो रही है और उसके साथ गठबंधन में भाजपा आंध्र प्रदेश की छह लोकसभा सीटों पर लड़ेगी। सोचें, पिछले चुनाव में भाजपा को एक फीसदी वोट नहीं मिला था, जबकि टीडीपी ने 39 फीसदी वोट हासिल किए थे। फिर भी टीडीपी और जन सेना पार्टी के साथ तालमेल में भाजपा छह सीटें लड़ेगी। महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में तो भाजपा का समझौता इस बात की मिसाल है कि कैसे बड़ी और ताकतवर पार्टी अपने हिसाब से गठबंधन को संचालित करती है।पिछले चुनाव में शिव सेना के साथ तालमेल में भाजपा 25 सीटों पर लड़ी थी लेकिन इस बार दो सहयोगी होने के बावजूद वह 30 सीटों पर लडे की तैयारी कर रही है। असली शिव सेना और असली एनसीपी के लिए वह सिर्फ 18 सीटें छोडा चाहती है। उत्तर प्रदेश में भाजपा ने अपना दल के अलावा राष्ट्रीय लोकदल और सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी को भी अपने गठबंधन में शामिल किया है लेकिन अपनी शर्तों पर। जयंत चौधरी की पार्टी रालोद को समाजवादी पार्टी ने लोकसभा की सात सीटें दी थीं लेकिन वे भाजपा के साथ सिर्फ दो सीटों पर लडे को तैयार हो गए। चार पार्टियों के साथ तालमेल के बावजूद उत्तर प्रदेश में भाजपा 74 सीटों पर लडे वाली है ऐसा नहीं है कि भाजपा ने सिर्फ सीटों के बंटवारे में अपनी मर्जी चलाई है ।

भारतीय मुसलमानों के खिलाफ नहीं है नागरिकता संशोधन कानून

प्रभुनाथ शुक्ल

नागरिकता संशोधन कानून यानी सिविल एबेडमेंड एक्ट (सीएए) आखिरकार देश में लागू हो गया है। इस कानून को लागू करना क्या मोदी सरकार की मजबूरी थी। यह कानून क्या इतना आवश्यक था कि लोकसभा चुनाव के ठीक पहले लागू किया जाता। क्या यह कानून पूरी तरह से पारदर्शी और देश के हित में है। क्या भारतीय मुसलमानों की नागरिकता पर इस कानून का कोई असर पड़नेवाला है। अगर ऐसा नहीं है तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसका विरोध क्यों किया जा रहा है। विपक्ष सरकार पर सवाल खड़े क्यों कर रहा है। देश के मुसलमानों को डराया क्यों जा रहा है। हिंदुत्व और संघ का एजेंडा इसे क्यों बताया जा रहा। विपक्ष इस कानून पर भ्रम क्यों फैला रहा है। क्या चुनावी लाभ के लिए विपक्ष मुसलमानों में असुरक्षा की भावना पैदा करना चाहता है। क्या मुस्लिम वोटों के ध्रुवीकरण के लिए इस कानून के संबंध में भ्रामक प्रचार किया जा रहा है? सवाल उठता है की क्या मोदी सरकार वास्तव में पारदर्शी रूप से इस कानून को लागू किया है। क्या सरकार कानून के जरिए हिंदू, बौद्ध, सिख, जैन और इसाई समुदाय का ध्रुवीकरण करना चाहती है। लोकसभा चुनाव के एन वक्त पर ऐसे कानून लाकर क्या भाजपा सीधा लाभ नहीं लेना चाहती। विपक्ष आखिर ऐसे कानून का विरोध क्यों कर रहा है। वह डर क्यों रहा है। सच तो यह है इस कानून के जरिए जहां सरकार गैर मुस्लिम मतों का ध्रुवीकरण करना चाहती है वहीं विपक्ष मुसलमानों को सीएए का भय दिखा कर मुस्लिम वोटो का ध्रुवीकरण करना चाहता है। हालांकि यह कानून लोकसभा चुनाव के बाद भी लागू किया जा सकता था। लेकिन गृहमंत्री अमित शाह बार-बार यह कह रहे थे कि नागरिकता संशोधन कानून चुनाव के पहले लागू किया जाएगा और लागू भी कर दिया गया। विचारणीय बिंदु यह है कि विपक्ष इस कानून को लेकर लोगों को भ्रमित क्यों कर रहा है। कानून को हिंदुत्व का एजेंडा क्यों बताया जा रहा है। क्या यह कानून एंटी मुस्लिम है। क्या इस कानून के लागू होने के बाद भारत में रहने वाले मुसलमानों की नागरिकता खत्म जाएगी। क्या देश के किसी भी नागरिक की नागरिकता समाप्त करने के लिए यह कानून लाया गया है। यह सब भ्रामक प्रचार है। इस कानून में इस तरह का कोई प्रावधान नहीं है। भारत में रहने वाले गैर हिंदू यानी मुसलमानों की नागरिकता पर कोई सवाल नहीं उठाता है। यह कानून सिर्फ उन्हीं गैर मुस्लिम अल्पसंख्यकों नागरिकता प्रदान करेगा जो पाकिस्तान, बग्लादेश और अफगानिस्तान में धार्मिक रूप से प्रताड़ित हैं और 31 दिसम्बर 2014 से पूर्व भारत में शरणार्थी जीवन यापन कर रहे हैं। इसमें हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध और ईसाई अल्पसंख्यक शामिल हैं। कानून के लागू होने के बाद ऐसा भी नहीं होगा कि संबंधित अल्पसंख्यक भारत में आते रहेंगे और सरकार उन्हें भारतीय नागरिकता प्रदान करती रहेगी। वैसे यह साबित करना भी एक मुश्किल काम होगा की सम्बंधित देशों से भारत आए लोगों में कौन अल्पसंख्यक है और कौन बहु संख्यक। क्या इस कानून के लागू होने के बाद पाकिस्तान, बंगलादेश और अफगानिस्तान से अवैध रूप से आए मुस्लिम भारत में निवास कर सकते हैं जिन्हें भारतीय नागरिकता नहीं हासिल है। नागरिकता संशोधन कानून को लेकर इसके पूर्व में भारी विरोध-प्रदर्शन भी हो चुका है। देश को दंगे की आग में भी झुलसना पड़ा है। लोगों को अपनी जान भी गवानी पड़ी है। दिल्ली के शाहीनबाग में लंबे समय तक धरना प्रदर्शन भी चला। इस कानून को लेकर तकरीबन 6 बार संशोधन किए जा चुके हैं। साल 2019 के पहले भारतीय नागरिकता लेने के लिए 11 साल भारत में रहना अनिवार्य था लेकिन बाद में इसे घटाकर 6 साल कर दिया गया। पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान तीनों मुस्लिम बहुल देश है। वहां मुस्लिम नहीं अल्पसंख्यक असुरक्षित है।

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण
नई दिल्ली, गुरुवार, 14 मार्च, 2024

संक्षिप्त खबरें

एटीएम कार्ड बदलकर बैंक खाते से निकालें 32 हजार रुपये

हसनपुर।एटीएम कार्ड बदलकर बैंक खाते से साढ़े 32 हजार रुपये निकालने के मामले में पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। आदमपुर थाना क्षेत्र के गांव पशुवा नगला सोहत निवासी मुकेश कुमार आठ मार्च को किसी काम से गजरौला आए थे। वह इंदिरा चौक के निकट एक एटीएम मशीन पर रुपये निकालने चले गए। वहां पहले से ही अंदर खड़े युवक ने रुपये निकालने में मदद करने की बात कहते हुए उनका एटीएम बदल दिया। कुछ देर बाद दूसरी एटीएम मशीन से चार बार में 32 हजार 500 रुपये निकाल लिए। मोबाइल पर बैंक खाते से रुपये निकासी का मैसेज आने के बाद मुकेश को इसकी जानकारी हुई। प्रभारी निरीक्षक हरीश वर्धन ने मामले में मुकेश की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ धोखाधड़ी कर रुपये निकालने के आरोप में मुकदमा दर्ज किए जाने की बात कही है।

एस हिन्दू इण्टर कॉलेज में दिलाई मतदाता जागरूकता की शपथ

अमरोहा। जे एस हिन्दू इण्टर कॉलेज में स्वीप के अंतर्गत मतदाता जागरूकता अभियान के तहत विद्यालय के समस्त शिक्षकों, लिपिकों, कर्मचारियों, बीएलओ तथा आम नागरिकों को उप जिलाधिकारी सदर सुधीर कुमार ने मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाई। उन्होंने सभी से अपील की कि आने वाले लोक सभा चुनाव में सभी अपने मत का प्रयोग करें तथा लोकतंत्र को मजबूत करें।प्रधानाचार्य डॉ0 जी0पी0सिंह ने कहा कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए हम सभी को वोट करना और दूसरों से करने को प्रेरित करना है। कोई भी वोट डालने से वंचित न रहे।इस अवसर पर विद्यालय का समस्त स्टाफ और बी एल ओ और अन्य नागरिक उपस्थित थे।

सैय्यद अशहर तौसीफ की शिकायत पर बैठाई गई जांच कमेटी

अमरोहा।नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल प्रिंसिपल बेंच नई दिल्ली ने सैय्यद अशहर तौसीफ की शिकायत पर बैठाई जांच कमेटी जिसमे मेंबर सेक्रेटरी उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, और जिला अधिकारी महोदय अमरोहा को नामित किया गया। शिकायतकर्ता ने कमाल फारुकी द्वारा एक ही गाटा संख्या 403,404 जिस पर तालाब दर्ज है और तालाब का स्वरूप परिवर्तित नही किया जा सकता। कमाल फारुकी , इनके बेटे दानिश कमाल फारुकी व इनके समधी शबी अहमद ने आपस मे षडयंत्र करके पर उपरोक्त गाटा संख्याओं पर चार विद्यालयों राशिदा बेगम मुस्लिम महाविद्यालय बीएड कॉलेज, मेस्को पब्लिक स्कूल अमरोहा, मेस्को इंस्टीट्यूट ऑफ फामेर्सी अमरोहा और मेस्को इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल साइंसेज अमरोहा की मान्यता प्राप्त की।

डीएलएफ कॉलोनी में मंदिर मार्ग का निर्माण शुरू

ट्रांस हिंडन। भोपुरा स्थित डीएलएफ कॉलोनी में मंदिर जाने वाले मार्ग का निर्माण कार्य बुधवार से शुरू हो गया। यहां की आरडब्ल्यूए के अध्यक्ष मनोज गौड़ ने बताया कि कॉलोनी के बी ब्लॉक में महामाया मंदिर का मार्ग लंबे समय से जर्जर था। पार्षद रेखा गोस्वामी से मार्ग बनवाने के लिए कहा था। बुधवार से नगर निगम ने यहां सीसी रोड बनाने का काम शुरू कर दिया है। सड़क बनने से मंदिर जाने वाले श्रद्धालुओं को काफी सहूलियत होगी।

जिला पंचायत अध्यक्ष ललित तंवर ने किया विकास कार्यों का लोकार्पण

अमरोहा। जिला पंचायत अध्यक्ष ललित तंवर ने विधान सभा हसनपुर के ग्राम ढवारसी व ग्राम चकूनी में जिला पंचायत, अमरोहा द्वारा लगभग 48,74,000 रुपए की लागत से कराये गयेविकास कार्योका शिलान्यास/लोकार्पण किया।इस अवसर पर माननीय जिला पंचायत अध्यक्ष ललित तंवर जी के साथ जिला पंचायत सदस्य शीशराम सिंह, मण्डल अध्यक्ष राजीव गोयल, ग्राम प्रधान, सहित अमित गुर्जर, आयूष चौधरी, रामपाल सिंह, हरज्ञान सिंह, वीरपाल, कुलदीप कुमार, व सम्मानित क्षेत्रवासी मौजूद रहे।

जालसाजी करने के आरोप में छह राजस्व अधिकारियों पर मुकदमा दर्ज

बलिया (उप्र)। राजस्व रिकॉर्ड में कथित तौर पर हेराफेरी करने और उसके आधार पर विवादित संपत्ति के स्वामित्व में बदलाव का आदेश देने के आरोप में छह राजस्व अधिकारियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी।पुलिस के मुताबिक, परशुराम उपाध्याय की शिकायत के आधार पर, बलिया कोतवाली थाने मेंएक पूर्व तहसीलदार और राजस्व विभाग के पांच अधिकारियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है।उपाध्याय ने पुलिस से की शिकायत में आरोप लगाया है कि तहसीलदार ने मामले में उनका पक्ष सुने बिना एक विवादित संपत्ति के स्वामित्व को बदलने का आदेश दिया है।उन्होंने आरोप लगाया कि तहसीलदार ने अन्य राजस्व अधिकारियों के साथ मिलकर दस्तावेजों और राजस्व रिकॉर्ड में हेराफेरी की।

डीएम ने किया मण्डी मे स्टांग रूम का निरिक्षण कार्य की धीमी गति पर जताई नाराजगी

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा ।जिलाधिकारी राजेश कुमार त्यागी एवं पुलिस अधीक्षक कुमार अनुपम सिंह ने लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के दृष्टि गत मंडी परिसर में ईवीएम मशीन स्ट्रांग रूम बैरिकेडिंग वाहन पार्किंग, सुरक्षा सहित अन्य विभिन्न व्यवस्थाओं का मौके पर जाकर निरीक्षण किया ।

इस अवसर पर जिलाधिकारी ने स्ट्रांग रूम की साफ सफाई, रंगाई पुताई खिड़की दरवाजों की टूट मरम्मत के कार्य , दुकानों को खाली कराने के कार्य वाहन पार्किग, वरिकेडिंग मतगणना हाल पोलिंग पार्टी रवानगी, सामग्री वितरण सहित विभिन्न विभिन्न व्यवस्थाओं के संबंध में मंडी सचिव से जानकारी ली। जिलाधिकारी ने कार्य की धीमी प्रगति पर मंडी सचिव को कड़ी फटकार लगाते हुए 3 दिन के अंदर सभी कार्य पूर्ण करने की हिदायद दी कि जिम्मेदारी तय करते हुए कार्रवाई की जाएगी। जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडी को निर्देशित करते हुए कहा कि वाहन पार्किंग और वरिकेडिंग के लिए जो स्थान चिन्हित है उसके लिए आवश्यक व्यवस्थाएं कर लिया जाए इसमें किसी प्रकार की लापरवाही की जानी चाहिए । स्ट्रांग रूम में जहां पर भी ईवीएम पैट रखी जाएंगी। उन हालो की साफ सफाई टूट फुट मरम्मत व जो खुला स्थान है उसको बंद करने का कार्य रंगा पुताई साफ सफाई प्राथमिकता के साथ तीन दिन के अंदर पूरा कर लिया जाए।कहा कि तीन दिन के अंदर कार्य पूर्ण नहीं होने पर पुनःनिरीक्षण करने पर जिम्मेदारी तय की जाएगी।

कहा कि निर्वाचन के कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी प्राथमिकता समझते हुए कार्य कराया जाए।इस अवसर पर जिलाधिकारी ने पुलिस अधीक्षक कुमार अनुपम सिंह से कहां-कहां पर सुरक्षाकर्मी लगाए जाएंगे वरिकेडिंग वाहन पार्किंग के लिए उपयुक्त स्थान सहित विभिन्न व्यवस्थाओं का मौके पर जाकर निरीक्षण किया और विचार विमर्श कर सम्बन्धित को निर्देशित किया। निरीक्षण के अवसर पर अपर जिला अधिकारी न्यायिक माया शंकर यादव, अपर पुलिस अधीक्षक, राजीव कुमार अपर उप जिला अधिकारी, भगत सिंह,अपर उपजिलाधिकारी, सुनीता सिंह, अधिशासी अभियंता पीडब्ल्यूडी मंडी सचिव सहित अन्य संबंधित मौजूद रहे।

असीमित संभावनाओं वाले राज्य को कुछ लोगों ने 'बीमारू' बनाकर रखा था : आदित्यनाथ

प्रात : किरण

लखनऊ/एजेंसी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को बिना नाम लिए पिछली सरकारों पर निशाना साधते हुए कहा कि असीमित संभावनाओं वाले उत्तर प्रदेश को कुछ लोगों ने 'बीमारू' राज्य बना रखा था। आदित्यनाथ ने बुधवार को लोकभवन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में यह बात कही। एक बयान के अनुसार इस दौरान उन्होंने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उपक्रम (एमएसएमई) क्षेत्र के लिए 30,826 करोड़ रुपये का मेगा ऋण वितरण किया। साथ ही उन्नाव में स्वीकृत 'प्लेज पार्क' के विकासकताओं को चेक वितरित किया। उन्होंने औद्योगिक आस्थानों में भूखंडों के आवंटन के लिए ऑनलाइन पोर्टल को भी जारी किया। बयान के अनुसार मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर 'ओडीओपी' एवं 'विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना' के अंतर्गत टूलकिट भी वितरित की।

राज्य की राजधानी में एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) मंत्रालय के लिए मेगा ऋण वितरण कार्यक्रम में आदित्यनाथ ने कहा कि यह नये भारत का नया उत्तर प्रदेश है। उन्होंने कहा, "इसे लेकर बनी पुरानी धारणा को हमने अपने सामर्थ्य से बदला है। आज हमारा हर सेक्टर सभी को उत्तर दे रहा है। उप्र पहले भी असीमित संभावनाओं वाला राज्य था, मगर कुछ लोगों ने इसे बीमारू बना रखा था।" मुख्यमंत्री ने कहा, "हमने इसे राष्ट्र निर्माण के अभियान के साथ जोड़कर युवाओं और उद्यमियों के विकास के पथ पर अग्रसर किया है। आज इसका परिणाम देखने को मिल रहा है। उत्तर प्रदेश देश का अकेला राज्य है जहां युवा उद्यमियों को बिना ब्याज के पांच लाख रुपये का ऋण दिया जा रहा है।"

मुख्यमंत्री ने कहा कि चीन के उत्पादों को सरकार ने अपने बाजार से बहुत दूर कर दिया है, यही एमएसएमई इकाइयों की ताकत का परिणाम है। उन्होंने कहा, "इससे बड़ा राष्ट्रवाद क्या हो सकता है, अगर हमारे घर का उत्पाद मार्केट में छा रहा है तो हमें भी उसे प्रोत्साहित करना होगा, प्रेरित करके प्लेटफार्म उपलब्ध कराना होगा।

ये कितनी खुशी की बात है कि हमारा उत्पाद मार्केट में छा रहा है और दुश्मन देश का उत्पाद बाजार से दूर होता जा रहा है।" आदित्यनाथ ने कहा कि आज दीपावली, विजया दशमी, ईद और क्रिसमस पर उत्तर प्रदेश के उत्पाद ही बाजार में देखने को मिल रहे हैं। उन्होंने कहा, "हमारा उत्पाद अच्छा तो होता ही है, साथ ही हमारे उद्यमियों और कारीगरों को भी लगता है कि उनका भविष्य उज्ज्वल है।" इस अवसर पर प्रदेश सरकार में एमएसएमई मंत्री राकेश सचान, मुख्य सचिव दुगार्शंकर मिश्र, अपर मुख्य सचिव अमित मोहन प्रसाद, सचिव प्रांजल यादव, आयुक्त एवं निदेशक राजेश कुमार सहित विभागीय अधिकारी, उद्यमी और हस्तशिल्पी कारीगर मौजूद रहे।

गुरुकुल चोटीपुरा में चतुर्थ राष्ट्रीय महिला योगासन चैम्पियनशिप-2024 का समापन संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा ।गुरुकुल चोटीपुरा में चतुर्थ राष्ट्रीय महिला योगासन चैम्पियनशिप-2024 का शानदार समापन संपन्न हुआ।खेल मंत्रालय एवं स्पोर्ट्स अथोरिटी ऑफ इण्डिया एवं राष्ट्रीय योगा आयोग के संयुक्त तत्वाँधान में उ.प्र. योगासन फेडरेशन द्वारा आठ मार्च से 13 मार्च तक चली इस राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में उन्तीस (29) राज्यों के अलग-अलग वर्गों में 582 (पाँच सौ बयासी) से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया।चतुर्थ सीनियर महिला नेशनल योगासन चैंपियनशिप के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित योगासन भारत के महासचिव डॉक्टर जयदीप आर्य ने प्रातः काल में सबसे पहले गुरुकुल चोटीपुरा में डॉक्टर सुमेधा आर्य एवं गुरुकुल के समस्त छात्रों के साथ यज्ञ किया।उसके बाद सभी योगासन एथलीटों के साथ योग सत्र का प्रारंभ किया।महासचिव द्वारा सभी एथलीटन को मेडल देकर पुरस्कृत किया साथ ही साथ सभी कोच, मैनेजर एवं टेक्निकल ऑफिसियल को भी सम्मानित किया गया।इस सफल कार्यक्रम के लिए जिला योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन अमरोहा के सभी सदस्यों को सम्मानित किया गया तथा कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले नमामि गंगे के सभी वालिंटियर का मोमेंटो एवं प्रशस्ति पत्र देकर उनको धन्यवाद किया गया। श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के प्रो चांसलर डॉ राजीव त्यागी के द्वारा सभी खिलाड़ियों एवं टेक्निकल ऑफिसियल को वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय की तरफ से गिफ्ट देकर सम्मानित किया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग करते हुए वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय के प्रतिकुलाधिपति एवं किक बॉक्सिंग फेडरेशन ऑफ इण्डिया (खेल मंत्रालय) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. राजीव त्यागी ने चैम्पियन लीग के आयोजकों के साथ मिलकर विजेता खिलाड़ियों को मेडल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।मुख्य अतिथि किक बॉक्सिंग फेडरेशन ऑफ इण्डिया के नेशनल वाइस चेयरमैन एवं वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय के प्रतिकुलाधिपति डॉ. राजीव त्यागी ने कहा कि आज आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी के ह्यह्यनारी शक्ति वंदनह्यह्य, बेटी-बचाओ,बेटी-पढ़ाओ,बेटी-खिलाओ जैसी शानदार योजनाओं से ह्यह्यमहिला सशक्तिकरणह्यह्य देश में अपने चरम पर है। आज राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्प्रधाओं में देश की बेटियाँ पदक तालिका में बेटों से अधिक मेडल जीतकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का गौरव बढ़ाने का काम कर रहीं हैं। गुरुकुल चोटीपुरा स्वंय महिला सशक्तिकरण का जीवन्त हस्ताक्षर है। इस अवसर पर डॉ सुमेधा आर्य, वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के प्रो चांसलर डॉ राजीव त्यागी, आनंद डिग्री कॉलेज के चेयरमैन नेमपाल सिंह, योगासन भारत के कोषाध्यक्ष रचित कौशिक,उत्तर प्रदेश योगासन स्पोर्ट एसोसिएशन के सचिव रोहित कौशिक, पीयूष कांत मिश्रा ,जिला योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन के ज़िलाअध्यक्ष जोगिन्द्र सिंह, सचिव नौबहार सिंह, ज़िलाउपाध्यक्ष पुरुजीत सिंह, संयुक्त सचिव पूनम शर्मा एवं सचिन चौधरी कोषाध्यक्ष कोमल, गौरव धारीवाल, आदि उपस्थित रहे।

सीबीएसई 10वीं की परीक्षाएं सकुशल संपन्न, छात्रों ने जताई खुशी

प्रात : किरण

गाजियाबाद,एजेंसी। जिले में सीबीएसई 10वीं कक्षा की सभी परीक्षाएं सकुलशल संपन्न हो गई। बुधवार को 10वीं की कंप्यूटर एप्लिकेशन, इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की आखिरी परीक्षा हुई, जो छात्रों के लिए आसान रही। परीक्षाएं पूरी होने पर छात्र भी खुश दिखाई दिए। वहीं 12वीं की परीक्षाएं अभी दो अप्रैल तक चलेंगी। जिले में 15 फरवरी से 47 केंद्रों पर केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई)की परीक्षाएं चल रही हैं। 10वीं की बुधवार को सुबह 10.30 से 12.30 के बीच आखिरी परीक्षा हुई। वैकल्पिक विषय होने के चलते परीक्षाएं भी छात्रों के लिए आसान रहीं। परीक्षाएं पूरी होने पर छात्रों ने भी राहत की सांस ली। छात्रों ने खुशी व्यक्त करते हुए बताया कि अब उन्हें ऐसा लग रहा है जैसे बहुत बड़ा बोझ उन पर से उतर गया है। परीक्षा जो तनाव पिछले एक महीने से था वह अब नहीं है। अब उन्हें सिर्फ परिणाम आने का इंतजार है। वहीं 12वीं की परीक्षाएं अभी दो अप्रैल तक चलेंगी। बुधवार को 12वीं की गृह विज्ञान विषय की परीक्षा हुई। गृह विज्ञान की परीक्षा को भी छात्रों ने बहुत आसान बताया जो समय से पहले ही पूरी हो गई। परीक्षा देने वाली हिमांशी ने बताया कि पेपर बहुत ही आसान था, तीन घंटे की परीक्षा दो घंटे में ही हो गई। अब 12वीं की 15 मार्च को मनोविज्ञान विषय की परीक्षा होगी। उससे पहले 14 मार्च को पंजाबी, तमिल, जर्मन, फ्रेंच तथा अरेबिक आदि भाषाओं की परीक्षा होगी। मगर हार्ड विषय होने के चलते छात्रों को मनोविज्ञान परीक्षा के लिए ज्यादा मेहनत करनी होगी।

यूपी बोर्ड के वह छात्र जो अपने प्रेक्टिकल नहीं दे सके उनके पास आज अपने छूटे हुए प्रेक्टिकल देने का आखिरी मौका है। इसके बाद उन्हें कोई मौका नहीं मिलेगा। बोर्ड की तरफ से ऐसे छात्रों को एक और मौका देते हुए दोबारा प्रेक्टिकल देने के लिए 13 और 14 मार्च की तिथि निर्धारित की गई थी। पहले दिन बुधवार यानि 13 मार्च को सुबह नौ बजे से तीन बजे के बीच प्रेक्टिकल(प्रायोगिक परीक्षाएं) कराई गई, हालांकि प्रेक्टिकल देने वाले छात्रों की संख्या काफी कम रही। बोर्ड प्रेक्टिकल की नोडल अधिकारी तनुजा शर्मा ने बताया कि पहले दिन काफी कम संख्या में छात्रों ने अलग-अलग विषयों के प्रेक्टिकल दिए। अब 14 मार्च को आखिरी दिन है। जिन छात्रों ने प्रेक्टिकल नहीं दिए हैं वह सुबह नौ बजे से तीन बजे तक प्रेक्टिकल दे सकता है। ये परीक्षाओं में शामिल होने वाले उन छात्रों के पास सुनहरा मौका है जिन्होंने किसी वजह से प्रेक्टिकल नहीं दिए।

फिरोजाबाद में अस्पताल पर छापा मारने वाली एसडीएम को अखिलेश यादव ने किया सचेत, सरकार पर साधा निशाना

प्रात : किरण

लखनऊ/एजेंसी। उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में मरीज बनकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण करने वाली एसडीएम सदर को समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सचेत किया है और कहा कि दवाई से रोगी को ठीक करने की जुमांटी (जुमला गारंटी) देने वाली सरकार का अंत तय है।

सपा मुखिया अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि स्वयं घूंघट में जाकर, उप्र की चिकित्सा व्यवस्था से पर्दा उठाकर सच्चाई दिखानेवाली साहसी महिला अधिकारी को संभलकर रहना होगा नहीं तो इस डॉक्टर-दवाई के बिना चलनेवाली उप्र की बीमारू चिकित्सा व्यवस्था के गोरखधंधे के खुलासे से शर्मसार हुई भाजपा सरकार कहीं ज्ञानवर्धन के बहाने उनको अध्ययन हेतु विदेश ही न भेज दे। उन्होंने कहा, सुना है इस खुलासे के बाद स्वास्थ्य मंत्री जी ह्यअस्वस्थ-अवस्था में हैं। अब एक्सपयरी डेट की दवाई से रोगी को ठीक करने की जुमांटी (जुमला+गारंटी) देनेवाली भाजपा सरकार की भी एक्सपायरी डेट निकट आ गयी है। ज्ञात हो कि उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में मंगलवार को एसडीएम सदर कृतिराज के घूंघट की ओट में मरीज बनकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, दीदामई के निरीक्षण करने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

वह मरीजों के साथ कतार में खड़ी हुई, पर्चा बनवाया और इंजेक्शन लगवाने के लिए काउंटर पर पहुंची। उन्होंने दवाएं चेक करनी शुरू की तो स्टोर में करीब आधी दवाईयां एक्सपायरी डेट की मिली। स्थिति देखकर वह हैरान रह गई। कई मरीजों ने उनसे अस्पताल स्टाफ और व्यवस्थाओं की शिकायत की।

गाजियाबाद में अवैध शराब की बड़ी खेप बरामद जब्त शराब की कीमत करीब 30 लाख रुपए

गाजियाबाद। दिल्ली एनसीआर में प्रशासन की काफी कोशिशों के बाद भी अवैध शराब की तस्करी के मामले खत्म नहीं हो रहे। ताजा मामला गाजियाबाद का है, जहां क्राइम ब्रांच की टीम ने एक ऐसे शराब तस्कर को गिरफ्तार किया है जो पंजाब से अवैध शराब की तस्करी कर अलग अलग राज्यों में सप्लाई करता था। पुलिस ने इनके कब्जे से पांच सौ से ज्यादा पेटी बरामद की है, जिसकी अनुमानित कीमत 30 लाख रुपए है। पुलिस ने एक ट्रक भी जब्त किया है। मामले में पंजाब पुलिस को भी सूचित किया गया है।

गाजियाबाद कमिश्नरेट पुलिस ने लोकसभा चुनाव से पहले शराब की एक बड़ी खेप बरामद की है। पूछताछ में सामने आया कि शराब तस्कर पंजाब से शराब की अवैध तस्करी कर बिहार सप्लाई किया करते थे। क्राइम ब्रांच को मुखबिर से मिली सूचना में इस बात की जानकारी मिली थी कि एक ट्रक में अवैध शराब लाई जा रही है। पुलिस ने ट्रक को ट्रेस करते हुए मुरादनगर इलाके से हिरासत में लिया है। इन अवैध शराब की सप्लाई मुरादनगर और आसपास के इलाकों में भी होनी थी।आरोपी ने पुलिस को बताया की वह ट्रक ड्राइवर का काम करता था लेकिन ज्यादा आमदनी न होने के चलते उसने अवैध शराब की तस्करी करना शुरू कर दिया। आरोपी ने पुलिस को बताया कि एक ट्रक बिहार पहुंचाने के लिए उसे 50 हजार रुपए मिला करते थे। इन रुपए से आरोपी अनूप सिंह घर के खर्चे और शौक पूरा करता था। रास्ते में अलग अलग तस्करों की मदद भी ली जाती थी। पुलिस ने अवैध शराब की तस्करी करने में इस्तेमाल एक ट्रक को भी जब्त किया है। आरोपी अनूप पर कुल दो मामले दर्ज हैं। इस अवैध शराब तस्करी मामले के बाद यहां शराब की तस्करी की वारदात को लेकर पुलिस अलर्ट पर है।

प्रेमिका की किसी अन्य के साथ शादी तय होने से नाराज एक व्यक्ति ने उसका पंजा काट दिया

उन्नाव (उप्र)। उन्नाव जिले में बेहटा मुजावर थाना क्षेत्र के एक गांव में प्रेमिका की शादी दूसरी जगह तय होने से नाराज एक व्यक्ति ने खुरपे से कथित रूप से उसका पंजा काट दिया। पुलिस ने यह जानकारी दी। घायल 20 वर्षीय महिला को अस्पताल में भर्ती कराया गया है और पुलिस ने आरोपी व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) अरविंद कुमार ने बुधवार को बताया कि बेहटा मुजावर थाना क्षेत्र के एक गांव में 20 वर्षीय युवती अपने प्रेमी रिंकू के बुलाने पर मंगलवार शाम को खेत पर पहुंची थी जहां दोनो के मध्य विवाद हो गया। कुमार ने बताया कि विवाद के चलते रिंकू ने खुरपे से वार करके युवती का पंजा काट दिया और मौके से भाग निकला। उन्होंने बताया सूचना पर युवती को पहले बांगरमऊ के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां से उसे लखनऊ रेफर किया गया है। साथ ही युवती के बयान के आधार पर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है।

ग्रामीणों के अनुसार दोनों के मध्य प्रेम प्रसंग चल रहा था। दोनों ने एक-दूसरे से शादी का वादा भी कर रखा था। पिछले दिनों युवती के परिजनों ने उसकी दूसरी जगह शादी तय कर दी थी तथा 14 अप्रैल को सगाई एवं 19 अप्रैल को बारात की तारीख भी निकलवाई। इस पर प्रेमी रिंकू नाराज था। पुलिस सूत्रों के मुताबिक मंगलवार शाम रिंकू ने फोन कर युवती को धोखे से खेत पर बुलाया। युवती घास काटने की बात कहकर खुरपा लेकर खेत पहुंची थी। प्रेमी फिर से उससे शादी की जिद करने लगा। युवती के मना करने पर दोनों में झगड़ा शुरू हो गया। गुस्से में प्रेमी ने युवती के खुरपे से बाएं हाथ का पंजा कलाई के पास से काटकर अलग कर दिया और भाग निकला। क्षेत्राधिकारी कुमार ने कहा, ह्यघटना के कुछ घंटों बाद रिंकू को गिरफ्तार कर लिया गया। हमने मामले को लेकर प्राथमिकी दर्ज कर ली है और जांच शुरू कर दी है।

वाराणसी की एक अदालत ने मुख्तार अंसारी को आजीवन कारावास की सजा सुनायी

प्रात : किरण

वाराणसी (उप्र)/एजेंसी । वाराणसी की एक अदालत ने बुधवार को तीन दशक पुराने फर्जी बंदूक-लाइसेंस मामले में गैंगस्टर-राजनेता मुख्तार अंसारी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

जिला सरकारी वकील विनय सिंह ने बताया, 'न्यायाधीश अवनीश गौतम की विशेष एमपी-एमएलए अदालत ने फर्जी बंदूक लाइसेंस मामले में दोषी ठहराते हुए मुख्तार अंसारी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई।' अंसारी के खिलाफ यह मामला दिसंबर 1990 में गाजीपुर जिले के मोहम्मदाबाद थाने में भादसं की धाराओं 467 (जालसाजी), 468 (धोखाधड़ी के उद्देश्य से जालसाजी) और 120 बी (आपराधिक साजिश) के साथ-साथ हथियार अधिनियम की धाराओं के तहत दर्ज किया गया था। मुख्तार अंसारी बांदा जेल से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अदालती कार्यवाही में शामिल हुआ, जहां वह वर्तमान में बंद है। मऊ सदर सीट से पांच बार विधायक रहे अंसारी ने 2022 का उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव नहीं लड़ा और यह सीट उसके बेटे अब्बास अंसारी ने सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के टिकट पर जीती, जिसने समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन किया था।

उत्तर प्रदेश पुलिस के अधिकारियों के मुताबिक मुख्तार अंसारी के खिलाफ उत्तर प्रदेश, पंजाब, नई दिल्ली और अन्य राज्यों में लगभग 60 मामले लंबित हैं।

उत्तर प्रदेश में अंसारी के खिलाफ गाजीपुर, वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, आगरा, लखनऊ, बाराबंकी, मऊ, आजमगढ़ और अन्य जिलों में मामले दर्ज हैं।अंसारी को अब तक कम से कम सात मामलों में दोषी ठहराया जा चुका है।

नाबालिग को अगवा कर उसके साथ दुष्कर्म करने का आरोपी

बलिया (उप्र)। बलिया जिले के बैरिया थाना क्षेत्र में एक गांव की 17 वर्षीया किशोरी को कथित रूप से अगवा कर उसके साथ बलात्कार करने के आरोपी को पुलिस ने बुधवार को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने यह जानकारी दी। इस मामले में किशोरी के दादा की तहरीर पर सरफराज अंसारी, उसके दो चाचा और भाई-बहन के विरुद्ध नामजद मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस अधीक्षक देव रंजन वर्मा ने बुधवार को बताया कि पुलिस को बुधवार को आरोपी सरफराज अंसारी (19) को सुरेमनपुर रेलवे स्टेशन के समीप अपहृत किशोरी के साथ मिला और पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने बताया कि किशोरी ने पुलिस को बयान दिया है ।

आसाराम बापू से संबंधित बलात्कार कांड में पीड़िता के पिता के कथित फर्जी वीडियो की जांच शुरू

प्रात : किरण

शाहजहाँपुर (उप्र),एजेंसी। उत्तर प्रदेश पुलिस ने आसाराम बापू की संलिप्तता वाले बलात्कार प्रकरण में पीड़िता के पिता के सोशल मीडिया मंच पर वायरल हुए फर्जी वीडियो की जांच शुरू कर दी है।

सोशल मीडिया मंच पर वायरल हो रहे उक्त वीडियो में एक व्यक्ति को यह कहते हुए देखा जा सकता है, ह्यकृपया हमें माफ कर दें। मेरी बेटी ने झूठे आरोप लगाए थे। वीडियो को यह दावा करते हुए प्रसारित किया जा रहा है कि वीडियो में दिख रहा शख्स पीड़िता का पिता है। पीड़िता के पिता ने बुधवार को एक समाचार एजेंसी को बताया कि आसाराम बापू के अनुयायियों द्वारा उन्हें नीचा दिखाने के लिए यह फर्जी वीडियो वायरल किया जा रहा है। उन्होंने कहा, ह्यह्ययह हमारा वीडियो नहीं है और न ही हमने ऐसा कोई बयान दिया है।" उन्होंने कहा कि वीडियो में जो व्यक्ति पीड़िता का पिता बन कर बात कर रहा है, उसका हुलिया तथा आवाज में भी काफी भिन्नता है। उन्होंने कहा, "हमने पुलिस से शिकायत की है कि जिसने यह फर्जी वीडियो वायरल किया है उसके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाये। पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा ने बुधवार को बताया कि उन्हें जैसे ही मामले की जानकारी हुई उन्होंने तत्काल ही कोतवाली प्रभारी को पीड़िता के घर भेजा जहां पीड़िता के पिता ने लिखित रूप से कहा कि वायरल वीडियो उनका नहीं है तथा एक साजिश के तहत इसे वायरल किया गया है।

● मीणा ने कहा,"हम मामले को देख रहे हैं। वायरल वीडियो कहां से आया है इसकी जांच की जा रही है।"

मीणा ने कहा,"हम मामले को देख रहे हैं। वायरल वीडियो कहां से आया है इसकी जांच की जा रही है।" आसाराम बापू (81) ने 2013 में शाहजहांपुर की 16 साल की एक नाबालिग के साथ अपने जोधपुर आश्रम में दुष्कर्म किया था और उन्हें 2018 में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी, जिसके बाद से आसाराम बापू जेल में बंद है।

सीएए पर गलतफहमी फैलाने से बाज आए विपक्ष : निरंजन ज्योति

झांसी। केंद्रीय खाद्य, सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामलों की राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने नागरिक संशोधन अधिनियम (सीएए) को लागू करने को जनहित का कार्य बताया है। उन्होंने कहा कि विपक्ष लोगों में गलतफहमी फैलाने से बाज आए। उन्होंने केजरीवाल को जुमलेबाज बताया।

वंचित वर्गों के लिए आउटरीच कार्यक्रम में शिरकत करने बुधवार को झांसी पहुंचीं साध्वी निरंजन ज्योति ने सर्किट हाउस में पत्रकारों से मुखातिब थीं। सीएए से जुड़े सवाल पर साध्वी निरंजन ज्योति ने कहा कि गृहमंत्री अमित शाह ने स्पष्ट किया है कि यह किसी को परेशान करने के लिए नहीं है बल्कि बांग्लादेश समेत तीन देशों से आए हुए हिंदू, सिख, ईसाई और पारसी शरणार्थियों को नागरिकता देने के लिए है। क्योंकि जब तक नागरिकता नहीं होगी तब तक उनको कोई सुविधा नहीं मिल सकती। इसलिए सीएए से किसी को परेशान नहीं होना चाहिए। यह तो जनहित का कार्य है। कांग्रेस में मची भगदड़ को लेकर उन्होंने कहा कि एनडीए को अभी 400 पार जाने दो तो अभी और तेजी आएगी।

वकीलों की हड़ताल के कारण राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि मामले की सुनवाई नहीं हो सकी

सुल्तानपुर (उप्र)। गृह मंत्री अमित शाह पर कथित आपत्तिजनक टिप्पणी करने के सिलसिले में राहुल गांधी के खिलाफ 2018 में दर्ज किये गये मानहानि मामले में बुधवार को यहां सांसद-विधायक अदालत (एमपी/एमएलए कोर्ट) में वकीलों की हड़ताल के कारण सुनवाई नहीं हो सकी। शिकायतकर्ता के वकील संतोष पांडे ने बताया कि राहुल गांधी से जुड़े इस मामले की आज सुनवाई होनी थी, लेकिन वकीलों की हड़ताल के कारण अदालत ने अब सुनवाई के लिए 22 मार्च की तारीख तय की है। अगस्त 2018 में भाजपा नेता विजय मिश्रा ने एमपी/एमएलए कोर्ट में शिकायत दर्ज कराई थी और आरोप लगाया था कि राहुल गांधी ने शाह के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी की है। गांधी 20 फरवरी को विशेष एमपी-एमएलए अदालत में पेश हुए थे और उन्हें जमानत दे दी गई थी। इसके बाद अदालत ने अगली सुनवाई के लिए दो मार्च की तारीख तय की थी तथा उस दिन उनके वकील काशी प्रसाद शुक्ला ने यह कहते हुए अदालत से और समय मांगा था कि वह भारत जोड़ो यात्रा में व्यस्त हैं। मिश्रा ने 2018 में कर्नाटक चुनाव के दौरान बेंगलुरु में एक संवाददाता सम्मेलन में शाह के खिलाफ कथित आपत्तिजनक टिप्पणी करने पर उसी साल चार अगस्त को गांधी के खिलाफ मामला दर्ज कराया था। विजय मिश्रा भाजपा नेता हैं और सुल्तानपुर के कोतवाली देहात थाने के हनुमानगंज के रहने वाले हैं।

संक्षिप्त खबरें

छापेमारी कर पुलिस ने महुआ शराब की जब्त, कारोबारी फरार

कोचस (रोहतास) बुधवार को पुलिस ने नगर पंचायत वार्ड नंबर 3 में छापेमारी करते हुए ढाई लीटर महुआ शराब को जप्त की है। इसकी जानकारी देते हुए प्रभारी थाना अध्यक्ष विजय कुमार बैठा ने बताया कि शराब के विरुद्ध पुलिस ने कोचस नगर पंचायत के वार्ड नंबर 3 में छापेमारी की जिसमें पुलिस को देख शराब कारोबारी गुड़िया देवी भागने में सफल रही, जबकि उसके यहां से पुलिस ने ढाई लीटर महुआ निर्मित शराब को जप्त कर ली है। वहीं पुलिस कारोबारी के ऊपर मध्य निषेध के तहत कांड दर्ज कर अग्रतर कार्यवाही कर रही है।

दो वारंटी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

कोचस (रोहतास) कोचस थाने की पुलिस ने कोर्ट के द्वारा निर्गत वारंट के आधार पर फरार चल रहे एनबी ब्ल्यू के दो वारंटी को बुधवार को गिरफ्तार कर लिया है। इसकी पुष्टि करते हुए प्रभारी थाना अध्यक्ष विजय कुमार बैठा ने बताया कि एनबी ब्ल्यू के केश मे लंबे समयो से दो वारंटी फरार थे, जिसमे कोर्ट से निर्गत वारंट के आधार पर अमैसी डिहरा गांव के मुकेश कुमार व राहुल कुमार यादव को गिरफ्तार कर लिया गया। जहा कानूनी प्रक्रिया पूरी कर कोर्ट के लिए भेजा जा रहा है।

दो अभियुक्त को गिरफ्तार कर भेजा जेल

बिक्रमगंज(रोहतास)। रोहतास पुलिस ने अलग-अलग जगहों से विविध कांडों के दो अभियुक्त को गिरफ्तार कर जांच के उपरांत जेल भेज दिया है। प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए रोहतास पुलिस कप्तान विनीत कुमार ने बताया कि दिनारा थाना कांड संख्या 61/24 के आलोक में सुसंगत धारा 363/365 भादवि के अभियुक्त पुष्पराज पिता सुनील प्रताप चौरसिया साकिम नया भोजपुर थाना नया भोजपुर जिला बक्सर को गिरफ्तार किया गया । तो वहीं दूसरी ओर बिक्रमगंज थाना कांड संख्या 138 /24 के आलोक में सुसंगत धारा 341/323/384/386/504/506/34 भादवि एवं 25 (1-बी)ए/29 (बी) के अभियुक्त रवि पासवान पिता रमेश पासवान साकिम गोसाई मोहल्ला वार्ड संख्या 12 थाना बिक्रमगंज को एक देसी कट्टा के साथ गिरफ्तार किया गया । उन्होंने बताया कि गिरफ्तार दोनों अभियुक्तों को जांच के उपरांत जेल भेज दिया गया।

मारपीट मामले में तीन अभियुक्त को गिरफ्तार कर भेजा जेल

नासरीगंज(रोहतास)। नासरीगंज पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर मारपीट मामले में संलिप्त तीन अभियुक्त को गिरफ्तार कर जांच के उपरांत जेल भेज दिया। थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र के लाला अतिमी निवासी कांड संख्या 90/24 के आलोक में सुसंगत धारा 341/323/308/379/447/34 भादवि के अभियुक्त अवधेश सिंह तो वहीं दूसरी ओर उक्त मामले में ही उक्त गांव के रहने वाले कांड संख्या 91/24 के आलोक में सुसंगत धारा 341/323/308/34 भादवि के अभियुक्त श्रीनाथ सिंह एवं राजनाथ सिंह को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार तीनों अभियुक्तों को जांच कराने के उपरांत जेल भेज दिया गया।

नासरीगंज पुलिस इंस्पेक्टर के नेतृत्व में चला वाहन जांच अभियान

नसरीगंज(रोहतास)। रोहतास व भोजपुर के बॉर्डर पर पुलिस इंस्पेक्टर नासरीगंज एवं कछवां थाना के द्वारा संयुक्त रूप से वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। जिस क्रम में पुलिस इंस्पेक्टर नासरीगंज के द्वारा 33 हजार 500 रुपये और कछवां थाना के द्वारा 32 हजार रुपये यानी कुल मिलाकर 65 हजार 500 रुपये का ऑनलाइन चालान काटा गया। वाहन जांच के क्रम में लोकसभा चुनाव के मद्देनजर ध्यान में रखते हुए गहन रूप से सभी विदुओं पर छोटे एवं बड़े वाहनों की जांच की गई। इसकी जानकारी कछवां थाना के प्रभारी थानाध्यक्ष मनीष कुमार ने दी।

छापेमारी दौरान 38 कार्टून विदेशी शराब के साथ एक तस्कर गिरफ्तार

दिनारा(रोहतास)। दिनारा पुलिस ने छापेमारी दौरान विदेशी शराब के साथ एक तस्कर को मौके वारदात किया गिरफ्तार, दूसरा फरार। जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष विनय कुमार ने बताया कि लोकसभा चुनाव के मद्देनजर ध्यान में रखते हुए वरीय अधिकारियों के दिशा-निर्देश पर थाना क्षेत्र में शराब माफियाओं के विरुद्ध लगातार छापेमारी अभियान चलाया जा रहा है। उसी क्रम में पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के सरोसर गांव में चिन्हित जगहों पर पुलिस बल के द्वारा सर्च अभियान चलाया गया। जिसमें उक्त चिन्हित जगह से 38 कार्टून विदेशी शराब बरामद किया गया। जिसमें 816 पीस एट पीएम एवं 926 पीस ब्लू लाइम कंपनी का शराब बरामद किया गया। उसी के साथ पुलिस ने मामले में शामिल गिरफ्तार एक शराब तस्कर उक्त गांव का ही रहने वाला मंटू कुमार बताया जाता है।

भारत सरकार के एमएसएमई मंत्रालय के अंतर्गत पीएम विश्वकर्मा योजना पर एक कार्यशाला का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। भारत सरकार के एमएसएमई मंत्रालय के अंतर्गत स्थित एमएसएमईइविकास कार्यालय, पटना द्वारा पटना में बिहार राज्य के उद्योग संघों, चैम्बर्स, सामान्य सुविधा केंद्र (उरउ), बिहार एवं भोजपुर व समीपवर्ती जिले में कार्यरत उद्यमियों के सहयोग से पीएम विश्वकर्मा योजना पर एक कार्यशाला का आयोजन होटल आरा ग्रांड, आरा के सभागार में किया गया। पीएम विश्वकर्मा के तहत पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों को उनके पारंपरिक उत्पादों और सेवाओं को बढ़ाने में शुरू से अंत तक समग्र सहायता प्रदान करने की कल्पना की गयी है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इस योजना के विभिन्न हितधारकों की मदद से इसके विभिन्न पहलुओं पर तकनीकी सत्र में योजना के बारे में वृहद रुप से जागरुकता उत्पन्न करना था।

कार्यक्रम का होटल आरा ग्रैंड के सभागार में किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विक्रम विरकर, भा०प्र०से०, उप- विकास आयुक्त,भोजपुर द्वारा किया गया क कार्यक्रम की अध्यक्षता इस कार्यालय के संयुक्त निदेशक एवं कार्यालय प्रमुख श्री सी०एस०एस० राव, भा०उ०वि०से० ने किया क

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप मे श्री अभिषेक कुमार सिंह, सहायक निदेशक, उद्यमशीलता एवं कौशल विकास मंत्रालय, पटना, श्री सजीव कुमार श्रीवास्तव, क्षेत्रीय प्रबंधक, राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति, भोजपुर, श्री राजेश कुमार चौधरी, अग्रणी जिला प्रबंधक, पीएनबी बैंक, भोजपुर, श्रीमती मधु कुमारी महाप्रबंधक प्रभारी, जिला उद्योग केंद्र, उद्योग विभाग, बिहार सरकार, भोजपुर, श्री आदित्य विजय जैन , महासचिव, भोजपुर चैंबर ऑफ कॉमर्स, भोजपुर, श्रीमती अनिता गुप्ता, जिला संयोजक, लघु उद्योग भारती, बिहार, श्री चंदन कुमार, जिला प्रबंधक, सामान्य सुविधा केंद्र, बिहार, श्री संजीव आजाद, सहायक निदेशक सह भोजपुर जिला समन्वयक, श्री रविकांत, सहायक निदेशक एवं अन्य एमएसएमई हितधारक कार्यक्रम मे सम्मलित हुए एवं उनके द्वारा कार्यक्रम को संबोधित किया गया।

कार्यक्रम के उदघाटन समारोह को संबोधित करते हुए श्री विक्रम विरकर, भा०प्र०से०, उप- विकास आयुक्त,भोजपुर ने बिहार के एमएसएमई उद्यमियों के लिए कार्यक्रम को लाभकारी बताया एवं वर्तमान वैश्विक परिस्थिति में प्रतिस्पर्धा में अपने को सक्षम बनाने हेतु एक कदम बताया। उन्होंने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए एमएसएमई इविकास कार्यालय, पटना के संयुक्त निदेशक एवं कार्यालय प्रमुख महोदय श्री सी०एस०एस० राव को बधाई एवं शुभकामनाएँ ज्ञापित की।

कार्यक्रम के उदघाटन सत्र को संबोधित करते हुए कार्यालय के संयुक्त निदेशक एवं कार्यालय प्रमुख महोदय श्री सी०एस०एस० राव ने कहा कि समाज के हर वर्ग के उत्थान में आवश्यकता को देखते हुई पीएम विश्वकर्मा योजना बहुत ही लाभकारी साबित होगी जो उनको प्रारम्भिक सहायता के साथ ही टूलकिट, प्रशिक्षण एवं वित्तीय सहायता के माध्यम से उनको जीवन में आगे बढ़ने में सहयोग प्रदान करेगा। कारीगरों और शिल्पकारों को विश्वकर्मा के रूप में मान्यता, कौशल उन्नयन, बेहतर और आधुनिक उपकरणों के लिए सहायता प्रदान करना, संपार्श्विक मुक्त ऋण तक आसान पहुँच, डिजिटल लेनदेन के लिए प्रोत्साहन प्रदान करना, ब्रांड प्रचार और बाजार लिंकेज के लिए मंच प्रदान करना, इस योजना के प्रमुख उद्देश्य था।

कार्यक्रम के में पीएम विश्वकर्मा, सामान्य सुविधा केंद्र द्वारा पंजीकरण प्रक्रिया, कौशल एवं उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कौशल उन्नयन इत्यादि विषयों पर प्रतिभागियों हेतु प्रस्तुतिकरण संबन्धित विशेषज्ञों द्वारा दी गई एवं सेमिनार भी आयोजित की गई क कार्यक्रम में श्री सजीव कुमार श्रीवास्तव, क्षेत्रीय प्रबंधक, राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति, भोजपुर द्वारा पीएम विश्वकर्मा योजना के वित्तीय सहायता अवयव पर भी प्रस्तुति दी गयी। उद्योग संघो के के प्रतिनिधियों द्वारा टूलकिट के महत्व एवं उससे होने वाले मुनाफे पर भी प्रस्तुतीकरण दिया गया। कार्यक्रम में 150 से अधिक एमएसएमई प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संयोजन, समन्वयन व स्वागत भाषण सह थीम प्रस्तुतिकरण , इस कार्यालय के श्री सम्राट एम. झा, भा.उ.वि.से. ,सहायक निदेशक ग्रेड-क द्वारा किया गया। कार्यक्रम में पीएम विश्वकर्मा योजना के ऊपर प्रस्तुतिकरण इस कार्यालय के श्री रविकांत, सहायक निदेशक एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री संजीव आजाद, सहायक निदेशक सह भोजपुर जिला समन्वयक द्वारा किया गया।

पीएचडी में नियमों के उल्लंघन पर राज्यपाल को लिखा पत्र

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय द्वारा पी पीएचडी सत्र 2022 में आवेदन लिए जा रहे हैं। मगर पैट प्रवेश परीक्षा में राजभवन द्वारा निर्देशित पीएचडी अधिनियम के उल्लंघन को लेकर सवाल खड़े हुए हैं। पैट की अधिसूचना में नियमों को दरकिनार किये जाने को लेकर पूर्ववर्ती छात्र संघ और दिल्ली सरकार की मैथिली भोजपुरी अकादमी के सदस्य तथा शोधार्थी रवि प्रकाश सूरज ने कुलाधिपति सह राज्यपाल को अलग अलग पत्र भेजकर पैट परीक्षा की अधिसूचना को अविलंब रद्द करने तथा दोषी अधिकारियों को दण्डित करने की मांग की है। पूर्ववर्ती छात्र संघ के सह संयोजक अभिषेक कुमार ने कहा कि पैट सूचना में सीटों की जानकारी नहीं है पिछली बार भी यह कहकर कि बाद में सीटों की संख्या जारी की जाएगी मगर नहीं की गयी जिसका नतीजा यह है कि गणित सहित कई विभागों में कोर्सवर्क के समय विवाद हुआ। न्यूनतम योग्यता में स्नातकोत्तर में 55 % अंक से उत्तीर्ण छात्र अनिवार्य है मगर अपेयरिंग छात्र से भी आवेदन लिए जा रहे। रवि प्रकाश सूरज ने कहा कि राजभवन से निर्देशित और अकादमिक कौंसिल से अनुमोदित फीस ही कोर्सवर्क छात्रों से लिया जाना है मगर 500 रु कम्प्यूटर के नाम पर जबरन वसूले जा रहे। पूर्ववर्ती छात्र संघ ने पूरे मामले को दुःखद बताते हुए कहा कि कुलपति के समक्ष ही राजभवन के परिनियमों की धज्जियाँ उड़ रही हैं और सभी छात्र संघ मौन हैं। भ्रष्टाचार का ऐसा माहौल किसी अन्य विश्वविद्यालय में नहीं इसलिए मजबूर होकर पारदर्शित और स्वच्छ शिक्षा के माहौल की स्थापना के लिए राज्यपाल को लिखा जा रहा है।

चित्रकार रौशन राय को स्टेट सेक्रेटरी का प्रभार सौंपा गया

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। नेशनल आर्टिस्ट एसोसिएशन बिहार स्टेट। भारतीय कलाकार संघ बिहार राज्य, के बैनर तले स्थानीय चित्रकार रौशन राय को स्टेट सेक्रेटरी का प्रभार यानी जिम्मेवारी सौंपा गया है। इस सम्मान के लिए ढेरों चित्रकार समाजसेवी लोगों ने बधाईयां दी है। चित्रकार रौशन राय ने स्थानीय व समकालीन कला को बढ़ावा मिले समाज के मुख्यधारा से कला जुड़ी रहे इसके लिए हमेशा सक्रिय रहते हैं। खासकर स्थानीय भोजपुरी चित्र शैली कोहबर लेखन और पिड़िया लेखन को मुख्यधारा में लाया जाए हमेशा प्रयास किया है। स्थानीय चित्रकार व बिहार के चित्रकारों सहित सबने मिलकर इस जिम्मेदारी के लिए स्वागत अभिनन्दन किया है। कला के क्षेत्र में बेहतर और व्यापक कार्य हो,कला को जनसुलभ और मौलिक बनाया जाए इसी विचार के साथ रौशन राय को स्टेट सेक्रेटरी बनाया गया है। बिहार के वरिष्ठ चित्रकार मुकेश सोना जो बिहार कलाकार संघ के अध्यक्ष हैं इस जिम्मेवारी के लिए बधाईयां दी है। अपने विचार में उन्होंने कहा है कि युवाओं में कला कि समझ विकसित हो और इस क्षेत्र में भी अपना भविष्य ढूंढे। चित्रकार रौशन राय ने कहा कि निश्चित रूप से इस जिम्मेवारी को अपने समझ से बेहतर और व्यापक रूप देने का प्रयास किया जाएगा। स्थानीय कला और समकालीन समझ को समाज के समने रखने का प्रयास किया जाएगा।

आरा रोटी बैंक का 6वां रक्तदान महोत्सव के अवसर पर शिविर का किया गया आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। आरा रोटी बैंक का 6वां रक्तदान महोत्सव अवसर पर रोटी बैंक के तत्वाधान में स्थानीय सदर अस्पताल,भोजपुर (ब्लड बैंक) परिसर में आरा रोटी बैंक के सदस्यों द्वारा रक्तदान महोत्सव शिविर का आयोजन किया गया ।जिसका उद्घाटन संयुक्त रूप से उप विकास आयुक्त विक्रम वीरकर,संतोष सिंह भारद्वाज,उपाधीक्षक डॉ अरुण कुमार,जिला स्वास्थ्य समिति के जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ रवि कुमार,जिला लेखा प्रबंधक अश्विनी कुमार ,प्रधान लिपिक राजीव सिंह,मैनेजर शशि कुमार,मेयर प्रतिनिधि प्रेम पंकज, आरा रोटी बैंक अध्यक्ष श्रीमती सोनाली देवी ने किया। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त विक्रम वीरकर ने कहा आरा रोटी बैंक आरा शहर के लिया गर्व है। आज रक्तदान को प्रखंड स्तर के हर पंचायत तक ले जाने की जरूरत है ।शहर के युवाओं से अपील है कि रक्तदान में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले ।रक्तदान करना सबसे बड़ा पुण्य कार्य है साथ ही समाज को कुछ वापस करने का सबसे बेहतर तरीका है।आरा रोटी बैंक की कार्य प्रणाली वाकई काबिले तारीफ है जहां समाज के अंतिम पायदान के तबके के लिए बेहतर कार्य किया जा रहा है साथ ही आरा रोटी बैंक को हरसंभव मदद का आश्वासन भी दिया। रक्तदान के प्रति जागरूकता का माहौल भोजपुर जिले में देखने को मिल रहा है। फिर भी बहुत सारे लोग है, जिनको अभी भी रक्तदान करने से डर लगता है। तो हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें और जागरूक करें।

आरा रोटी बैंक के संतोष सिंह भारद्वाज ने बतलाया विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा 14जून 1997 से विश्व रक्तदान दिवस मनाने की शुरूआत की गई जिससे समाज में रक्तदान को लेकर एक नई चेतना आ सके और उसी का परिणाम है आज समाज के हर वर्ग के लोग बढ़ चढ़ कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे है। संतोष सिंह भारद्वाज ने ये भी कहा आज के दिन संस्था के 15सदस्यों ने स्वैच्छिक रक्तदान किया और साथ ही हर वर्ष मार्च की 13 तारीख को संस्था द्वारा इसी प्रकार से रक्तदान महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है जैसा कि विदित है आरा रोटी बैंक जरूरतमंदों के बीच विगत 6वर्षों सेसमाज में उनको मुख्यधारा में जोड़ने के लिए कार्य कर रहा है साथ है आने वाले समय में सामाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दे पर भी काम किया जाएगा।

सोनाली देवी ने कहा आरा रोटी बैंक विगत 6वर्षो से ज्यादा से ससमय जरूरतमंदों के रक्त की जरूरत को पूरा करता रहा है और संस्था ने रक्तदान महोत्सव का अयोजन किया जिसमें सभी सदस्य बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया ।साथ ही अपील की गई रक्तदान को लेकर समाज में भ्रांतियां को आज दूर करने की जरूरत है।

इस अवसर पर उपाधीक्षक डॉ अरुण कुमार ने कहा आरा रोटी बैंक समाज के सर्वांगीण विकास के लिए लंबे समय से प्रतिबद्ध है साथ ही डिस्ट्रिक्ट हेल्थ सोसायटी के डीपीएम डॉक्टर रवि कुमार, डैम अश्विनी कुमार , ए एन एम स्कूल प्रचार्या ममता भर्ती,राजीव सिंह आदि उपस्थित होकर आरा रोटी बैंक टीम का उत्साहवर्धन किया। मेयर प्रतिनिधि प्रेम पंकज ने कहा आरा रोटी बैंक सामाजिक उत्थान की दिशा में लंबे अरसे से कार्य करते आ रहा है इनके द्वारा किया गया कार्य सराहनीय है साथ ही आने वाले समय में रक्तदान को लेकर जिला स्तर पर जागरूकता अभियान आरा रोटी बैंक के माध्यम से चलाया जाएगा। रक्तदान महोत्सव को सफल बनाने में आरा रोटी बैंक के सोनाली देवी,सोनाली पाल,निशा गुप्ता,अखौरी दीपक बिहारी, अमिताभ शंकरने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। धन्यवाद ज्ञापन मुक्तिकांत ने दिया।

आरा नगर थाना क्षेत्र में दिनदहाड़े युवक को मारी गोली, हालत गंभीर

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। आरा नगर थाना क्षेत्र में नकाबपोश बाइक सवार हथियारबंद अपराधियों ने दिनदहाड़े एक युवक को गोली मार दी। गोली लगने के बाद युवक घायल होकर वही गिर पड़ा। जिसके बाद स्थानीय लोगों ने आनन-फानन में युवक को निजी अस्पताल में भर्ती कराया और इसकी जानकारी परिजनों को दी। बताया जाता है कि घायल युवक किसी व्यक्ति को जमीन दिखाने जा रहा था तभी पहले से घात लगाए बैठे अपराधियों ने हमला बोल दिया। अपराधियों ने युवक पर गोली दाग दी। गोली युवक के पेट में जा लगी। जिसके बाद घटनास्थल पर अफरा-तफरी मच गयी। घटना आरा नगर थाना क्षेत्र के धरहरा स्थित जहूर आईटीआई के पास की है।

घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू की। घटना के संबंध में भोजपुर एएसपी परिचय कुमार ने बताया की घायल युवक की पहचान हो गयी है। नगर थाना क्षेत्र के अहिरपुरवा निवासी 35 वर्षीय दीपनारायण सिंह अपने एक साथी के साथ जमीन के सिलसिले में गया था। तभी पहले से घात लगाये बैठे 3 अपराधियों ने गोली मार दी।

एएसपी ने बताया कि अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है। उन्होंने दावा किया कि जल्द ही सभी आरोपी सलाखों के पीछे होंगे। वही घायल युवक का इलाज कर रहे डॉक्टर विकास सिंह ने बताया कि युवक को दाहिने साइड कमर के पास गोली लगी है जो पेट में जाकर फंस गई। गोली निकालने के लिए युवक का ऑपरेशन किया जा रहा है। ऑपरेशन के बाद उसे ऑब्जरवेशन में रखा जाएगा।

बालू माफियाओं के द्वारा बालू खनन नीति के नियमावली को ताक पर रखकर बालू का किया जा रहा है खनन

प्रात: किरण संवाददाता

रोहतास। बिहार के रोहतास जिले में बालू माफिया अधिकारियों को अपनी जेब में और नियमों को ताख पर रखकर अवैध रूप से बालू का खनन कर रहे हैं। जैसे मानो इन्हें ना तो कोई अधिकारियों का भय है और ना ही नियमो के पालन की चिंता। बस बालू माफिया किसी तरह से सोन नदी का दोहन करके बालू खनन कर अकूट धन अर्जित करना ही उनका लक्ष्य है।

ऐसा ही कुछ नजारा रोहतास जिले के इंद्रपुरी थानाक्षेत्र के कटार बालू घाट पर देखने को मिल रहा है। दरअसल कटार बालू घाट के संचालक के द्वारा निर्धारित सीमा क्षेत्र से बाहर जाकर अवैध रूप से पोकलेन मशीनों के द्वारा सोन नद से बालू का खनन किया जा रहा है। निर्धारित सीमा से तकरीबन तीन किलोमीटर की दूरी पर डेहरी नगर थानाक्षेत्र के औधोगिक क्षेत्र स्थित सुधा डेयरी प्लान्ट और एनीकट टाल बाँस के सामने सोन नद के बीचो-बीच बालू का अवैध रूप से खनन किया जा रहा है। अपने सीमांकित क्षेत्र से तकरीबन तीन किलोमीटर की दूरी पर घाट संचालक के द्वारा बड़े-बड़े पोकलेन मशीनों से ट्रको पर बालू लोड किया जा रहा है।

जबकि बालू खनन नीति के अनुसार अपने सीमांकित सीमा क्षेत्र में ही बालू खनन करने की अनुमति है। इसके साथ ही पोकलेन मशीनों से ट्रक के ऊपर बालू लोड करने की अनुमति नहीं है। ट्रको पर बालू मजदूरों द्वारा ही लोड करने की अनुमति है। जिस तरीके से घाट संचालक के द्वारा बालू खनन नीति और नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के नियमों को ताख पर रखकर बालू का अवैध रूप से खनन किया जा रहा है उससे सोन नद और पर्यावरण को काफी नुकसान हो रहा है। जिसके कारण अभी से ही जल संकट की समस्या उत्पन्न होने लगी है। अगर समय रहते अधिकारियों के द्वारा ऐसे घाट संचालकों पर कड़ी कार्रवाई नहीं की गई तो आने वाले समय में सोन तट से सटे जिलों को जल संकट सहित अन्य समस्याओं से जूझना पड़ेगा।

बालू घाटो द्वारा नियमों का उल्लंघन कर बालू खनन करने के कारण सोन नद के डीलो पर खेती कर रहे हैं किसानों के फसलों को काफी नुकसान हो रहा है। खेती कर रहे किसान कमलेश चौधरी ने बताया कि कटार बालू घाट के संचालक के द्वारा तीन किलोमीटर दूर बीच सोने में पोकलेन मशीनों के द्वारा बालू खनन कर ट्रको पर बालू लोड किया जा रहा है जिसके कारण हम लोगों के फसलों को बालू माफियाओं द्वारा बलपूर्वक ध्वस्त कर दिया गया है। इसका विरोध करने पर घाट संचालक के द्वारा मारपीट और लूटपाट का झूठा आरोप लगाकर उनके विरुद्ध थाने में मुकदमा दर्ज कर उन्हें झूठे केस में फंसा दिया जा रहा है। और इसके साथ ही उन्हें धमकी भी दी जाती है। कई बार अधिकारियों से गुहार लगाने के बावजूद भी बालू माफिया पर कार्रवाई नहीं की जाती है बल्कि उल्टे उन्हीं के ऊपर मुकदमा दर्ज करने झूठे केस में फंसा दिया जा रहा है। ेहतास जिले के खनन विभाग के अधिकारी बालू घाट संचालको से बालू खनन नीति के नियमों का अनुपालन करने में विफल साबित हो रहे हैं। जिला खनन पदाधिकारी के अलावा अनुमंडल स्तर पर सरकार के द्वारा खान निरीक्षक की प्रतिनियुक्ति की गई है। लेकिन जिस तरीके से कटार बालू घाट संचालक के द्वारा सोन नद में अपने निर्धारित सीमाक्षेत्र से अधिक क्षेत्र में बालू का अवैध रूप से खनन किया जा रहा है उससे साफ जाहिर हो रहा है की कटार बालू घाट संचालक को बालू खनन नीति और एनजीटी के नियमों की खुली छूट मिली हुई है। यही नही बालू माफियाओं के द्वारा बीच सोन नद में कृत्रिम बाँध बनाकर सोन नद की धारा को मोड़ दिया जा रहा है। जिसके कारण सोन नदी और पर्यावरण सहित किसान के फसलों को काफी नुकसान हो रहा है। नियमानुसार जिला खनन पदाधिकारी के साथ-साथ खान निरीक्षकों को सभी बालू घाटों का निरीक्षण नियमित रूप से करना है। लेकिन खनन विभाग के अधिकारियों द्वारा उक्त घाट संचालक पर मेहरबान होने का मतलब सभी को सभी को समझ मे आ रहा है।

वही इस मामले में डेहरी अनुमंडल पदाधिकारी सूर्य प्रताप सिंह ने कहा कि ऐसी सूचना प्राप्त हुई है कि कटार बालू घाट संचालक के द्वारा अपने सीमांकित क्षेत्र से बाहर जाकर बालू का खनन किया जा रहा है। वही सोन नद में कृत्रिम बाँध बांधकर सोन नदी की धारा को मोड़ा गया है। एसडीएम और एसडीपीओ के नेतृत्व में संयुक्त रूप से नियमों का उल्लंघन कर बालू का खनन करने वाले घाट संचालकों को चिन्हित कर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। वही सोन नदी में बनाये गये कृत्रिम बाँध को भी ध्वस्त किया जाएगा। इसके साथ ही बार-बार नियमों का उल्लंघन करने वाले लोगों को चिन्हित कर उनके विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

राशन देने में डीलर करें मनमानी तो उपभोक्ता जल्द करें शिकायत : एसडीएम

बिक्रमगंज (रोहतास) यदि राशन देने में डीलर करें मनमानी तो राशन कार्ड धारक जल्द शिकायत करें। इसको लेकर अनुमंडल पदाधिकारी अनिल बसाक ने सभी उपभोक्ताओं से अपील करते हुए बताया कि वह अपनी शिकायत स्वयं एसडीएम अनुमंडल कार्यालय पहुंच कर सकते है। जो उनके द्वारा लगातार अनुमंडल क्षेत्र के विभिन्न प्रखंडों में औचक जांच से जन वितरण प्रणाली के डीलरों में हड़कंम मची है। वही कार्डधारकों में एसडीएम के इस सराहनीय कार्य से खुशी व्याप्त है।

ज्ञात हो कि विगत दिनों उन्होंने बिक्रमगंज अनुमंडल क्षेत्र के लगभग 30 जन वितरण दुकानों का अबतक औचक निरीक्षण करते हुए बहुत से डीलरों से स्पष्टीकरण की मांग भी किया है। जिसमें नोहर और परसिया के डीलरों पर जन वितरण दुकान की जांच खामियां मिलते है उनके विरुद्ध एसडीएम द्वारा प्राथमिकी दर्ज भी कराया गया है। दूसरी तरफ देखा जाए तो जगहों पर राशन डीलर या तो चावल या गेहूं ही देते हैं और वह भी पूरी मात्रा में वजन भी लोगों को नहीं मिल पाता है। जिसको लेकर उपभोक्ता निरंतर डीलरों से शिकायत भी करते है। जिसके बाद डीलर उनकी राशन कार्ड को बंद कराने की बातें कह उन्हें डराते नजर आते है। दूसरी तरफ एसडीएम अनिल बसाक ने राशन कार्डधारकों को जागरूक करते हुए बताया कि केंद्र सरकार कोविड के दौर में गरीबों की मदद के लिए शुरू की गई 'मुफ्त राशन योजना' जिस योजना को पीएम नरेंद्र मोदी द्वारा अगले 5 साल और बढ़ाने का ऐलान किया गया है। जो सत्र 2024 ही नहीं, बल्कि 2029 के चुनाव से पहले तक विभिन्न प्रकार के मुफ्त राशन मिलेगी। जो प्रधानमंत्री योजना तहत बिहार में भी फ्री राशन उपभोक्ताओं को मिलेगी। लेकिन कई जगहों पर देखा जाता है कि राशन डीलर या तो चावल या गेहूं ही देते हैं और वह भी पूरी मात्रा में लोगों को नहीं मिल पाता है। जिसे लेकर लोग परेशान रहते हैं कि आखिर राशन पूरी मात्रा में नहीं मिल रहा है तो इसकी शिकायत किससे और कहां करनी चाहिए।

वाणी, भोजन एवं व्यवहार सत्य होना चाहिए : जीयर स्वामी

बिक्रमगंज(रोहतास):बिक्रमगंज प्रखंड के जोन्ही निज ग्राम में 11 मार्च से चल रहे श्री लक्ष्मी नारायण महायज्ञ में श्री लक्ष्मी प्रपन्न जीयर स्वामी जी महाराज ने कहा कि माता देवहुति ने अपने पुत्र भगवान कपिलदेव जी से पूछा कि आत्मोद्धार कैसे हो सकता है । उन्होंने बताया कि आत्मोद्धार का सबसे सरल तथा सहज उपाय यह है कि मन को जगत के साथ साथ जगदीश में भी जोड़िए ।

मन को केवल जगदीश में जोड़ना संभव नही है । उसी प्रकार से जगदीश में यदि संबंध जोड़ लेते हैं तो सही मायने में हमें जगत का संबंध पास कर लेगा । जगत का व्यवहार हमें पास कर देगा । अगर जगदीश से संबंध में पास नही करते हैं तो व्यवहार से जगत से पास होने के बाद भी फेल माने जाएंगे । इसलिए जगत की व्यवस्था में रहें लेकिन जगदीश से संबध जोड़ कर रहें । कहीं किसी कारण से जाने अनजाने में बुरी आदत जो हो उसको त्याग दीजिए । हर पल हर क्षण उसके जीवन का कार्य हमारा भजन बन जाएगा । स्वामी जी महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत महापुराण में बताया गया है कि बंधन और मोक्ष का कारण मन है । यदि जगदीश में फंसा हुआ है तो मोक्ष है । यदि मन कहीं जगत में फंसा हुआ है तो बंधन है ।

मोक्ष का सरल और सहज साधन मन है । मन को अपने आप में दुनिया से समेट लिए तो ठीक है । यदि मन को दुनिया में लगा दिए तो कहीं न कहीं उलझन में फंसना जरूरी है । उन्होंने कहा कि सत्य ही नारायण हैं और नारायण ही सत्य हैं । भक्ति को पुष्टि करने के लिए 15 साधन बताया गया है । पहला यम नियमादि का पालन करना । वाणी , भोजन और व्यवहार सत्य होना चाहिए । हमारी धारणा व ध्यान भी एकाग्रचित होना चाहिए, इसी का नाम सत्य है । अगर नारायण से हमारा प्रेम नहीं हुआ तो हमारे द्वारा जो सत्य बोला गया है सत्य बोलने पर भी उसका फल प्राप्त नही होगा । मौके पर प्रवचन स्थल पर हजारों की संख्या में श्रद्धालु लोग मौजूद थे ।

सीएचसी काराकाट में बच्चों के जीवन से खिलवाड़, टीकाकरण में बरती अनियमितता

स्वास्थ विभाग कर्मी पर ग्रामीण ने लगाया गंभीर आरोप, ग्रामीणों ने की जांच कर कानूनी कार्रवाई की मांग

काराकाट (रोहतास): काराकाट प्रखंड क्षेत्र के नन्हे बच्चों के साथ सीएचसी काराकाट द्वारा टीकाकरण में भारी अनियमितता बरतने का मामला प्रकाश में आया है । काराकाट प्रखंड में स्वास्थ विभाग का अक्सर शिकायत मिलने से लोगों में भय व्याप्त हो गया है । बच्चों के साथ खिलवाड़ करने से स्वास्थ्य कर्मी बाज नहीं आ रहे है । मामला मोथा पंचायत के संसार डिहरी गांव का हैं जहां टीकाकारण केंद्र पर एएनएम बिंदु कुमारी ने 4 माह के बच्ची आनवी कुमारी को पांच प्रकार का इंजेक्शन दिया गया । जिसमे एक इंजेक्शन पेंटा-3 लगाया गया । जिसके बाद बच्ची के पिता दिव्य प्रकाश पांडेय ने बुखार की टैबलेट या सीरप की मांग किया तो किसी प्रकार की दवा नहीं होने की बात बतायी । दिव्य प्रकाश पांडेय ने बताया कि एएनएम का कहना था कि सीएचसी काराकाट से बुखार की कोई दवा नहीं दी जाती है । बताया कि अब तक एक बार भी बुखार की कोई दवा नहीं दी गयी उसके बाद हमने बुखार की दवा की मांग किया उसके बाद भी दवा नहीं होने का बहाना बना दिया गया । सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ०. राजीव कुमार का नाम लेते हुये बताई कि बुखार की दवा मांगने पर अनसुना करते है । संसारडिहरी गांव के केंद्र पर 16 बच्चों का टीकाकरण किया गया लेकिन किसी बच्चे को बुखार की दवा नहीं दी गई । गौरतलब हो कि सामान्यतः टीकाकरण के बाद बच्चों में हल्की बुखार आने की शिकायत होती है। उसके लिए स्वास्थ्य विभाग से पैरासिटामोल का टैबलेट्स या बुखार का सीरप दिया जाता है लेकिन एएनएम बिंदु कुमारी से जब बच्चों के परिजनों ने बुखार दवा की मांग किया तो बताया गया कि सीएचसी से ही दवा नहीं दिया गया तो हम लोग कहां से दवा देंगे । इस पर बच्चों के परिजनों से एएनएम से काफी नोक झोंक हुआ । जब इसकी जानकारी सीएचसी प्रभारी चिकित्सा डॉ०. राजीव कुमार से लि गई तो उन्होंने कहा कि सीएचसी काराकाट से बुखार के लिए काफी मात्रा में दवा उपलब्ध है । एएनएम की भारी लापरवाही है जान बूझकर दवा नहीं ले गयी है और सीएचसी को बदनाम करती है । बताया गया कि सुनने में आया कि परिजन से नोक झोंक भी कर रही थी। ये मामला मेरे पास आया है । इसकी जांचकर कर कारवाई की जाएगी ।

दो दिवसीय किसान मेला सम्पन्न

बिक्रमगंज(रोहतास)। बिक्रमगंज कृषि विज्ञान केंद्र बिक्रमगंज के द्वारा बुधवार को अनुसूचित जाति ऊप योजना के अंतर्गत आयोजित किसान मेले का सफलता पूर्वक समापन किया गया । जिस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी बिक्रमगंज त्रिलोकी नाथ सिंह मौजूद रहे । कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए केंद्र की प्रधान वैज्ञानिक डॉ शोभा रानी ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र किसानों के लिए ज्ञान का मंदिर है एवं किसानों की सेवा के लिए तत्पर है । केंद्र द्वारा आयोजित किसान मेला कृषि एवं उससे जुड़े हुए अन्य क्षेत्रों की नवीनतम तकनीकियों को किसानों के बीच पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है । इस मेले में कई तरह के कृषि यंत्र जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के ग्रामों में किसानों को उपलब्ध कराए जा रहे हैं । केंद्र में अवस्थित विभिन्न प्रत्यक्षण इकाइयों के द्वारा किसानों को समेकित कृषि, वर्मी कंपोस्ट उत्पादन, मशरूम उत्पादन, मत्स्य पालन, सेड नेट, पॉलीहाउस इत्यादि की जानकारी प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण के माध्यम से अनवरत दी जा रही है । मेले के दूसरे दिन तकनीकी सत्र के बाद विभिन्न तरह के प्रतियोगिताओं का प्रमाण पत्र वितरण किया गया ।

फिल्मों से अलग कुछ नया करना चाहता हूं

अभिनेता सनी देओल इन दिनों सुर्खियों में बने हुए हैं। गदर 2 की सफलता के बाद अब अभिनेता अपनी अगली फिल्म की तैयारी में जुट गए हैं। सनी राजकुमार संतोषी के निर्देशन में बनने वाली फिल्म लाहौर 1947 में अहम भूमिका निभाते दिखाई देंगे।

कुछ नया करना चाहता हूं

साल 2023 में सनी देओल की फिल्म गदर 2 ने बॉक्स ऑफिस के तमाम रिकॉर्ड को ध्वस्त किया था। इस फिल्म में वे अमीषा पटेल के साथ दिखाई दिए थे। हाल ही में अभिनेता ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा, मैं फिल्मों के अलावा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी काम करने के लिए तैयार हूं। मुझे वेब सीरीज में काम करने से कोई परेशानी नहीं हैं। अगर मुझे अलग और नया विषय मिले तो मैं जल्द ही ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी आपको दिखूंगा।

एक्शन फिल्मों से कुछ अलग करने की ख्वाहिश

सनी अपनी बात जारी रखते हुए कहते हैं, साल 2025 मेरे लिए एक दिलचस्प साल होने वाला है। इस साल मेरी फिल्में मेरे करियर का दिशा तय करने वाली हैं। मैं चाहता हूं कि नई पीढ़ी के दर्शक भी मेरे काम को देखे और सराहे। मैं अब उन विषयों पर काम करना चाहता हूं जिन पर फिल्में नहीं बन सकती हैं। मैं वैसी वेब सीरीज में काम करना चाहता हूं जो मेरी फिल्मों से अलग हों। मेरा चाहता हूं जब दर्शक मुझे ओटीटी पर देखें तब उन्हें लगे कि मैंने कुछ बढ़िया और नया किया है।

सनी का वर्क-फ्रंट

सनी देओल इन दिनों आमिर खान के प्रोडक्शन में बन रही फिल्म लाहौर 1947 की शूटिंग में व्यस्त हैं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो इस फिल्म में वे अपने पिता धर्मेंद्र और बेटे करण देओल के साथ नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में वे पहली बार शबाना आजमी के साथ भी काम करते दिखाई देंगे। वहीं, सूत्रों की मानें तो सनी देओल फिल्म सफर और बॉर्डर के सीक्वल में भी अपने अभिनय का जलवा बिखरते नजर आने वाले हैं।

अपने किरदार के लिए एक महीने तक वर्कशॉप्स की थीं

मीरा देओस्थले इन दिनों अपने नए टीवी शो कुछ रीत जगत की ऐसी है को लेकर चर्चा में हैं। ये शो हाल ही में सोनी टीवी पर शुरू हुआ है।

आप इस शो से कैसी जुड़ी?

मुझे ऑडिशन के लिए कॉल आया, इसके बाद मैंने ऑडिशन दिया, फिर मेकर्स ने मुझे ऑफिस बुलाया और स्टोरी का नरेशन दिया था। जैसे ही मैंने स्टोरी सुनी, मेरा इससे दिल जुड़ गया और फिर मुझे लगा कि ये किरदार करना चाहिए। इसके बाद मेरा मॉक शूट हुआ और मैं सेलेक्ट हो गई।

आप अपने किरदार के बारे में बताइए?

मेरे कैरेक्टर का नाम नंदिनी है। इस शो में नंदिनी अपना दहेज वापस मांगती है। ये शो सिर्फ उसके बारे में नहीं है बल्कि एक सुंदर सी लव स्टोरी है। हमारे शो का बैकड्रॉप गुजरात से है। नंदिनी एक ऐसी लड़की है, जो अपनी जिंदगी अच्छे तरीके से जीना जानती है। अपने मामा मामी के साथ रहती है। बहुत केयरिंग है और बहुत लविंग है, लेकिन साथ ही साथ उसके मोरल और वैल्यूज हैं। यह आगे चलकर नरेन से मिलती है और उसे प्यार करने लगती है।

ऑडियंस आपका वे शो क्यों देखेगी?

मेरे ख्याल से यह कहानी काफी अट्रैक्ट करेगी क्योंकि अब तक जैसा रिस्पॉन्स रहा है वह बहुत ही पॉजिटिव रहा है और सबका फीडबैक यही रहा है कि यह शो थोड़ा अलग है। इस तरह के सब्जेक्ट के काफी शोज बने हैं लेकिन एक लड़की दहेज वापस मांगे ऐसे कम शो बने हैं। कहा जाए तो ऐसे शो दिखाई ही नहीं दिए हैं। यह बिल्कुल ही अलग सब्जेक्ट है। तो मैं उम्मीद करती हूं कि लोगों को मजा आएगा।

फिल्मों में आप किस एक्टर के साथ काम करना चाहती हैं, किसको अपना आदर्श मानती हैं?

बहुत सारे एक्टर है जिनके साथ में स्क्रीन शेयर करना चाहती हूं। बॉलीवुड एक्ट्रेस की बात करूं तो में ब्लेस्ड महसूस करती हूं क्योंकि मैने उड़ान के समय शाहरुख खान के साथ शूट किया था। तो मेरे ख्याल से मेरा अल्टीमेट ड्रीम तो पूरा हो गया है। मेरा ड्रीम है रणबीर कपूर, शाहिद कपूर, रणवीर सिंह, विकी कौशल के साथ काम करने का।

आज के समय में सोशल मीडिया कितना जरूरी है?

अगर मैं सच कहूं तो मैं इतनी ज्यादा सोशल मीडिया पर एक्टिव नहीं हूं, लेकिन में फिर भी कोशिश करती हूं कि में सोशली जुड़ी रहूं। मैं समझती हूं कि सोशल कनेक्ट करना बहुत ही इंपॉर्टेंट है। में अपनी लाइफ से जुड़ी अपडेट्स, फोटो रॉल्स और कंटेंट पर काम कर रही हूं।

जेएनयू में नजर आएंगे रवि किशन और रश्मि देसाई

जेएनयू की पहली झलक सामने आ गई है। मेकर्स द्वारा जारी किए गए पोस्टर पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'जेएनयू' लिखा हुआ है और 'जेएनयू' के नीचे इसका पूरा नाम लिखा है। इस फिल्म का पूरा नाम जेएनयू- जहांगीर नेशनल यूनिवर्सिटी है। इसके साथ ही पोस्टर पर भारत का नक्शा भी छपा हुआ है। भारत के नक्शे को किसी ने अपने हाथ में पकड़ा हुआ है और नक्शे पर लिखा है, क्या एक शैक्षणिक विश्वविद्यालय देश को तोड़ सकता है? फिल्म क्रिटिक तरण आदर्श ने पोस्टर रिलीज की जानकारी देते हुए लिखा, पहला पोस्टर रिलीज हो गया है.... फिल्म 5 अप्रैल के दिन रिलीज होगी...शिक्षा की बंद दीवारों के पीछे देश को तोड़ने की साजिश रची जाती है। तरण आदर्श ने अपनी पोस्ट में ये भी बताया कि इस फिल्म में सिद्धार्थ बोडके, उर्वशी रौतेला, पीयूष मिश्रा, रवि किशन, विजय राज, रश्मि देसाई, अतुल पांडे और सोनाली सेगल नजर आने वाले हैं। बता दें, इस फिल्म का निर्देशन विनय शर्मा करेंगे। वहीं प्रोड्यूस प्रतिमा दत्ता कर रही हैं। ये फिल्म 5 अप्रैल के दिन पीवीआर आईनॉक्स में रिलीज होगी। लोग फिल्म के पोस्टर पर रिएक्ट कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, ये वही बॉलीवुड है जो हिंदू विरोधी फिल्में बनाता था और अब कुछ लोग असली सच्चाई दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। बहुत बढ़िया। दूसरे यूजर ने लिखा, एक और फैक्ट पर आधारित फिल्म। तीसरे यूजर ने लिखा, सच्चाई को सामने लाने की जरूरत है। वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इसे प्रोपागेंडा फिल्म बता रहे हैं।

हमेशा से लव मैरिज करना चाहती थीं कृति खरबंदा!

पुलकित सम्राट और कृति खरबंदा इन दिनों अपनी शादी की खबरों को लेकर छाए हुए हैं। इस साल जनवरी में दोनों की रोका सेरेमनी हुई। इसके बाद से फैंस को इनकी शादी का इंतजार है, जिसकी तारीख का खुलासा अभी तक नहीं हुआ है। आए दिन लोग कपल की शादी की तारीख को लेकर अटकलें लगाते रहते हैं। अब खबर आ रही है कि पुलकित और कृति की शादी दिल्ली में होगी और कपल चार दिन का प्री-वेडिंग कार्यक्रम भी रखेंगे। इस बीच कृति ने बताया है कि वे हमेशा से ही लव मैरिज करना चाहती थीं।

हाल ही में, कृति का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें अभिनेत्री अपनी शादी को लेकर कई दिलचस्प खुलासे करती नजर आ रही हैं। कृति ने कहा मैं लव मैरिज के पक्ष में हूं। मैं उस तरह का व्यक्ति नहीं हूं, जिसे प्यार में पड़ने का निर्देश दिया जा सके, जिससे आपको प्यार होता है, वह इंसान बाकियों से काफी अलग हो जाता है और इसलिए मैं लव मैरिज को काफी सपोर्ट करती हूं।

शादी को लेकर कही थी यह बात

कृति ने आगे कहा, मैं शायद वैसी नहीं हूं। मेरे परिवार के सदस्य एक व्यक्ति से मिले और शादी करने का फैसला किया। उनकी शादियां बहुत अच्छी तरह से चलीं। मैं उससे थोड़ी अलग हूं क्योंकि मैं प्यार और साथ में विश्वास करती हूं। प्यार और साथ से ही हम किसी को अपना बना सकते हैं और उसके साथ जिंदगी भर साथ चलने का एक भरोसा कायम कर सकते हैं।

शादी के बंधन में बंधने वाले हैं कृति-पुलकित

पुलकित सम्राट और कृति खरबंदा जल्द ही पति-पत्नी बनने वाले हैं। कपल साल 2019 से एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। दोनों मार्च 2024 में शादी करेंगे। एक नई रिपोर्ट में कहा गया है कि पुलकित और कृति की शादी दिल्ली में होगी।

डायरेक्टर विपुल मेहता की अगली फिल्म में नजर आएंगी हुमा कुरैशी

हुमा कुरैशी को इन दिनों वेब सीरीज महारानी 3 में देखा जा रहा है, जिसमें उनकी अदाकारी की खूब प्रशंसा हो रही है। इस सीरीज को आप ओटीटी प्लेटफॉर्म सोनी लिव पर देख सकते हैं। इस सीरीज में हुमा के अलावा अमित सियाल, विनीत कुमार, प्रमोद पाठक, कानी कुसृति, अनुजा साठे, सुशील पांडे और दिव्येंदु भट्टाचार्य भी हैं। अब अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) के खास मौके पर हुमा ने अपनी नई फिल्म का ऐलान कर दिया है, जिसके निर्देशन की कमान विपुल मेहता ने संभाली है। ज्योति देशपांडे और विशाल राणा इस फिल्म के निर्माता हैं। बेशक हुमा की फिल्म का शीर्षक अभी तय नहीं हुआ है, लेकिन उनकी नई फिल्म का पहला पोस्टर सामने आ चुका है। हुमा ने पोस्टर शेयर करते हुए लिखा... मैं इस अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर एक अभूतपूर्व फिल्म की घोषणा में विशाल राणा और जियो स्टूडियो के साथ जुड़कर रोमांचित हूं। एक ऐसी कहानी के लिए बने रहें, जो हर जगह महिलाओं की अदम्य भावना का जश्न मनाती है। फिल्म की शूटिंग जल्द शुरू होगी। वर्कफ्रंट की बात करें तो हुम जल्द ही कॉमेडी शो मैडनेस मचाएंगे इंडिया को हंसाएंगे में नजर आएंगी। यह शो अनुभवी हास्य कलाकारों के साथ बड़े शानदार ढंग से हर तरह की कॉमेडी पेश करेगा। इस शो में हुमा कुरैशी भी एक कॉमेडी चैंपियन की भूमिका निभाएंगी।

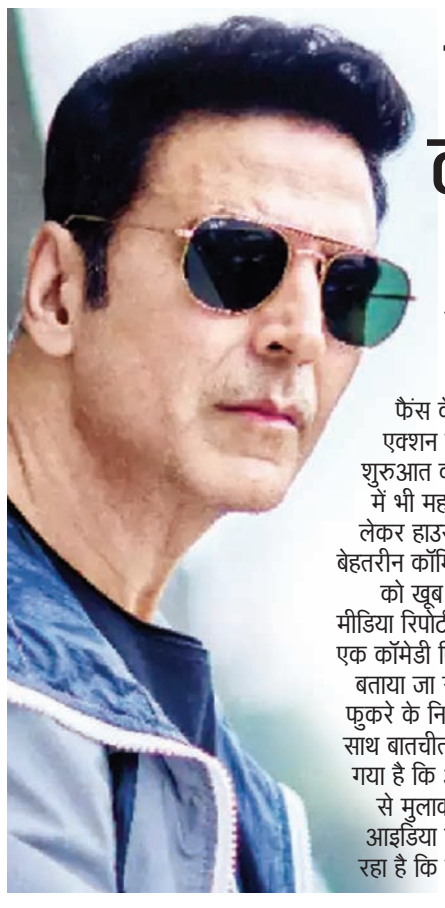

कॉमेडी से लोगों को हंसाने को तैयार अक्षय कुमार

अक्षय कुमार हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के सबसे व्यस्त कलाकारों में से एक हैं। 90 के दशक से अब तक वे अपनी अदाकारी से करोड़ों फैंस के दिलों पर राज कर रहे हैं। एक्शन फिल्मों से अपने करियर की शुरुआत करने वाले अक्षय को कॉमेडी में भी महारत हासिल है। हेरा फेरी से लेकर हाउसफुल फ्रेंचाइजी तक, अपनी बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग से उन्होंने लोगों को खूब गुदगुदाया है। एक नवीनतम मीडिया रिपोर्ट के अनुसार अक्षय जल्द ही एक कॉमेडी फिल्म में नजर आने वाले हैं। बताया जा रहा है कि इसके लिए उनकी फुकरे के निर्देशक मृगदीप सिंह लांबा के साथ बातचीत चल रही है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अक्षय ने हाल ही में निर्देशक से मुलाकात की और उन्हें फिल्म का आइडिया काफी पसंद आया। कहा जा रहा है कि निर्देशक फुकरे फ्रेंचाइजी के बाद कुछ और हटके बनाना चाह रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक यह फिल्म 2024 की दूसरी छमाही में शुरू होगी और इसके अगले साल सिनेमाघरों में रिलीज होने की संभावना है। बताया जा रहा है कि फिल्म में और भी कई प्रतिभाशाली कलाकार नजर आएंगे, जो अपनी अदाकारी से लोगों को हंसाने की कोशिश करेंगे। वर्क फ्रंट की बात करें तो अक्षय इन दिनों अपनी आगामी फिल्म बड़े मियां छोटे मियां को लेकर चर्चा में हैं। उनके साथ इस फिल्म में टाइगर श्रॉफ भी अहम भूमिका में हैं। फिल्म का निर्देशन अली अब्बास जफर ने किया है। इसे इस साल ईद के मौके पर रिलीज करने की तैयारी है। इसके अलावा उनके पास जॉली एलएलबी 3, स्काई फोर्स, वेलकम टू द जंगल और हाउसफुल 5 जैसी कई बड़े बजट की फिल्में भी हैं। दर्शकों को इन सभी फिल्मों का बेसब्री से इंतजार है।

ओटीटी डेब्यू करने को तैयार निर्देशक आनंद एल राय

फिल्मकार आनंद एल. राय ने बॉलीवुड को कई बेहतरीन फिल्में दी हैं। इनमें 'तनु वेड्स मनु' से लेकर 'रांझणा' जैसी फिल्मों के नाम शामिल हैं। अब राय कुछ नया करने जा रहे हैं। आनंद ने हमेशा ही इंडस्ट्री में कुछ नया करने का सोचा है। फिल्म और कहानियों को लेकर उनकी नई सोच से दर्शक बखूबी वाकिफ हैं। खबर है कि अब आनंद ओटीटी में भी कुछ नया कर सकते हैं। हाल ही में उन्होंने बताया, ओटीटी पर लोग मिस्ट्री और थ्रिलर जॉन्र में अच्छा कर रहे हैं, लेकिन मैं चाहूंगा कि इससे भी हटकर नया किया जाए। कुछ ऐसा जो अभी तक नहीं बनाया गया हो। तो यह नई सीरीज क्या कोई लव और ड्रामा हो सकती है? इस बारे में राय ने बताया, 'मेरी पहली सीरीज लव और ड्रामा पर आधारित होगी। हालांकि, इसके बारे में अभी आपको ज्यादा जानकारी नहीं दे सकता, लेकिन इतना जरूर कह सकता हूं कि इस साल यह सीरीज आ सकती है। अभी इससे जुड़ी चीजों को फाइनल किया जा रहा है। जैसा ही सबकुछ तय हो जाएगा, आपको जानकारी दी जाएगी।' गौरतलब है कि हाल ही में राय एक अवॉर्ड समारोह में जूरी मेंबर के तौर पर भी नजर आए। इस ओटीटी प्रोजेक्ट के अलावा भी राय इस साल काफी बिजी हैं। वह फिल्म 'तेरे इश्क में' का निर्देशन करने जा रहे हैं। इस फिल्म में वह अभिनेता धनुष के साथ दोबारा काम कर रहे हैं।

छठा सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर एक्सीलेंस अवार्ड 2024 सम्पन्न

नई दिल्ली, एजेंसी। विज्ञान भवन में एशिया के सबसे बड़े हेल्थकेयर महाकुंभ सिक्स सिग्मा लीडरशिप समिट और सिक्स सिग्मा एक्सीलेंस अवार्ड्स का आयोजन किया गया। इसमें स्वास्थ्य क्षेत्र में असाधारण प्रदर्शन करने और नाम, नमक, निशान का मान रखने वालों को सम्मानित भी किया गया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वायुसेना प्रमुख - एयर चीफ मार्शल वी आर चौधरी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को देश से जुड़ी सेवा करनी चाहिये चाहे वो किसी भी रूप में हो। वायुसेना चीफ श्री चौधरी ने सिक्स सिग्मा की तारीफ करते हुए वहाँ बैठे लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि सभी को सिक्स सिग्मा द्वारा किये कार्यों से देश सेवा सीखना चाहिए। सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर राष्ट्रीय स्तर पर नागरिक सेवा प्रदान कर रहा है। हाई एल्टीट्यूड चिकित्सा सेवाओं के प्रति उनका उत्साह, प्रतिबद्धता सराहनीय है और वे तीर्थयात्रियों को या आपदा में निस्वार्थ सेवाएं प्रदान करने में हमेशा समय पर या समय से पहले पहुंच रहे हैं।साथ ही उन्होंने स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े लोगों को अवार्ड देकर सम्मानित भी किया। इस मौके पर सिक्स सिग्मा द्वारा दुर्गम पहाड़ों व स्थानों पर स्वास्थ सेवा के लिए एयर एंबुलेंस व सिक्स सिग्मा हेल्थ मैगजीन का भी विमोचन किया।डॉ. प्रदीप भारद्वाज (सीईओ - सिक्स सिग्मा हाई एल्टीट्यूड मेडिकल सर्विसेज) ने कहा कि भारतीय वायुसेना के सहयोग से हम आसमान छू रहे हैं। सिक्स सिग्मा को ऊंचे पहाड़ों में एयरफोर्स की मदद मिल रही है, जहां वाहनों की आवाजाही संभव नहीं है।

ज़ोलोपैक मप्र के पिलुखेड़ी में लगाएगा अपना अत्याधुनिक मैन्यूफैक्चरिंग प्लांट

भोपाल, एजेंसी। भारत में सस्टेनेबल पैकेजिंग प्रोडक्ट के प्रमुख निर्माता पुणे स्थित ज़ोलोपैक इंडिया लिमिटेड मध्य प्रदेश के भोपाल के पास पीलूखेड़ी में 75,000 वर्ग फुट में फैले एक अत्याधुनिक मैन्यूफैक्चरिंग प्लांट की स्थापना करेगा। मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव ने शुक्रवार, 01 मार्च को उज्जैन से फैक्ट्री का वर्चुअल भूमिपूजन समारोह आयोजित किया। वहीं नरसिंहगढ़ के माननीय विधायक श्री मोहन शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे और उन्होंने स्थल पर भूमिपूजन समारोह किया। ज़ोलोपैक के एमडी और सीईओ, श्री शशांक मिश्रा ने खुशी जाहिर करते हुए कहा, एंड क्यूट हमें पीलूखेड़ी में बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग प्रोडक्ट के लिए एक विश्वस्तरीय मैन्यूफैक्चरिंग प्लांट स्थापित करने की प्रसन्नता है। साथ ही हमने सीहोर जिले में 62 एकड़ में 100 करोड़ रुपये से अधिक के पूंजी निवेश के साथ एक अत्याधुनिक औद्योगिक परिसर स्थापित करने का भी प्रस्ताव रखा है।एंड क्यूट आगे श्री मिश्रा ने कहा एंड क्यूट;ये एंड क्यूट;मेड इन इंडियाएंड क्यूट; जैविक रूप से बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग सॉल्यूशन की एक वाइड रेंज के लिए एक एंड-टू-एंड निर्माता और निर्यातक बनने की हमारी आकांक्षा की महत्वपूर्ण कदम हैं।

मंगल लक्ष्मी' किसी आम डेली सोप ड्रामा से बिल्कुल अलग है

मुंबई, एजेंसी। कलर्स का नया शो 'मंगल लक्ष्मी' धूम मचा रहा है, और गृहणियों, इंफ्लुएंशर्स और मीडिया समीक्षकों का ध्यान आकर्षित कर रहा है। यह महज़ एक और लोकप्रिय टेलीविज़न सीरीज़ नहीं है; यह कुछ ऐसा है जो आज के समाज की हकीकत से पूरी तरह मेल खाता है, जिससे यह दर्शकों के लिए और अधिक प्रासंगिक बन जाता है। मंगल के रूप में दीपिका सिंह, लक्ष्मी के रूप में सानिका अमित, मंगल की सास के रूप में उर्वशी उपाध्याय, और अदित के रूप में नमन शॉ के शानदार परफॉर्मेंस के साथ, यह पारिवारिक ड्रामा संबंधित पलों, दिल को छूने वाली भावनाओं, और प्रासंगिक विषयों का मिक्स्ड बैग है। यहां ऐसे शीर्ष चार कारण बताए गए हैं, कि क्यों 'मंगल लक्ष्मी' को ज़रूर देखना चाहिए! टेलीविज़न पर हम अक्सर दो बहनों को एक ही लड़के को आकर्षित करते हुए देखते हैं,

स्टेट बैंक: इसी को चुनावी बॉन्ड से जुड़ी क्या जानकारी सौंपी, एसबीआई ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर कर खुद बताया

नई दिल्ली, एजेंसी। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने बुधवार को सुप्रीम कोर्ट को बताया कि उसने आदेश के मुताबिक, चुनावी बॉन्ड्स से जुड़ी जानकारियां निर्वाचन आयोग को सौंप दी हैं। बैंक की चेयरमैन ने कहा कि उनकी तरफ से आयोग को इलेक्टोरल बॉन्ड खरीदने वालों के नाम के साथ-साथ कितने के बॉन्ड खरीदे गए।

बैंक की तरफ से बताया गया कि उसने चुनाव आयोग को इन चुनावी बॉन्ड के भुगतान की तारीखों की जानकारी दी है। साथ ही उन राजनीतिक दलों का नाम भी बताया गया है, जिनको इसके जरिए चंदा दिया गया। इसके साथ ही किस दानकर्ता ने कितना चंदा दिया, उसकी वैल्यू के बारे में भी जानकारी मुहैया कराई गई है।

एक अप्रैल 2019 से कितने चुनावी बॉन्ड खरीदे गए

स्टेट बैंक ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि एक अप्रैल 2019 से लेकर इस साल 15 फरवरी तक राजनीतिक दलों को दान के लिए 22,217 चुनावी बॉन्ड खरीदे गए। इनमें से 22,030 को राजनीतिक दलों की तरफ से भुगतान के लिए दिया गया। गौरतलब है कि स्टेट बैंक (एसबीआई) ने चुनावी बॉन्ड का विवरण चुनाव आयोग (ईसी) को मंगलवार शाम को ही सौंप दिया था। शीर्ष अदालत ने एसबीआई को चौबीस घंटे के भीतर चुनावी चंदे की जानकारी आयोग को सौंपने का आदेश दिया था। ईसी ने विवरण मिलने की पुष्टि की है। चुनाव आयोग ने कहा, सर्वोच्च न्यायालय के 15 फरवरी और 11 मार्च के आदेश के अनुपालन में एसबीआई द्वारा आज ईसी को चुनावी चंदे की जानकारी प्रदान की गई है।

चंदे का विवरण सार्वजनिक करेगा चुनाव आयोग

इससे एक दिन पहले सर्वोच्च न्यायालय में एसबीआई की याचिका पर सुनवाई हुई थी, जिसमें राजनीतिक दलों के भुनाए प्रत्येक चुनावी बॉन्ड का ब्योरा देने की समयसीमा 30 जून तक बढ़ाने का अनुरोध किया गया था। वहीं, उस याचिका पर भी सुनवाई थी, जिसमें एसबीआई के खिलाफ अवमानना कार्यवाही शुरू करने का अनुरोध किया गया था। अदालत ने एसबीआई को राहत देने से इनकार करते हुए कहा था कि एसबीआई 12 मार्च तक ही जानकारी चुनाव आयोग को सौंपे और चुनाव आयोग 15 मार्च तक चुनावी चंदे के विवरण को सार्वजनिक करे।

शीर्ष अदालत ने खारिज की थी एसबीआई की दलील

एसबीआई की तरफ से सर्वोच्च न्यायालय की सुनवाई में वरिष्ठ वकील हरीश साल्वे पेश हुए थे। साल्वे ने अदालत को बताया कि उच्चतम न्यायालय के आदेश के बाद एसबीआई ने नए चुनावी बॉन्ड जारी करने पर रोक लगा दी है, लेकिन समस्या ये है कि जो चुनावी बॉन्ड जारी हुए हैं, उससे पूरी प्रक्रिया को पलटना होगा और इसमें समय लगेगा। हालांकि शीर्ष अदालत ने एसबीआई की दलील मानने से इनकार कर दिया और मंगलवार तक ही जानकारी देने का आदेश दिया। सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा था, आप (एसबीआई) कह रहे हैं कि दानदाताओं और राजनीतिक पार्टियों की जानकारी सील कवर के साथ एसबीआई की मुंबई स्थित मुख्य शाखा में है। मिलान प्रक्रिया में समय लगेगा, लेकिन हमने आपको मिलान करने के लिए कहा ही नहीं था और हमने सिर्फ स्पष्ट डिस्क्लोजर मांगा था। मामले पर सुनवाई कर रही संविधान पीठ के सदस्य न्यायमूर्ति खन्ना ने एसबीआई के वकील हरीश साल्वे से कहा, आपने बताया कि चुनावी बॉन्ड की पूरी जानकारी एक सील कवर लिफाफे में रखी गई है तो आपको सिर्फ सील कवर खोलकर जानकारी ही तो देनी है।

बिटकॉइन अबकी बार 73,000 डॉलर के पार

नई दिल्ली, एजेंसी। बिटकॉइन की कीमत में तेजी रुकने का नाम नहीं ले रही है। बुधवार को कारोबार के दौरान इसकी कीमत पहली बार 73,000 डॉलर यानी 60,50,659 रुपये पर पहुंच गई। पिछले 24 घंटे में बिटकॉइन की कीमत कारोबार के दौरान 73,127 डॉलर तक पहुंच गई। अमेरिका में महंगाई के आंकड़े अनुमान से थोड़ा ज्यादा रहे हैं लेकिन निवेशकों का कहना है कि इससे ब्याज दरों में कटौती की संभावना पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। माना जा रहा है कि अमेरिकी फेडरल बैंक इस साल के मध्य में ब्याज दरों में कटौती कर सकता है। इससे बिटकॉइन की कीमत में तेजी देखी जा रही है।

पिछले 24 घंटे में दुनिया की सबसे बड़ी, सबसे पुरानी और सबसे लोकप्रिय

क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन का मार्केट कैप बढ़कर 1.434 ट्रिलियन डॉलर हो गया। ग्लोबल क्रिप्टो मार्केट में इसकी हिस्सेदारी 52.06 फीसदी है। पिछले 24 घंटे में इसका वॉल्यू 4.4 फीसदी बढ़कर 62 अरब डॉलर पहुंच गया। बिटकॉइन के साथ दूसरी क्रिप्टोकरेंसीज की कीमत में भी तेजी आई है।

कहां तक जाएगी कीमत

अमेरिका में ताजा आंकड़ों के मुताबिक कंज्यूमर प्राइजेज में फरवरी में 0.36 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इसके 0.3 फीसदी की रफ्तार से बढ़ने की उम्मीद की जा रही थी। फ्यूल और शेल्टर की कीमतों में तेजी के कारण सालाना आधार पर कोर सीपीआई मामूली गिरावट के साथ 3.8 फीसदी रही। स्न्ह्यस्त्रह्ल× के सीईओ एडुल पटेल ने कहा कि फरवरी में सीपीआई डेटा अनुमान से ज्यादा रहा। इसके बावजूद बिटकॉइन की कीमत 72,000 डॉलर से अधिक बनी हुई है। पिछले एक महीने में इसकी कीमत में 44 फीसदी तेजी आई है और यह 76,000 रुपये तक जा सकती है।

विनिर्माण, खनन और बिजली क्षेत्रों के खराब प्रदर्शन से आईआईपी में गिरावट, वृद्धि दर घटकर 3.8 फीसदी

नई दिल्ली, एजेंसी। विनिर्माण, खनन और बिजली क्षेत्रों के खराब प्रदर्शन से जनवरी, 2024 में देश की औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि धीमी होकर 3.8 फीसदी रह गई। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) के संदर्भ में मापे जाने वाले कारखाना उत्पादन की वृद्धि जनवरी, 2023 में 5.8 फीसदी रही थी।

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के मंगलवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, दिसंबर, 2023 में आईआईपी की वृद्धि दर 4.2 फीसदी व नवंबर में 2.4 फीसदी रही थी। वहीं, चालू वित्त वर्ष के पहले 10 माह तक औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि 5.9 फीसदी रही है। 2022-23 की समान अवधि में यह 5.5 फीसदी रही थी।

करोड़पति बनने के लिए अपनाएं 15-30-20 का फार्मूला, कंपाउंडिंग से इस तरह हो जाएंगे मालामाल

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में तेजी से महंगाई बढ़ रही है। आम आदमी बढ़ती महंगाई से परेशान है। आमदनी घट रही है और खर्चे बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन महंगाई के इस दौर में अगर निवेश के सही तरीके अपनाए जाएं तो आप अच्छा बैंक बैलेंस जमा कर सकते हैं। आप बचत में कंपाउंडिंग के जरिए करोड़पति बन सकते हैं। आप इस महंगाई में एक खास फॉर्मूले को अपनाकर अपनी बचत को बढ़ा सकते हैं। लोगों को लगता है कि करोड़पति बनने के लिए ज्यादा निवेश की जरूरत होती है। लेकिन ये सच नहीं है। अगर आप अच्छी बचत करना चाहते हैं और अपना बैंक बैलेंस बढ़ाना चाहते हैं तो 15-30-20 का फॉर्मूला आपके काफी काम आ सकता है। यह फॉर्मूला आपकी आमदनी को तीन हिस्सों में बांट देता है।

अगर आप नौकरी करते हैं तो इस फॉर्मूले को लागू कर सकते हैं। वहीं अगर आप बिजनेसमैन हैं तो अपनी पूरे महीने की इनकम को इस फॉर्मूले की मदद से बांट सकते हैं। यह नियम पैसे बचाने

का एक असरदार तरीका है। यह आपको आर्थिक रूप से मजबूत बनाता है। वहीं इस बचत को आप सही जगह इनवेस्ट करके जल्द ही अमीर बन सकते हैं।

दुनिया में बहुत से लोग ऐसे हैं जिनकी कमाई काफी अच्छी है। ये लोग लाखों रुपये महीना कमाते हैं। लेकिन इसके बाद भी उनका बैंक बैलेंस खाली होता है। वह बचत नहीं कर पाते हैं। कमाई से ज्यादा उनके खर्चे हो जाते हैं। ऐसे में ये 15-30-20 का फार्मूला बहुत काम आता है। इसमें जरूरत, चाहत और बचत ये तीन बतें शामिल हैं। यह नियम आपकी इनकम को तीन पार्ट में डिवाइड करता है।

इस नियम के मुताबिक, आपकी इनकम का 50 फीसदी हिस्सा किराये, किराने के सामाना और ट्रांसपोर्ट जैसी जरूरतों के लिए रहेगा। इसे आप इन्हीं पर खर्च करें। वहीं बाहर खाने, मनोरंजन और खरीदारी जैसी जरूरतों के लिए तीस प्रतिशत हिस्सा रखें। इसके बाद आप अपनी इनकम में से 20 फीसदी हिस्सा भविष्य के फाइनेंशियल गोल्स के लिए निवेश किया जाना चाहिए।

आईकू ने फुली लोडेड जेड-9 को सेगमेंट लीडिंग परफॉर्मेंस और सोनी आईएमएक्स882 कैमरे के साथ किया लॉन्च

अमेज़न प्राइम ग्राहकों के लिए आईकूज़ेड-9 13 मार्च, 12 बजे दोपहर से और सभी ग्राहकों के लिए 14 मार्च, 12 बजे दोपहर से होगा उपलब्ध

नई दिल्ली, 12 मार्च, 2023। हाई-परफॉर्मेंस स्मार्टफोन ब्रांड आईकू ने आज भारत में अपने ' सीरीज पोर्टफोलियो से स्फुलीलोडेड स्मार्टफोन - आईकूजेड-9 लॉन्च किया है।

मीडियाटेक डाइमेंसिटी 7200 5 जी 4एनएम प्रोसेसर द्वारा संचालित, आईकूजेड-9 730के+ के अन टू टू स्कोर के साथ जबरदस्त प्रदर्शन का वादा करता है, जो इसे सेगमेंट में सबसे तेज बनाता है। यह सेगमेंट के पहले सोनी आईएमएक्स 882 रियर कैमरा सिस्टम, ओआईएस क्षमता के साथ 4के वीडियो रिकॉर्डिंग और 1800 निट्स पीक लोकल ब्राइटनेस के साथ सबसे चमकदार 120 हर्ट्ज अमोल्ड डिस्प्ले होने का भी दावा करता है। डुअल स्टीरियो स्पीकर म्यूजिक, ओटीटी वीडियो और गेम के लिए सराउंड साउंड प्रदान करते हैं। बोल्ड रियर कैमरा मॉड्यूल और ब्रश टेक्सचर्ड डिज़ाइन डिवाइस में सिर्फ 7.83 मिमी की मोटाई के साथ एक बेहतरीन टच जोड़ते हैं। यह स्मार्टफोन आउट ऑफ द बॉक्स एंड्राइड 14 पर आधारित फनटच ओएस 14 के साथ आएगा। आईकूजेड-9 स्मार्टफोन आईकू ई-स्टोर और अमेज़न.इन दोनों पर उपलब्ध होगा। 8जीबी + 128जीबी वाले मॉडल की प्रभावी कीमत आइएनआर 17,999 होगी और 8जीबी + 256 जीबी वाले मॉडल की आइएनआर 19,999 होगी। स्पेशल लॉन्च ऑफर में आइएनआर 2000 की इंस्टेंट बैंक डिस्काउंट और 3 महीने की बिना नो कॉस्ट इएमआई शामिल है। यह स्मार्टफोन दो प्रीमियम और एक्सक्लूसिव कलर वेरिएंट, ब्रश्ड ग्रीन और ग्रेफीन ब्लू में आता है, जो इसे एक स्टेटमेंट पीस बनाता है जो फंक्शनैलिटी और स्टाइल का शानदार मिश्रण है। लॉन्च पर टिप्पणी करते हुए आईकू के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर निपुण मार्या ने कहा, आईकू में, हम हमेशा आगे बढ़ने वाली मल्टीटास्किंग जेन की लगातार बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारे पिछले ' जेड सीरीज उत्पादों के लिए हमारे उपभोक्ताओं द्वारा दिखाए गए जबरदस्त उत्साह से प्रेरित होकर कर, हम आईकूजेड-9 को पेश करके पोर्टफोलियो का विस्तार कर रहे हैं। फोटोग्राफी के अनुभव को ऊंचा करते हुए इसमें सेगमेंट का पहला सोनी आईएमएक्स 882 ओआईएस रियर कैमरा शामिल है। अमेज़ॅन इंडिया के वायरलेस और होम एंटरटेनमेंट के डायरेक्टर श्री रंजीत बाबू ने कहा, आईकूजेड-9 5जी के लॉन्च पर आईकू की टीम को बधाई , यह एक फुली लोडेड स्मार्टफोन है जो अत्याधुनिक और सेगमेंट-फर्स्ट फीचर्स के साथ एक नया बेंचमार्क स्थापित करेगा। जैसा कि भारत में ई-स्पोर्ट्स की रफ्तार पकड़ रही है, हम ग्राहकों की ओर से परफॉर्मेंस सेंट्रिक स्मार्टफोन की मांग बढ़ रही है, और आज का लॉन्च निश्चित रूप से एक पॉवरफुल डिवाइस की उनकी आवश्यकता को पूरा करने में मदद करेगा जो कि अच्छे दाम में भी है।

बढ़ती लिंग समानता: ब्रिक्स सीसीआई वी और निप्पॉन पेंट इंडिया ने ग्लोबल वुमेन लीडरशिप प्रोग्राम के साथ साझीदारी की

नई दिल्ली, 12 मार्च, 2024- ब्रिक्स चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (ब्रिक्स सीसीआई) की महिला इकाई ब्रिक्स सीसीआई वी ने 2024-25 के दौरान ब्रिक्स सीसीआई वी ग्लोबल वुमेन लीडरशिप प्रोग्राम के लिए एशिया प्रशांत में अग्रणी पेंट एवं कोटिंग कंपनी और भारत में सबसे तेज़ी से बढ़ रही कंपनी निप्पॉन पेंट इंडिया के साथ गठबंधन की घोषणा की है। यह प्रोग्राम ब्रिक्स देशों से महिला नेताओं को सशक्त करने और उन्हें पोषित करने के प्रयास की पहल है जिससे विविध क्षेत्रों में इनकी वृद्धि को गति मिल सके और नेतृत्व भूमिका में लिंग समानता को बढ़ावा मिले।

इस प्रोग्राम में प्रतिभाग करने वाली महिलाओं को अपना नेतृत्व कौशल बढ़ाने, वैश्विक संबंध बनाने और गहरा अनुभव रखने वाले पेशेवरों एवं वैश्विक नेताओं से अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। यह प्रोग्राम साप्ताहिक सत्रों के साथ हाइब्रिड

मोड में चलेगा। वर्ष 2024-25 के लिए एक प्रमुख साझीदार निप्पॉन पेंट इंडिया इस मिशन में सहयोग करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। निप्पॉन पेंट इंडिया के निदेशक शरद मल्होत्रा ने महिला सशक्तिकरण को लेकर निप्पॉन की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए इस प्रतिष्ठित प्रोग्राम का मार्गदर्शक बनने की स्वीकृति दी है।

वित्तीय सहयोग के अलावा, निप्पॉन पेंट इंडा वार्षिक स्तर पर इस लीडरशिप प्रोग्राम से उदीयमान स्टार्टअप्स को इनक्यूबेट भी करेगी जिससे महिलाओं की अगुवाई वाले कारोबार की वृद्धि में उसका योगदान होगा।

ब्रिक्स सीसीआई के उपाध्यक्ष श्री समीप शास्त्रीने गठबंधनात्मक प्रयासों के महत्व पर ज़ोर देते हुए कहा, ग्लोबल वुमेन लीडरशिप प्रोग्राम महिलाओं के लिए नेतृत्व भूमिकाओं में उत्कृष्ट स्थिति हासिल करने की दिशा में एक अनुकूल माहौल तैयार करने की हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता दर्शाता है। हमारा मानना है कि विविध दृष्टिकोण से अनूठे समाधानों और सतत वृद्धि को गति देने का मार्ग प्रशस्त होता है।

ब्रिक्स सीसीआई वी की अध्यक्ष सुश्री रूबी सिन्हा ने इस प्रोग्राम के लिए अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, ब्रिक्स सीसीआई वी ग्लोबल वुमेन लीडरशिप प्रोग्राम, नेतृत्व के मामले में लिंग विविधता को गति देने की हमारी प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है। हम वैश्विक स्तर पर महिला नेताओं को सशक्त करने के हमारे मिशन में सहयोग करने के लिए निप्पॉन पेंट इंडिया के आभारी हैं। हम आगे एक ऐसी सार्थक साझीदारी की उम्मीद करते हैं जो अधिक से अधिक महिलाओं को अपना नेतृत्व कौशल बढ़ाने और अपने अपने क्षेत्र में एक सार्थक प्रभाव डालने में समर्थ बनाएगी।

सैमसंग ने 11 किलोग्राम एआई इकोबबल टीएम की पूरी तरह से ऑटोमेटिक फ्रंट लोड वाशिंग मशीन की नई रेंज को लॉन्च किया

गुरुग्राम, एजेंसी। भारत के सबसे बड़े उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने आज पूरी तरह से ऑटोमेटिक फ्रंट लोड वाशिंग मशीन एआई ईकोबबलटीएम की नई रेंज को लॉन्च कर दिया है। वाशिंग मशीनों की यह नई रेंज 11 किलोग्राम सेगमेंट में पहली है जो एआई वॉश, क्यू-ड्राइवटीएम और ऑटो डिस्पेंस जैसी एडवांस्ड फीचर्स से युक्त है। इसके उपयोग से उपभोक्ताओं को कपड़े धोने में 50 प्रतिशत समय की बचत होगी, फैब्रिक की देखभाल पहले की तुलना में 45.5 प्रतिशत बेहतर होगी और 70 प्रतिशत तक उर्जा की बचत होगी। एआई ईकोबबल टीएम सैमसंग की क्यू-बबल टीएम और क्विकड्राइवटीएम प्रौद्योगिकियों का समागम है, जो धुलाई को अधिक सहज और कम समय लेने वाला बनाता है। क्तबबलटीएम तकनीक तेजी से डिटर्जेंट प्रवेश के लिए अधिक प्रचुर और शक्तिशाली बुलबुले बनाने के लिए अतिरिक्त पानी के शॉट्स के साथ गतिशील ड्रम रोटेशन को जोड़ती है, वहीं क्विक ड्राइव टीएम धोने के समय को 50 प्रतिशत तक कम कर देता है। ये विशेषताएं एआई इकोबबलञ्जरू के प्रदर्शन को बेहतर और टिकाऊ बनाती हैं क्योंकि यह जल और ऊर्जा संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देता है। ऑटो डिस्पेंस और एआई वॉश के साथ नई रेंज अत्यधिक सहज और स्मार्ट है। एआई वॉश फीचर कपड़ों का वजन, पानी की मात्रा, कपड़ों की नरमी, मैल की मात्रा और डिटर्जेंट की मात्रा को खुद तय करता है। इससे यह कपड़े जल्दी और अच्छी तरह से धोता है। यह पानी और डिटर्जेंट बचाता है। यह कपड़ों को नुकसान से बचाता है। सैमसंग इंडिया में डिजिटल एप्लायंसेस बिजनेस के सीनियर डायरेक्टर पुष्प बैशाखिया ने कहा, सैमसंग में, हम ऐसी तकनीक पेश करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो न केवल सहज हो बल्कि टिकाऊ भी हो। हमने विभिन्न उपभोक्ताओं की बढ़ती जरूरतों को ध्यान में रखते हुए नई रेंज डिजाइन की है। 11 किलोग्राम पूर्ण स्वचालित फ्रंट लोड वाशिंग मशीन सेगमेंट में हमारी पहली रेंज अत्यधिक ऊर्जा कुशल है।

बीपीसीएल ने भोपाल में कंप्रेस्ड बायोगैस वर्कशॉप का किया आयोजन

मुंबई/भोपाल। अग्रणी फॉर्च्यून 500 महारत्न ऊर्जा समूह भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) ने पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय (एमओपी एंड एनजी) के साथ साझेदारी में, कंप्रेस्ड बायोगैस (सीबीजी) को एक स्थायी ऊर्जा समाधान के रूप मे अपनाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण वर्कशॉप की मेजबानी की। 11 मार्च, 2024 को भोपाल के होटल रेडिसन में आयोजित यह कार्यक्रम भारत के ऊर्जा परिवर्तन एजेंडे को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण कदम था।एमओपी एंड एनजी के तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला ने बैंक अधिकारियों, सीबीजी उत्पादकों, उद्यमियों, प्रौद्योगिकी प्रदाताओं और विश्व बैंक, इंडियन बायोगैस एसोसिएशन सहित ऑयल और गैस मार्केटिंग कंपनियों के प्रतिनिधियों सहित विभिन्न हितधारकों के बीच रचनात्मक संवाद को बढ़ावा दिया। कार्यक्रम में हुई चर्चाओं ने भारत के ऊर्जा परिदृश्य में सीबीजी की परिवर्तनकारी क्षमता, हरित ईंधन के रूप में इसकी भूमिका और सस्टेनेबल अल्टरनेटिव टुवर्ड्स अफोर्डेबल ट्रांसपोर्टेशन (सतत) पहल में इसके योगदान पर जोर दिया।उद्घाटन समारोह में श्री पंकज मोतीरामानी, स्टेट हेड (रिटेल), भोपाल ने सम्मानित महानुभावों का गर्मजोशी से स्वागत किया। समारोह में श्री अरुण कुमार, डायरेक्टर (जीपी-), एमओपी एंड एनजी सहित अन्य उल्लेखनीय हस्तियां की गरिमामय उपस्थिति रही। बीपीसीएल में सीजीएम (बायो फ्यूल) श्री अनुराग सरावगी ने सीबीजी परियोजनाओं को बढ़ावा देने में कार्यशाला के महत्व को रेखांकित करते हुए सभी उपस्थित लोगों का सौहार्दपूर्ण स्वागत किया। श्री शशिप्रकाश. आर, जीएम टेक्नोलॉजी (बायो फ्यूल) ने चर्चा के लिए मंच तैयार करते हुए 'सतत' योजना के बारे में विचार प्रकट किए।

अपने स्वागत भाषण में अनुराग सरावगी ने उल्लेख किया, 'स्वच्छ, हरित भविष्य की हमारी खोज में, एमओपी एंड एनजी के तत्वावधान में बीपीसीएल द्वारा भोपाल में आयोजित कार्यशाला, संपीड़ित बायोगैस (सीबीजी) परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। सीबीजी का मतलब है नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों की हमारी खोज में आशा की किरण।

अश्विन विश्व के नंबर एक गेंदबाज बने

कुलदीप ने भी लगाई लंबी छलांग, रोहित-यशस्वी को भी फायदा

दुबई (एजेंसी)। आईसीसी ने बुधवार को टेस्ट की ताजा रैंकिंग जारी कर दी है। भारत के रविचंद्रन अश्विन दुनिया के नंबर एक गेंदबाज बन गए हैं। धर्मशाला में इंग्लैंड के खिलाफ अपने 100वें टेस्ट में नौ विकेट लेने के बाद वह एक पायदान ऊपर चढ़कर शीर्ष स्थान पर पहुंच गए। वहीं, जसप्रीत बुमराह लुढ़क कर तीसरे स्थान पर आ गए हैं। वहीं, भारत के कुलदीप यादव ने भी लंबी छलांग लगाई है। इसके अलावा बल्लेबाजों में रोहित शर्मा और यशस्वी जायसवाल को भी फायदा हुआ है।

अश्विन, बुमराह को हटाकर नंबर एक गेंदबाज बने

37 साल के भारतीय दिग्गज स्पिनर ने धर्मशाला में टीम इंडिया की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने पहली पारी में चार और दूसरी पारी में पांच विकेट झटके थे। दोनों पारियों को मिलाकर अश्विन ने 128 रन देकर नौ विकेट झटके थे। अश्विन ने बुमराह को शीर्ष स्थान से हटाया है। इससे पहले बुमराह भी अश्विन को हटाकर नंबर एक टेस्ट गेंदबाज बने थे। अश्विन के 870 रेटिंग पॉइंट्स हैं। वहीं, दूसरे नंबर पर 847 रेटिंग पॉइंट्स के साथ ऑस्ट्रेलिया के जोश हेजलवुड और तीसरे नंबर पर जसप्रीत बुमराह हैं। कगिसो रबाडा चौथे और पैट कमिंस पांचवें स्थान पर हैं। शीर्ष 10 गेंदबाजों में भारत के रवींद्र जडेजा सातवें स्थान पर बने हुए हैं। वहीं, शीर्ष 20 में कुलदीप यादव की एंट्री हुई है। उन्होंने 15 पायदान की छलांग लगाई और 16वें स्थान पर पहुंच गए। शीर्ष-20 गेंदबाजों में भारत के चार गेंदबाज हैं।

बल्लेबाजों में रोहित-यशस्वी का जलवा

वहीं, टेस्ट बल्लेबाजों की रैंकिंग में धर्मशाला में शतक लगाने वाले रोहित शर्मा और शुभमन गिल को भी फायदा हुआ है। रोहित ने पांच स्थान की छलांग लगाई और वह छठे स्थान पर पहुंच गए। वहीं, यशस्वी जायसवाल भी दो स्थान की सुधार के साथ आठवें पायदान पर पहुंच गए। विराट कोहली को एक स्थान का नुकसान हुआ है और वह नौवें स्थान पर लुढ़क गए हैं। काफी समय से टीम इंडिया के सेट अप से बाहर चल रहे ऋषभ पंत को भी एक स्थान का नुकसान हुआ और वह 15वें पायदान पर लुढ़क गए हैं। धर्मशाला टेस्ट में शानदार शतक लगाने वाले शुभमन ने 11 स्थानों की छलांग लगाई और 21वें नंबर पर पहुंच गए हैं।

धोनी महान, लेकिन रोहित भी कम नहीं

रविचंद्रन अश्विन ने इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज जीत में अहम भूमिका निभाई थी। धर्मशाला में आखिरी टेस्ट के बाद जब हेड कोच राहुल द्रविड़ से सीरीज के सबसे शानदार पल के बारे में पूछा गया था तो उन्होंने राजकोट टेस्ट में अश्विन की वापसी को सबसे शानदार बताया था। दरअसल, राजकोट में तीसरे टेस्ट के दूसरे दिन उन्हें अचानक से घर लौटना पड़ा था। तब बीसीसीआई ने ज्यादा जानकारी नहीं दी थी और फैमिली इमरजेंसी का हवाला दिया था।बाद में यह बात सामने आई थी कि अश्विन की मां बेहोश होकर गिर गई थीं और उनकी हालत खराब थी। ऐसे में अश्विन राजकोट टेस्ट को बीच में छोड़कर अचानक वापस लौट गए थे। हालांकि, टेस्ट के चौथे दिन तक सबकुछ सामान्य होने पर अश्विन मैच में वापस लौट आए थे। अब इस दिग्गज स्पिनर ने उस घटना पर से पर्दा उठाया है। उन्होंने अपने यूट्यूब चैनल पर पूरी कहानी बताई है। साथ ही यह भी बताया कि कैसे कप्तान रोहित शर्मा ने उनकी काफी मदद की थी। अश्विन ने रोहित को बतौर कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के बराबर बताया है।

कुलदीप को एहसास था कि वह मेरा टेस्ट क्रिकेट में 700वां विकेट बनेगा: एंडरसन

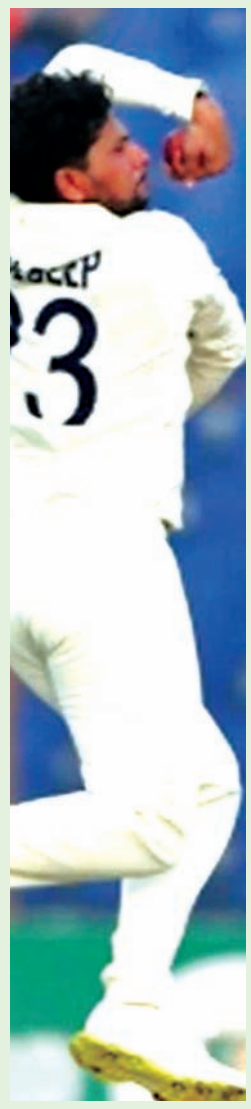

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के अनुभवी तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन ने खुलासा किया है कि भारत के निचले क्रम के बल्लेबाज कुलदीप यादव को एहसास हो गया था कि वह उनका टेस्ट क्रिकेट में 700वां विकेट बनेगा। एंडरसन ने भारत और इंग्लैंड के बीच धर्मशाला में खेले गए पांचवें और अंतिम टेस्ट मैच में 9 मार्च को कुलदीप यादव को आउट करके अपना 700वां विकेट हासिल किया था। एंडरसन यह उपलब्धि हासिल करने वाले पहले तेज गेंदबाज और कुल तीसरे गेंदबाज बने। उन्होंने अपने 187वें टेस्ट मैच में यह उपलब्धि हासिल की।

एंडरसन ने कहा, 'कुलदीप ने मेरी एक गेंद थर्ड मैन पर खेल कर एक रन लिया। जब वह नॉन स्ट्राइकर छोर पर पहुंचा तो तब मैं वापस अपने रनअप पर जा रहा था। तब उसने कहा, 'मैं आपका 700वां विकेट बनने जा रहा हूं। उन्होंने कहा, 'उसके कहने का मतलब यह नहीं था कि वह आउट होने की कोशिश कर रहा है। वह सिर्फ यह बता रहा था कि उसे ऐसा एहसास हो रहा है। उसकी बात पर हम दोनों हंस पड़े थे।

एंडरसन ने हालांकि कहा कि अगर इंग्लैंड ने यह श्रृंखला जीती होती तो उनकी खुशी दोगुना हो जाती। भारत ने पांच मैच की यह श्रृंखला 4-1 से जीती। उन्होंने कहा, 'मैंने जश्न नहीं मनाया। जश्न मनाने के लिए कुछ था भी नहीं। एक दर्शनीय मैदान पर इस तरह की उपलब्धि हासिल करना बहुत अच्छा पल था लेकिन अगर हमने जीत हासिल की होती तो मैं अधिक उत्साहित होता।

इस 41 वर्षीय तेज गेंदबाज ने कहा, 'मैं रिकॉर्ड के लिए क्रिकेट नहीं खेलता, मैं अपनी टीम को मैच जिताने के लिए क्रिकेट खेलता हूं। मैंने इस दौरे का पूरा आनंद लिया भले ही परिणाम हमारे अनुकूल नहीं रहा लेकिन हम एक टीम के रूप में एकजुट रहे। हमारे युवा स्पिनरों और बल्लेबाजों को इस दौरे से काफी कुछ सीखने को मिला।

मोहम्मद नबी के 5 विकेट

अफगानिस्तान की तीसरे वनडे में आयरलैंड पर बड़ी जीत

शारजाह (यूएई) (एजेंसी)। मोहम्मद नबी के पांच विकेट की मदद से अफगानिस्तान ने मंगलवार को शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में तीसरे वनडे में आयरलैंड पर 117 रन से जीत हासिल की। हशमतुल्लाह शाहिदी की अफगानिस्तान टीम ने पहले और अंतिम 50 ओवर के मैच में जीत हासिल कर सीरीज भी 2-0 से जीत ली। सीरीज का दूसरा वनडे मैच बारिश की वजह से रद्द कर दिया गया था।

टॉस जीतकर पॉल स्टर्लिंग की आयरिश टीम ने अफगान टीम को पहले बल्लेबाजी के लिए भेजने का फैसला किया। हालांकि उनका निर्णय उनके पक्ष में नहीं गया क्योंकि आयरलैंड का गेंदबाजी आक्रमण अच्छा

प्रदर्शन करने में विफल रहा। रहमानुल्लाह गुरबाज़ (53 गेंदों पर 51 रन) और इब्राहिम जादरान (31 गेंदों पर 22 रन) ने अफगानिस्तान के लिए ओपनिंग की और 62 रनों की साझेदारी निभाई जिससे मेजबान टीम को खेल में तेज शुरुआत मिली। गुरबाज ने 96.23 की स्ट्राइक रेट से 7 चौके और 1 छक्का लगाया। इस बीच जादरान ने 70.97 की स्ट्राइक रेट से केवल 3 चौके लगाए। अफगान सलामी बल्लेबाजों के आउट होने के बाद शाहिदी (103 गेंदों पर 69 रन) ने खेल में अफगानिस्तान की रन गति को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण पारी खेली। अफगान कप्तान ने 66.99 की स्ट्राइक रेट से 4 चौके लगाए। पहली पारी के अंत में मोहम्मद नबी (62 गेंदों पर 48 रन) ने अहम भूमिका निभाकर अफगानिस्तान का कुल स्कोर 236/9 कर दिया। उन्होंने 77.42 की स्ट्राइक रेट से 3 चौके लगाए।

दूसरी ओर मार्क अडायर ने अपने 10 ओवर के स्पेल में तीन विकेट लेने के बाद आयरिश गेंदबाजी आक्रमण का नेतृत्व किया। उन्होंने पहली पारी में 51 रन भी बनाए जबकि बैरी मैक्कार्थी ने अपने 9 ओवर के स्पेल में 2 विकेट हासिल किए। उनके अलावा थियो वान वोर्कोम, एंडी मैकब्राइन और हैरी टेक्टर ने अपने-अपने स्पैल में एक-एक विकेट लिया।

रन चेज के दौरान एंड्रयू बालबर्नी (8 गेंदों पर 1 रन) और कप्तान स्टर्लिंग (53 गेंदों पर 50 रन) एक महत्वपूर्ण साझेदारी बनाने आयरलैंड को 237 रनों के लक्ष्य का पीछा करने में विफल रहे।

अल हिलाल ने लगातार 28वीं जीत दर्ज करके बनाया नया विश्व रिकॉर्ड

जेद्दा (सऊदी अरब) (एजेंसी)। सऊदी अरब की टीम अल हिलाल ने लगातार 28वीं जीत दर्ज करके शीर्ष स्तर की फुटबॉल में नया विश्व रिकॉर्ड बनाया। अल हिलाल ने अल इतिहाद को 2-0 से हराकर यह उपलब्धि हासिल करने के साथ ही एशियाई चैंपियंस लीग के सेमीफाइनल में भी प्रवेश किया।

इन दोनों टीम के बीच पहले चरण का मैच भी अल हिलाल ने जीता था और इस तरह से उसने अपने घरेलू प्रतिद्वंदी अल इतिहाद को 4-0 के कुल अंतर से पराजित किया। सऊदी अरब की घरेलू लीग में 18 बार की चैंपियन अल हिलाल ने वेल्स की टीम द न्यू सेंट्स के 2016-17 के सत्र में लगातार 27 जीत दर्ज करने के पिछले विश्व रिकॉर्ड को तोड़ा।

अल हिलाल ने इससे पहले आखिरी बार पिछले साल 21 सितंबर को मैच नहीं जीता था। उसने तब सऊदी अरब लीग की अपनी प्रतिद्वंदी टीम दमाक के खिलाफ मैच 1-1 से ड्रॉ खेला था। सेमीफाइनल में अल हिलाल का सामना संयुक्त अरब अमीरात के अल ऐन से होगा जिसने सोमवार को पेनल्टी शूटआउट में क्रिस्टियानो रोनाल्डो की टीम अल नासर को हराकर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया था।

महिला प्रीमियर लीग 2024

एलिसा पेरी का हरफनमौला प्रदर्शन

बेंगलुरु ने मुंबई को 7 विकेट से हराया

नईदिल्ली (एजेंसी)। ऑलराऊंडर एलिसा पेरी के हरफनमौला प्रदर्शन के चलते रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में महिला प्रीमियर लीग 2024 के तहत खेले गए मुकाबले में 7 विकेट से जीत हासिल कर ली। मुंबई ने पहले खेलते हुए महज 113 रन बनाए थे क्योंकि एलिसा पेरी ने 15 रन देकर 6 विकेट चटका ली थीं। इसके बाद खेलने उतरी बेंगलुरु ने 39 रन पर तीन विकेट गंवा लिए थे लेकिन इसके बाद पेरी ने ऋचा घोष के साथ मिलकर अपनी टीम को जीत दिला दी।

हालांकि मुंबई की शुरूआत अच्छी रही थी। हेले मैथ्यूज के साथ मिलकर साजना ने पहले विकेट के लिए 43 रन जोड़े थे। हेले ने जहां 23 गेंदों पर 2 चौके और दो छक्कों की मदद से 26 रन बनाए तो वहीं, साजना ने 21 गेंदों पर 5 चौके और एक छक्के की मदद से 30 रन बनाए। नेट ब्रंटकेवल 10 रन ही बना पाईं। लेकिन इसके बाद मुंबई की ओर से हरमनप्रीत 0, अमेलिया केर 2, अमनजोत कौर 4, पूजा 6, काजी 4, प्रियंका 0, शबनम 8 रन ही बना पाईं।

बेंगलुरु की शुरूआत भी खराब रही थी। कप्तान स्मृति ने 13 गेंदों पर 11 रन बनाए जबकि सोफिया ने 9 गेंदों पर 9 रन बनाए। सोफिया डिवाइन भी 4 रन ही रन बना पाई। ऐसे समय में एलिसा पेरी ने 38 गेंदों पर 5 चौके और 1 छक्के की मदद से 40 रन बनाए जबकि ऋचा घोष ने 28 गेंदों पर 4 चौके और 2 छक्कों की मदद से 36 रन बनाए और अपनी टीम को 15 ओवर में ही जीत दिला दी।

बेंगलुरु तीसरे स्थान पर

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने इस जीत के साथ ही अंक तालिका में तीसरा स्थान हासिल कर लिया है। उन्होंने लीग में 8 मुकाबले खेले हैं जिसमें यूपी वारियर्स को दो बार, गुजरात जायंट्स को एक बार तो मुंबई इंडियंस को एक बार हराया। अंक तालिका में दिल्ली कैपिटल्स अभी भी नंबर वन है। उन्होंने 7 में से पांच मुकाबले जीते हैं।

महिला प्रीमियर लीग में सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी

6/15 – एलिसा पेरी बनाम मुंबई इंडियंस (2024)
5/15 – मेरिजाना कैप बनाम गुजरात जायंट्स (2023)
5/22 –ए शोभना बनाम यूपी वारियर्स (2024)
5/29 –टी नोरिस बनाम आरसीबी (2023)
5/36 – के ग्राथ बनाम यूपी वारियर्स (2023)

दोनों टीमों की प्लेइंग 11

मुंबई इंडियंस महिला - हेले मैथ्यूज, नट साइवर-ब्रंट, प्रियंका बाला (विकेटकीपर), हरमनप्रीत कौर (कप्तान), अमेलिया केर, अमनजोत कौर, एस सजना, पूजा वस्त्राकर, हुमैरा काजी, शबनीम इस्माइल, सैका इशाक

रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर महिला – स्मृति मंधाना (कप्तान), सोफी मोलिनेक्स, एलिसे पेरी, सोफी डिवाइन, ऋचा घोष (विकेटकीपर), जॉर्जिया वेयरहैम, दिशा कसाट, श्रेयंका पाटिल, आशा शोभना, श्रद्धा पोखरकर, रेणुका ठाकुर सिंह

'गाजियाबाद में जल्द होंगे आईपीएल मैच'

अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम का हुआ शिलान्यास

नईदिल्ली (एजेंसी)। गाजियाबाद में जल्द ही एक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम बनने वाला है। इस परियोजना की परिकल्पना लगभग नौ साल पहले की गई थी

जिसका अब शिलान्यास किया गया है। आने वाले समय में इस स्टेडियम में आईपीएल के मैच भी खेले जाएंगे। बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड) के उपाध्यक्ष और राज्यसभा सांसद राजीव शुक्ला ने मोर्टी राजनगर एक्सटेंशन में उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (यूपीसीए) द्वारा विकसित की जाने वाली परियोजना की आधारशिला रखी। स्टेडियम के निर्माण में देरी क्षेत्र में 'हाई टेंशन बिजली के तारों और खंभों' के कारण हुई।

बिजली विभाग पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए शुक्ला ने कहा कि ऐसी स्थिति में कोई स्टेडियम नहीं बनाया जा सकता। बीसीसीआई को यह मंजूर नहीं है। जमीन खरीदने और रजिस्ट्री कराने के बाद दो बिजली लाइनें लगा दी गईं - बिजली विभाग की बड़ी लापरवाही। यह क्षेत्र फ्लाइट पथ पर पड़ता है, इसलिए भारतीय वायुसेना को भी इस योजना को मंजूरी देनी पड़ी। दूसरी बड़ी बाधा- भूमि उपयोग - जितनी जल्दी इसे बदला जाएगा, स्टेडियम बनाना उतना ही आसान होगा... मैं पश्चिमी यूपी के लोगों को बधाई देता हूं। आखिरकार इसकी (स्टेडियम) आधारशिला रखी गई है और निर्माण जल्द ही पूरा हो जाएगा।

बीसीसीआई उपाध्यक्ष ने परियोजना के पूरा होने के बारे में कोई विवरण साझा नहीं किया।

सचिन सर स्टेडियम में थे, बेहतर खेलने के लिए इतनी प्रेरणा काफी थी: मुशीर खान

मुंबई (एजेंसी)। रणजी ट्रॉफी फाइनल मैच के तीसरे दिन मंगलवार को महान खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर की मौजूदगी 19 वर्षीय बल्लेबाज मुशीर खान के लिए प्रेरणादायक साबित हुआ, जिनके धैर्यपूर्ण 136 रन की पारी से मुंबई ने विदर्भ को जीत के लिए 538 रन का विशाल लक्ष्य दिया। मुशीर ने इस सत्र में रणजी ट्रॉफी के तीन नॉकआउट मैचों में अपना दूसरा शतक जमाकर मैच

पर मुंबई का शिकंजा कस दिया। उन्होंने इससे पहले क्वार्टर फाइनल में बड़ौदा के खिलाफ 203 रन की नाबाद पारी खेली थी। उन्होंने सेमीफाइनल में भी तमिलनाडु के खिलाफ 55 रन की अहम पारी खेली थी। मुशीर ने तीसरे दिन के खेल के बाद कहा कि मुझे पहले पता नहीं था कि सचिन सर यहां मौजूद है। मैं जब 60 रन पर बल्लेबाजी कर रहा था तब मैंने उन्हें बड़ी स्क्रीन पर देखा। इसने मुझे अच्छा करने के लिए प्रेरित किया क्योंकि वह मैच देख रहे थे और मुझे उन्हें प्रभावित करना था। तेंदुलकर और भारतीय कप्तान रोहित शर्मा वानखेडे स्टेडियम में मौजूद थे, जो भारतीय क्रिकेट बोर्ड की घरेलू क्रिकेट को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता दर्शा रहा था।

पाकिस्तान के साथ पांच मैचों की टी20 श्रृंखला अप्रैल में खेलेगा न्यूजीलैंड

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान इस साल जून में अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले टी20 विश्व कप की तैयारियों के तहत अगले महीने पांच मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में न्यूजीलैंड की मेजबानी करेगा। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने बुधवार को कहा कि पहले तीन मैच 18, 20 और 21 अप्रैल को रावलपिंडी में जबकि बाकी दो मैच 25 और 27 अप्रैल को लाहौर में खेले जाएंगे। न्यूजीलैंड के कई खिलाड़ी इस दौरान इंडियन प्रीमियर लीग में खेलेंगे। उसे जिन खिलाड़ियों की कमी खलेगी उनमें डेरिल मिशेल, मिशेल सेंटनर और लॉकी फर्ग्यूसन भी शामिल हैं।

न्यूजीलैंड ने इस साल के शुरू में अपनी घरेलू धरती पर शाहीन शाह अफरीदी की अगुवाई वाली पाकिस्तान की टीम को टी20 श्रृंखला में 4-1 से हराया था।

संक्षिप्त समाचार

ड्यूटी पर तैनात आईपीएस ऑफिसर को मंत्री के काफिले ने मारी टक्कर

हैदराबाद। तेलंगाना सरकार में मंत्री श्रीधर बाबू के काफिले ने आईपीएस अधिकारी परितोष पंकज को टक्कर मार दी। बताया जा रहा है कि वह मामूली रुप से घायल हो गए हैं। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। समाचार एजेंसी पीटीआई के मुताबिक, भद्राद्री कोठागुडेम जिले के एएसपी परितोष पंकज उस समय घायल हो गए, जब मंत्री के काफिले में सवार एक वाहन ने उन्हें पीछे से टक्कर मार दी। घटना के वक्त वह ड्यूटी पर थे। इसी दौरान पीछे से आ रही एक गाड़ी ने उन्हें टक्कर मार दी। गाड़ी से टकराते ही वह जमीन पर गिर गए। हालांकि, मौके पर मौजूद अन्य पुलिसकर्मियों ने तुरंत उन्हें उठाया और इलाज के लिए अस्पताल लेकर पहुंचे। बता दें कि भद्राद्री कोठागुडेम जिले में तेलंगाना सरकार में मंत्री श्रीधर बाबू का एक कार्यक्रम था। एएसपी परितोष पंकज उनके कार्यक्रम को लेकर ड्यूटी पर ही तैनात थे, जब यह हादसा हुआ।

पहले कश्मीरी पंडितों को वापस लाओ फिर सीएए लागू करना- उद्धव ठाकरे

मुंबई, एजेंसी। नागरिकता संसोधधन अधिनियम की अधिसूचना जारी होते ही सियासत तेज हो गई। सत्ता पक्ष जहां इसका स्वागत कर रहा है, वहीं विपक्ष इसकी आलाचना कर रहा है। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने भी इसकी आलोचना की और सरकार की मंशा पर सवाल उठाया है। उन्होंने मंगलवार को कहा, देश में नया कानून सीएए लाया गया है। जो हिंदू, सिख, पारसी और जैन देश के बाहर डरे हुए हैं, उन्हें हमारे देश में लाया जाएगा। उन्हें जरूर लाया जाए, लेकिन यह सिर्फ एक चुनावी हथकंडा है। ठाकरे ने आगे कहा, जब मैं सीएम था, तो भाजपा देश में सीएए और एनआरसी का भूत लेकर आई थी। उस समय लोगों के मन में डर पैदा हो गया, खासकर असम के लोगों के मन में। इस कानून के खिलाफ कोर्ट में कई याचिकाएं हैं। अभी कोर्ट का फैसला नहीं आया है, लेकिन उन्होंने सीएए का नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। शिवसेना (यूबीटी) सुप्रीमो ने बीजेपी और केंद्र सरकार पर धर्म के नाम पर भेदभाव पैदा करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, धर्मों के बीच भेदभाव पैदा कर झगड़े और दंगे कराना चाहते हैं। आने वाले चुनाव में एक तरफ बीजेपी है जो धर्मों के बीच नफरत पैदा कर रही है और दूसरी तरफ देशभक्त इंडिया गठबंधन है। यह चुनाव देशभक्त बनाम नफरत करने वालों के बीच होने जा रहा है। अगर आप विदेशों से हिंदुओं को हमारे यहां लाना चाहते हैं तो पहले कश्मीरी पंडितों को वापस लाओ और फिर सीएए लाओ।

चुनाव आयोग से जम्मू-कश्मीर में लोकसभा चुनाव के साथ-साथ विधानसभा चुनाव कराने का आग्रह

जम्मू, एजेंसी। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार की अगुवाई में चुनाव आयोग का एक प्रतिनिधिमंडल इन दिनों जम्मू-कश्मीर के तीन दिवसीय दौरे पर है। केंद्र शासित प्रदेश में आगामी लोकसभा चुनावों की तैयारियों की समीक्षा के लिए आयोग के अधिकारियों ने मंगलवार को जम्मू-कश्मीर के राजनीतिक दलों के साथ दो दिवसीय परामर्श शुरू किया। इस दौरान भाजपा समेत कई राजनीतिक दलों ने आयोग से जम्मू-कश्मीर में लोकसभा चुनाव के साथ-साथ विधानसभा चुनाव कराने का आग्रह किया। भाजपा ने भी लोकसभा और जम्मू-कश्मीर विधानसभा के लिए एक साथ चुनाव कराने पर सहमति जताई है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा), आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के नेता भी शामिल हैं। नेशनल कॉन्फ्रेंस के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे पार्टी नेता और पूर्व मंत्री नासिर असलम वानी ने कहा कि उन्होंने निर्वाचन आयोग को लोकसभा चुनावों के साथ-साथ जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव कराने की भी मांग की है।

सर्वे के मुताबिक हिमाचल में क्लीन स्वीप कर सकती है भाजपा

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश की कांग्रेस सरकार में सबकुछ ठीक नहीं नजर आ रहा है। दरअसल, कुछ दिनों पहले कांग्रेस के छह विधायकों ने बगावत कर दिया। उस दिन से ही बागियों और सीएम सुक्खू के बीच शब्द बाण चल रहे हैं। ऐसे में लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर एक ताजा सर्वे आया है। इस सर्वे में कांग्रेस को एक जोर का झटका लगा है। सर्वे के मुताबिक, राज्य में कांग्रेस की इकलौती सांसद और पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह की पत्नी प्रतिभा सिंह की लोकसभा सीट पर भाजपा जीत दर्ज कर सकती है।

एबीपी न्यूज सी वोटर के सर्वे के मुताबिक, लोकसभा चुनाव 2024 में हिमाचल प्रदेश की सभी चार लोकसभा सीटों पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जीत दर्ज कर सकती है। वहीं बात अगर वोट शेयर की करें तो आगामी चुनाव में भाजपा को 66 फीसदी वोट मिल सकते

हैं। वहीं कांग्रेस के खाते में 33 परसेंट वोट जा सकते हैं। अन्य को 1 फीसदी वोट मिल सकता है।

हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस की सरकार है। लेकिन लोकसभा की चार सीटों में फिलहाल तीन पर भाजपा का कब्जा है। केवल मंडी सीट से प्रतिभा सिंह सांसद हैं। दरअसल, साल 2019 के लोकसभा चुनाव में सभी चार सीटों पर भाजपा की जीत हुई थी लेकिन 2021 में मंडी सीट पर उपचुनाव हुआ जिसमें प्रतिभा सिंह जीत गईं। लेकिन अगर यह सर्वे सच होता है तो मंडी सीट पर कांग्रेस के हाथ से जा सकती है। प्रतिभा सिंह मंडी सीट से पहली बार साल 2004 में चुनाव जीती थीं। इसके बाद 2009 में उनके पति वीरभद्र सिंह जीते। वहीं 2012 दिसंबर के विधानसभा चुनाव में जीतने पर वीरभद्र सिंह सीएम बने और 2013 में मंडी लोकसभा सीट पर उपचुनाव में प्रतिभा सिंह जीतीं। इस सीट से साल 2014 में प्रतिभा की हार हुई। 2019 में कांग्रेस ने इस सीट से आश्रय शर्मा उतारा, लेकिन उनकी हार हुई। इसके बाद 2021 में हुए उपचुनाव में इस सीट पर प्रतिभा सिंह ने फिर कब्जा किया। ऐसा कहा जाता है कि विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत के बाद प्रतिभा गुट के नेता उन्हें सीएम बनाना चाहते थे। हालांकि आलाकमान ने सुखविंदर सिंह सुक्खू पर भरोसा जताया। बीते दिनों प्रतिभा सिंह के बेटे विक्रमादित्य सिंह ने भी सुक्खू कैबिनेट से रोते हुए इस्तीफा दे दिया था।

बेंगलुरू में बढ़ रहा पानी का संकट, कर्नाटक सरकार ने स्वीमिंग पूल में पानी के इस्तेमाल पर लगाया प्रतिबंध

बेंगलुरु (कर्नाटक)। शहर में जल संकट के बीच, बैंगलोर जल आपूर्ति और सीवरेज बोर्ड (बीडब्ल्यूएसएसबी) ने स्विमिंग पूल में पीने के पानी के उपयोग पर रोक लगा दी है। मंगलवार को आदेश दिया कि स्विमिंग पूल में पीने के पानी, जिसे पोटेबल पानी भी कहा जाता है, के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगा दिया जाए। इस बीच, कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने भाजपा पर तीखा हमला बोलते हुए आरोप लगाया कि पार्टी बेंगलुरु में पानी की कमी पर राजनीति कर रही है।

उपमुख्यमंत्री ने कहा, भाजपा कल राज्य सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन की योजना बना रही है, उन्हें जो करना है करने दें, पहले उन्हें केंद्र सरकार से संपर्क करने दें और महादयी और मेकेदातु परियोजनाओं की अनुमति देने के लिए कहें। डिप्टी सीएम ने कहा, बेंगलुरु में पानी की ऐसी कोई कमी नहीं है, यह भाजपा है जिसने पानी की कमी पैदा की है, वे क्या कर रहे हैं, हम तमिलनाडु को कानूनी रूप से जो मांगा गया है वह प्रदान कर रहे हैं। बेंगलूरु को पानी उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता है। डीके शिवकुमार, जो बेंगलुरु के नोडल मंत्री भी हैं, का कहना है कि सरकार संकट से निपटने के लिए कई मोर्चों पर काम कर रही है। बेंगलुरु जल आपूर्ति और सीवरेज बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. वी राम प्रसाद मनोहर ने शनिवार को कहा, हमें बेंगलुरु के लोगों और वैश्विक नागरिकों को बेंगलुरु के बारे में यह स्पष्ट करना चाहिए। 1 करोड़ 40 लाख की आबादी वाले शहर में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 150 लीटर पानी की खपत होती है। बेंगलुरु के लिए आवश्यक कुल मात्रा 200000 एमएलडी (प्रति दिन मिलियन लीटर) है।

पुलिस जांच में सहयोग नहीं कर रहे एल्विश यादव, 15 को फिर होगी पूछताछ

नईदिल्ली, एजेंसी। गुरुग्राम पुलिस ने बिग बॉस ओटीटी विजेता और यूट्यूबर एल्विश यादव को 15 मार्च को दोबारा पूछताछ के लिए बुलाया है। एल्विश पर गुरुग्राम के एक मॉल में यूट्यूबर सागर ठाकुर उर्फ मैक्सटर्न से मारपीट करने का आरोप है। इस मामले में आरोपी एल्विश मंगलवार को अपने वकील के साथ सेक्टर-53 थाने पहुंचे। पुलिस ने एल्विश से पूछताछ की, लेकिन उन्होंने जांच में सहयोग नहीं किया। इसलिए पुलिस अब एल्विश से 15 मार्च को दोबारा पूछताछ करेगी। एल्विश यादव मंगलवार दोपहर 2 बजे के लगभग अपने दो वकीलों के साथ गुरुग्राम सेक्टर-53 के थाने में पहुंचे। वहां पर उन्होंने पुलिस को बताया कि सागर ठाकुर उर्फ मैक्सटर्न से मारपीट मामले में अब उनका समझौता हो गया है, लेकिन पुलिस ने कहा कि पीड़ित की तरफ से उनको ऐसी कोई जानकारी नहीं दी गई है। उसके बाद पुलिस ने एल्विश से उस दिन के पूरे घटनाक्रम के बारे में पूछा, लेकिन पुलिस को एल्विश से संतोषजनक जवाब नहीं मिला। पुलिस ने जब मारपीट में शामिल उनके साथियों के बारे में पूछा तो एल्विश ने कोई जवाब नहीं दिया।

वित्तीय समस्याओं से जूझ रहा केरल

नईदिल्ली, एजेंसी। केरल इस समय अत्यधिक वित्तीय समस्याओं का सामना कर रहा है। इसकी प्रमुख वजह ये है कि केंद्र सरकार ने उसकी उधार लेने की क्षमता पर एक सीमा लगा रखी है। अब ये मामला सुप्रीम कोर्ट में चल रहा है। उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को केंद्र सरकार से कहा कि वह वित्तीय समस्याओं से निपटने के लिए केरल सरकार को 31 मार्च तक एकमुश्त पैकेज देने पर विचार करे। केरल सरकार के वकील कपिल सिब्बल ने न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की पीठ के समक्ष तत्काल सुनवाई के लिए केंद्र सरकार के खिलाफ अपने लंबित मुकदमे का उल्लेख करते हुए कहा कि केंद्र सरकार राज्य को जरूरी राशि नहीं जारी कर रही है। पीठ ने राज्य सरकार की याचिका बुधवार को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने पर सहमति जताते हुए कहा कि केंद्र थोड़ा उदार रुख अपनाते हुए केरल को विशेष मामले के रूप में एकमुश्त पैकेज दे सकता है। पीठ ने कहा कि आने वाले बजट में अधिक कठोर शर्तें रखी जा सकती हैं।

एकनाथ शिंदे को भाजपा ने दिया अल्टिमेटम जिससे मराठा आंदोलन भी शांत हो गया

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र सरकार ने 20 फरवरी को विधानसभा का स्पेशल सेशन बुलाकर मराठा आरक्षण को मंजूरी दे दी थी। इसके बाद भी मराठा आंदोलन को आगे बढ़ा रहे मनोज जारांगे पाटिल ने चेतावनी दी थी कि यह गलत तरीके से आरक्षण दिया है और 17 दिनों की भूख हड़ताल करेंगे। इससे पहले 25 जनवरी को जब वह आंदोलन का नेतृत्व करते हुए मुंबई पहुंचे थे तो उनके साथ हजारों युवाओं की भीड़ थी। ऐसी स्थिति बन गई थी कि मनोज जारांगे पाटिल के आगे सरकार दबाव में थी और उनकी बातों को मानने के लिए मजबूर थी। लेकिन फरवरी के अंत तक कुछ ऐसे घटनाक्रम हुए कि मनोज जारांगे पाटिल अब शांत हो गए हैं।

इसके अलावा मराठा आंदोलन की टेंशन से भी भाजपा मुक्त लग रही है। पर अहम सवाल यह है कि आखिर ऐसा कैसे हुआ? दरअसल इसकी शुरुआत मनोज जारांगे पाटिल के एक उकसाने वाले बयान से हुई थी। उन्होंने

डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस पर आरोप लगाया था कि वह उनकी हत्या भी करा सकते हैं। इसके अलावा उनके खिलाफ आपत्तिजनक बयान देते हुए उनके घर के घेराव की भी धमकी दी। इस बयान पर देवेंद्र फडणवीस सख्त हो गए और गृह मंत्रालय संभालने वाले डिप्टी सीएम ने बीड़ में हुई हिंसा की एसआईटी जांच का आदेश दे दिया। यह हिंसा पहले वाले मराठा आंदोलन के दौरान हुई थी। एसआईटी के हेड के तौर पर नासिक के पुलिस कमिश्नर संदीप कार्णिक को जिम्मा दिया गया। उन्हें जांच के लिए तीन महीने का वक्त मिला। इसी दिन पुणे पुलिस ने जारांगे पाटिल और कुछ अन्य लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया। इन पर आरोप था कि बिना परमिशन के इन लोगों ने 23 जनवरी को रैली निकाली थी। इस एसआईटी जांच पर मराठा समुदाय की कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। इससे भी मनोज पाटिल का हौसला कुछ कमजोर हुआ। अब बीते कुछ दिनों से वह ऐक्शन में नहीं दिख रहे हैं। एक समय में 24 घंटे मराठी चैनलों पर दिखने वाले मनोज जारांगे पाटिल ने पहले 27 फरवरी को फडणवीस का घर घेरने का फैसला टाल दिया। इसी दिन 17 दिनों की भूख हड़ताल भी वापस ले ली।

कैसे भाजपा ने कर दिया मनोज जारांगे पाटिल को शांत?

सरकार के सूत्र बताते हैं कि देवेंद्र फडणवीस और कुछ अन्य भाजपा नेताओं ने एकनाथ शिंदे से इस मसले पर बात की। उन्होंने कहा कि आप मनोज पाटिल को बढ़ावा दे रहे हैं और ऐसा ही रहा तो हम संबंध भी खत्म कर सकते हैं। एक भाजपा ने कहा, हममें से ज्यादा लोग मानते थे कि शिंदे के साथ मनोज जारांगे पाटिल के आंदोलन को समर्थन कर रहे हैं। पुलिस को भी इस बारे में कुछ जानकारी मिली थी। इसके बाद हमने एकनाथ शिंदे से कहा कि आप ऐसा नहीं कर सकते कि आंदोलन की आड़ में अपनी छवि मजबूत करें और हमारी पार्टी के लिए मुश्किल खड़ी कर दें।

चीन के हेबेई में एक रेस्तरां में धमाका, एक की मौत; 22 से अधिक घायल

बीजिंग, एजेंसी। चीन के हेबेई प्रांत के सान्हे शहर में बुधवार को एक रेस्तरां में हुए जबरदस्त धमाके में कम से कम एक व्यक्ति की मौत हुई है, वहीं 22 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। बताया गया है कि धमाका इतना तेज था कि आसपास की कई कारों और इमारतों को भारी नुकसान पहुंचा है।

चीनी मीडिया की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, यह घटना स्थानीय समयानुसार सुबह 8 बजे बीजिंग से करीब 80 किमी दूर सान्हे शहर में हुई। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, विस्फोट एक गैस सिलेंडर के लीकेज के बाद हुआ। चीन के राहत-बचाव विभाग ने कहा कि लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए 36 वाहन और 154 बचावकर्मियों को तैनात किया गया है। इसके बाद आग को काबू में कर लिया गया। गौरतलब है कि बीजिंग में कुछ उच्चस्तरीय बैठकों के ठीक बाद ही इस धमाके की खबर आई है। सोशल मीडिया

पर जो वीडियो वायरल हुए हैं, उनमें धमाके के बाद रेस्तरां से धुआं उठता देखा जा सकता है। इसके अलावा कई गाड़ियों के टूटे शीशे और आसपास इमारतों का मलबा भी गिरा है।

यूक्रेन में अब अपनी सेना नहीं भेजेगा नाटो देश पोलैंड

कीव, एजेंसी। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध खतरनाक मोड़ लेता जा रहा है। तीसरे साल में प्रवेश कर चुका यह महायुद्ध लाखों कत्लेआम और अरबों के नुकसान के बाद भी खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। इस युद्ध में लाखों की संख्या में लोग पलायन कर चुके हैं। इस युद्ध में नाटो और अमेरिका के दम पर यूक्रेनी सेना पुतिन की खतरनाक आर्मी को लोहे के चने चबवा रही है। पुतिन लगातार यूक्रेन से युद्ध में अन्य देशों की दखलअंदाजी पर अपने तेवर दिखा चुके हैं। पुतिन ने हाल ही में नाटो देश के यूक्रेन में अपनी आर्मी भेजने पर कड़ा ऐतराज जताया था। पुतिन ने बाकायदा परमाणु बम से हमले की धमकी दी थी। पुतिन की धमकी का असर यह हुआ है कि इसने यूक्रेन में अपनी सेना भेजने की घोषणा वापस ले ली है।

यहां नाटो देश पोलैंड की बात हो रही है। नाटो मेंबर पोलैंड ने यूक्रेन में सेना भेजने के फैसले पर आश्चर्यजनक रूप से यू-टर्न ले लिया है। एक नए बयान में पोलैंड ने कहा है कि यूक्रेन में सेना भेजने के लिए हमारी कोई योजना नहीं है। मामले की जानकारी रखने वाले लोगों का मानना है कि पोलैंड ने ऐसा पुतिन की धमकी के बाद किया है।

पोलैंड ने कहा है कि यूक्रेनी सेवा सदस्यों को प्रशिक्षित करने के लिए भी सेना नहीं भेजी जाएगी। यह तब हुआ है जब रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पश्चिम द्वारा यूक्रेन में सेना भेजने पर परमाणु युद्ध की चेतावनी दी है।

पश्चिम के दखल से गुस्साए पुतिन

पुतिन ने हाल ही में रूस के वार्षिक राष्ट्रीय संबोधन के दौरान पश्चिम देशों के लिए अपनी धमकियां जारी कीं थी। पुतिन ने दो टूक शब्दों में कहा था कि अगर पश्चिम ने यूक्रेन को मदद करना जारी रखा तो उन देशों को यह नहीं भूलना चाहिए कि हमने जो परमाणु हथियार और घातक बम रखे हैं, उनके क्षेत्रों में भेजने से नहीं कतराएंगे।

जरदारी नहीं लेंगे सैलरी, पाकिस्तान के राष्ट्रपति का बड़ा फैसला; देश के आर्थिक संकट का दिया हवाला

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी अपने कार्यकाल के दौरान कोई वेतन नहीं लेंगे। देश के आर्थिक हालात को देखते हुए उन्होंने मंगलवार को इस बात की घोषणा की। रविवार को पाकिस्तान के 14वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने वाले 68 वर्षीय जरदारी की पार्टी पीपीपी ने 'एक्स' पर इस बारे में जानकारी दी। पार्टी की तरफ से लिखा गया है कि राष्ट्रपति ने विवेकपूर्ण वित्तीय प्रबंधन को प्रोत्साहित करने और

राष्ट्रीय राजस्व पर बोझ नहीं डालने का फैसला किया है।

पूर्व राष्ट्रपति का इतना था वेतन: राष्ट्रपति सचिवालय प्रेस विंग ने मंगलवार को कहाकि राष्ट्रपति ने राष्ट्रीय राजस्व पर बोझ नहीं डालने की जरूरत को समझकर वेतन नहीं लेने का फैसला किया है। पूर्व राष्ट्रपति आरिफ अल्वी को प्रति माह 8,46,550 रुपये वेतन मिलता था, जो 2018 में संसद ने तय किया था। जरदारी पाकिस्तान के सबसे अमीर नेताओं में से एक हैं। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के सह-अध्यक्ष जरदारी ने रविवार को इस्लामाबाद के ऐवान-ए-सदर में आयोजित समारोह में दूसरी बार देश के राष्ट्रपति के तौर पर शपथ ली थी।

गृहमंत्री ने भी लिया फैसला: इसके अलावा जरदारी के पदचिन्हों पर चलते हुए, गृह मंत्री मोहसिन नकवी ने भी देश के सामने आर्थिक चुनौतियों का हवाला देते हुए वेतन नहीं लेने का फैसला किया है। नकवी ने 'एक्स' पर लिखा कि वह चुनौतीपूर्ण समय में हर संभव तरीके से देश की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। गौरतलब है कि पिछले कुछ दिनों से पाकिस्तान की आर्थिक हालत ठीक नहीं है। यहां पर लोगों की दैनिक जरूरत की चीजों के लिए परेशानी उठानी पड़ी है।

इमरान खान को जेल में बैठक करने की भी इजाजत नहीं, दो हफ्ते की पाबंदी

रावलपिंडी, एजेंसी। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के संस्थापक इमरान खान के जेल में बैठकें करने पर पाबंदी लगा दी गई है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, खान को रावलपिंडी की अदियाला जेल के अंदर बैठकें करने से दो सप्ताह के लिए रोक दिया गया। जियो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान पंजाब के गृह विभाग की ओर से जारी एक अधिसूचना में कहा गया है कि सुरक्षा अलर्ट की वजह से अदियाला जेल में सभी तरह की यात्राओं, बैठकों और साक्षात्कारों को प्रतिबंधित कर दिया गया है।

अधिसूचना में अधिकारियों को जेल परिसर के बाहर कंटीले तार लगाने का आदेश दिया गया। यह भी कहा गया है कि पुलिस की विशेष शाखा, इंटेलिजेंस ब्यूरो के अधिकारियों और जेल कर्मचारियों का एक नया सुरक्षा ऑडिट एक ही दिन के भीतर किया जाना चाहिए।

द न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, जेल में इमरान खान की मुलाकातों पर अचानक पाबंदी पर पीटीआई अध्यक्ष गौहर अली खान ने गंभीर चिंता जताई। उन्होंने आशंका जताई की पूर्व पीएम इमरान खान की जान को खतरा है। गौहर अली खान ने जेल के बाहर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने दावा किया कि जेल में बंद पीटीआई संस्थापक से मिलने से रोक दिया गया। अधिकारियों ने इमरान खान की सभाओं पर दो हफ्ते के प्रतिबंध के बारे में किसी को सूचित नहीं किया।

उन्होंने कहा कि अधिकारियों ने इस कदम का कारण आतंकवाद बताया है। द न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, गौहर ने जेल में बंद पीटीआई संस्थापक से तत्काल मुलाकात की भी मांग की, क्योंकि उन्होंने इमरान खान की हेल्थ की जानकारी मांगी थी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129